
प्रकाशकः—छोगप्रल काचर, प्रेसिडन्ट श्री जैन नव-
युवक मित्रमंडल, मु० लोहावट (मारवाड.)

सुदक—लक्ष्मण भाऊराव कोकाटे, 'हजुमान' प्रेस,
३००, सदाशिव पेठ, पुणे.

॥ प्रस्तावना ॥



‘प्यारे पाठकों ।

प्रतिक्रमणमूलसूत्रकी लम्बी चौड़ी प्रस्तावना लिखनेकी आवश्यकता नहीं है कारण प्रतिक्रमणसूत्र सदैव इयाम शुभह निख करनेयोग्य किया है यानि धर्मजेज्ञामु धर्मपर अद्वा रखनेवाले सम्प्रकृत्व या व्रतधारी महानु-मावोंको प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये । शास्त्रकारोंने फरमाया है कि भगवान् आद्यश्वर और वीरप्रभुके शास्त्रमें साथु साध्वी श्रावक और श्राविकाओंको व्रतप्रश्नाखण्डमें दोप लगनेका संभव है जहाँ दोपका संभव है वहाँ प्रतिक्रमणकी परमावश्यकता है दोपलगनेपर प्रतिक्रमण न किया जाय तो आराधेक हो नहीं सकता है जो जीव आराधिक नहीं होता है उसे मोक्षकी प्राप्त कभी नहीं होती है अतएव मोक्षार्थी भव्यजीवोंको प्रतिक्रमण करनेकी परमावश्यकता है ।

। प्रतिक्रमण के वारेमें एक रोगीका दृष्टान्त ।

एक न्यायचन्द्रसेठ शारिर आरोग्यता के कारण सदैव पथ्यहोका सेवन छरता था किसी समय मोहप्रेरित लोलुपतासे अपथ्य सेवन करनेसे शरि-रमें रोगात्पत्ति हो गई तब सेठजीने सोचा कि किसी विद्वान् परमार्थी निलोंमी डॉक्टरसे इलाज करना ठीक है साथमें वहभी सोचा कि डॉक्टरके साथ कंपौं-डरकिमी तलास करने कि जहरी है क्यों कि वहभी अच्छा परमार्थी निलोंमी द्वाइ देनेमें कुशल होना चाहिये । तलास करनेपर सेठजी को खातरी हो गइ कि अमुक डॉक्टर या कंपौंडर हमारे रोगको चिकत्सा अवश्य कर सकेगा ।

उपनय-न्यायचन्द्रसेठके स्थान भव्यात्मा है पथ्यसेवनके स्थान ज्ञानादि आचारका पालन करना है मोहके प्रेरणासे या लोलुपताके कारण पाके व्य-पथ्य सेवनके स्थान अतिचार लगा हो वेमारीके स्थानपर कर्मवन्ध है । डॉक्टरके स्थान तोर्थ नर भगवान् है कंपौंडरके स्थान आचार्यादि गुरुमहागज हैं । वह सदैव परमार्थी निलोंमी कमं रांगाके चिकत्साकरनेमें कुशल हैं ऐसी खातरी हो गइ तब ।

(१) वैमार सेठजीने सोचा कि डॉक्टरसाहिवके पास जाना तो है किन्तु वैमारीका कारण पुछेगा तो क्या कहेंगे वास्ते पेस्तर शहरमें वैमारीके कारण याद कर लेना ठीक है तब एकाग्रचित्त हो ध्यानकर क्रमशः सब कुपथ्योंको याद कर लिया ।

उपनय—समाधिकाध्ययनमें ध्यानकर अतिचारोंकि आठ गाथाओद्वारा चांचाचारोंमें जो जो अतिचार लगा था उसको ध्यानमें याद कर लिया ।

(२) वैमारसेठजी डॉक्टरकेपास जाके डॉक्टरसाहिवकी स्तुति-शुणकीर्तन आदरसत्कार बहुमानकर बोले कि आपने बहुतसे वैमारीयोंके दोग मिटाया है इत्यादि ।

उपनय—दूसरें अध्ययनमें लोगस्सद्वारा चौधीस तार्थकरोंके गुण स्तुतवादि बहुमान किया ।

(३) वैमारसेठने सोचा कि डॉक्टरसाहिव तो दवाइयोंका नकशा दे देमे किन्तु दवाइ देना कंपौंडरके आधिन है वास्ते कंपौंडरसाहेवकाभी आदर सत्कार विनय करना जरूरी है कि वह अच्छी दवाइ देकर हमारे वैमारी को मिटावेगा इस गरजसे कंपौंडरकाभी विनय किया ।

उपनय—तीसरे अध्ययनमें आचार्य—गुरुमहाराजको द्वादशावर्तन देकर दो बार बन्दन किया । तब कंपौंडरसाहिवने पुछा कि सेठजी आपके वैमारीका हाल बतलाइये ।

(४) वैमारसेठजीने इष्टस्मरण सावधयोगनिग्रहकर मंगलपूर्वक अपनी वैमारीके हाल क्रमशः बतलाया कि इसंइसकारणोंसे अमुक अमुक अंपथ्य सेवन करनेसे हमारे शरिरमें इतने अंश वैमारी पैदा हुइ है अपने हाल सुना के कंपौंडरको और बन्दनकर बोला कि मैं किसी प्रकारसे आपका अविनय कीया हो तो क्षमा करें क्यों कि मैं बाल अज्ञानी हुं परन्तु आप सब हाल जानते हैं वास्ते क्षमा करो अन्तमें और स्तुति करते हुवे सेठजीने कहा कि आप संबं लोग परोपकारी हि होते हैं वास्ते मे पुनः मुनः नम्रतापूर्वक निवेदन करता हुं कि आप ऐसी दवाइ दें कि शीघ्रतासे मे आरोग्य बनु ।

उपनय—चतुर्थ अध्ययनमें दिनभरमें जो लगे हुवे अतिचार प्रगटरूपमें मंगलपूर्वक 'वंदितु' से क्रमशः सुनाके दो बार बन्दन दे अच्छुद्विओमि

खमाके दो बार बन्दन दे “ क्षायरिय उवज्ज्ञाय ” तक कहा बाद में अतिचार विशुद्धि की कोसिस करी ।

(५) वैमारसेठके नम्रतापर कंपौंडरसाहिवने दीर्घदीष्टसे विचार करके बच्छी उमदा दवाइ किए बान्ध दी, सेठजी उस दवाइको लेके कंपौंडरसाहिवकी औरभी तारीफ विनयभक्ति कर रवाना होने लगे ।

उपनय—पांचवे अध्ययनमें ज्ञान दर्शन चारित्रविशुद्धिनिमित्त चार स्तोगस्सर्वी दवाइका प्रहण घर ध्यान किया ।

(६) वैमारसेठजी रवाना होने लगे इतनेमें कंपौंडरसाहिव बोले कि सेठजी आपने दवाइ तो ली है किन्तु इस दवाइके सेवनमें मुछ दिन परहज रखना होगा सेठजीने कहा कि बहुत ठीक है अमुक टाइमके लिये भें आवश्यक परहज रखूँगा—

उपनय—छटे अध्ययनमें परहजके लिये प्रत्याख्यान है सो नमुकारसी पौरसी इत्यादि प्रत्याख्यान किया ।

सेठजीकी वैमारी मिटानेमें मोख्य कारण डॉक्टरसाहिवका था वास्ते सेठजी डॉक्टरसाहिवकी धर्योंलहासके साथ स्तुति करी ।

उपनय—“नमोस्तु वर्द्धमानाय” तथा “नमुत्थुणं वरकनक” क आदिसे अगवान् धीरणभु या तीर्थकरोकी स्तुति करी ।

इस दृष्टान्तसे आप वसुवी समज गये होगे कि कर्मरूप रोगको निर्मूल करनेको डॉक्टर कंपौंडरकी स्तुतिकर दवा लेनेसे लगे हुवे अतिचारको शीघ्र विशुद्धि होती है वास्ते मोक्षार्थी भाइयोंको अपना नित्य कर्तव्य सामाधिक प्रतिक्रिया प्रभुपूजा और पठनपाठन करनेमें उद्यमवन्त हो—नरभवको सफल करना चाहिये ।

कितनेक महानुभाव प्रतिक्रियाके लाभसे अज्ञात है वह अपना अमूल्य जीवन आलस्य प्रमादमें खो बेठते है वह दुगुना नुकशान उठाते है एकतो दिनभरमें जां अतिचार सेवन किया था वह दूसरा पापोंकि विशुद्धिके समय आलोचना नहीं करता हुवा आलस्य प्रमाद गप्पोंसाथोंमें पापकर्मों पार्जन करते है उन महानुभावोंके लिये प्रतिक्रियाके लाभके बारेमें यहाँ कुछ उल्लेख करना अनुपयोगी न होगा ।

प्रतिक्रिया—आवश्यकत्तूत्रका चतुर्याध्ययन है प्राचीनप्रन्थोंमें आवश्यक

शब्दही पाया जाता है। अधुनिक पुस्तकोंमें आवश्यकके स्थान प्रतिक्रमण शब्द प्रचलित है। दर अस्सल प्रतिक्रमण आवश्यक सूत्रका चतुर्थाध्ययन है।

आवश्यकसूत्रके विभागरूप छे अध्ययन है यथा सामायिकाध्ययन, चतुर्विशिष्टवाध्ययन, बन्दनाध्ययन, प्रतिक्रमणाध्ययन, कायोत्सर्गाध्ययन-प्रत्याख्यानाध्ययन। (नन्दीसूत्र।) अधुना प्रतिक्रमणकी आदिमें चैत्यबं-बन्दन अन्तमें स्तवन सज्जाय और कायोत्सर्गादि कियाएं समया-शुकूल आचार्योंने प्रतिक्रमणके साथ जोड़ दी है।

छे आवश्यकका ऋग और फल ।

(१) प्रथम सामायिकाध्ययन-प्रतिक्रमणकी आदिमें इरियावहि-करी जाती है, वह क्षेत्रशुद्धिके लिये है बाद देववन्दन किया जाता है। वह मन्दिरकी किया है मन्दिरमें जाके देववन्दन करनेकी विधि शिथिल छोने लगी जब आचार्योंने प्रतिक्रमणके साथ जोड़ दी है दर अस्सल। “ देवसि पठिक्रमण ठाँ ” यहांसे लेके अतिचारकी आठ गाथाओं-का कायोत्सर्ग पारके “ नमो अरिहन्ताणं ” कहना वहांतक सामायिकाध्ययन-है। सामायिक तीन प्रकारका है श्रुतसामायिक, सम्यक्त्वसामायिक, चारित्र-सामायिक इन तीनों सामायिकसे क्रमशः ज्ञान दर्शन चारित्रकी प्राप्ति-होती है। सामायिकाध्ययनमें ज्ञान दर्शन चारित्र उपलक्षणसे तप और वीर्य इन पाचों आचारोंमें अतिचार लगा हो उनका चितवन कीया जाता है यह चितवन रागद्वेष्यरूपी विकल्पोंकों दूर कर समभाव रखनेसे हो सकता है। इसी वास्ते ही इस अध्ययन का नाम सामायिक अध्ययन रखवाए गया है, इस अध्ययन का फल क्या है?

सामाइषणं भन्ते जीवे किं जणयद् ? सामाइषणं सावज्ज-
जोगाविद्व जणयइ ॥ । (श्री उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन २९.)

भावार्थ—सामायिक करनेसे जीव सावदयोगोंसे निवृत्ति पाता है यानि पाप आनेके सावद योग है उन्होंसे निवृत्ति होनेसे फिर नये पाप नहीं आते हैं।

१ चारित्रसामायिकके दो भेद है (१) देशचारित्र सामा० (२) सर्व-चारित्र सामा०

(२) चतुर्विशतिस्तवाध्ययन—रागद्वेषरूपी विकल्पोंका ल्याग कर समझाव रख्खे वह ही जीव चौबीसतीर्थकरोंकी गुणस्तुति कर सकते हैं यह कायोत्सर्ग पारनेके बाद लोगरस कहा जाता है इसको चतुर्विशतिस्तवाध्ययन कहते हैं इसका फल ।

“ चउच्चीसत्थपणं भन्ते जीवे । किं जणयद् ?

चउच्चीसत्थपणं जीवे दंसणविसोहिं जणयद् ॥

(श्री उत्त० अध्य० २९.)

भावार्थ—चौबीस तीर्थिकरोंकी गुणस्तुति करनेसे जीवोंको दर्शनविशुद्धि होती है । यानि सम्यक्त्व निर्मल होता है ।

(३) वन्दनाध्ययन—रागद्वेषरहित समझावोंसे देवकी गुणस्तुति करनेवाला महानुभाव आचार्यमहाराजको द्वादशावर्तनवन्दन करनेयोग्य होता है । लोगस्त करनेके बाद दो बार द्वादशावर्तन वन्दना देना । यह श्रिसिराध्ययन है इसका फल कहते हैं—

“ वन्दणपणं भन्ते जीवे किं जणयद् ?

वन्दणपणं जीवे नियागोयं कस्मं खवेद्

उच्चागोयं कस्मं निवन्धद् ॥

सोहग्गं च णं अपडिहयं आणाफलं

निवचेद् दाहिण भावं चणं जणयद् ।

(श्री उत्त० अध्य० २९.)

भावार्थ—गुरुमहाराजको नम्रभावे वन्दन करनेसे नर्चि गौत्रकर्मका क्षय और उच्च गौत्रकर्म का बन्ध करता है । सौभाग्यलक्ष्मिको उपार्जन करे तथा जिसपर आदेश-आज्ञा करे वह सहर्ष स्वीकार कर हीष्ट्रापूर्वक उस कार्यको करे और दूसरोंको आनन्दकारी वचन बोलनोकि क्लविको प्राप्त करे ।

(४) प्रतिक्रमणाध्ययन । जो रागद्वेषरहित समझावोंसे देवगुरुकी स्तुति स्तवना वन्दन नमस्कार करनेवालही अपने पापोंका प्रतिक्रमण कर सकेगा । यह वन्दना के अन्तसे “ आयरिय उवज्ञाय ” तक प्रतिक्रमण आमका चतुर्थाध्ययन है इसका फल ।—

“ पडिक्रमणेणं भन्ते जीवे किं जणयद् ?

पांडिकमणेण जीवे वयच्छिद्वाणिपिहेइ
पिहिय छिदे पुण जीवे निरुद्धासवे
असवल चारित्ते अहुसु पवयण मायासु
उवउत्ते अपुहते सुप्पणिहिए विहरइ ”

(श्री उत्त० अध्य० २९.)

भावार्थ—प्रतिकमण करनेवाले जीवोके ब्रतमें अतिचाररूपी जो छिद्र के जिसके जरिये कर्मरूपी पानी आरहा था उस छिद्रोंको जानके प्रतिकमण-रूपी पाटीयासे छिद्रोंको ढाँक देनेसे कर्मरूपी पानी आना बन्ध हो गया तः-बसे असबला यानि निर्मल चारित्र पालता हुवा अष्टप्रवचनमाताके पालनेमें उपयोगवन्त संयमसमाधिवन्त हो निरातिचार चारित्र पालता हुवा विचरे ।

(५) कायोत्सर्गाध्ययन—रागद्वेषरहित देवशुरकि सुर्ति वन्दनादि समभावसे करनेवाला शुद्धभावोंसे प्रतिकमण करेगा वह ही जीव ज्ञान दर्शन चारित्रकी विशुद्धिके लिये कायोत्सर्ग करनेयोग्य होगा ।” आयरिय उक्त-ज्ञाए” के अन्तसे दो बार वन्दना देनेतक पांचवा अध्ययन है इसका फल—

“ काउत्सर्गेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? काउत्सर्गेण जीवे तीय पङ्कुप्पन्न पायच्छित्तं विसोहेइ विसुद्ध पायच्छित्त-स्त्रेय जीवे निवृत्य हियए जहोरिय भारोव्व भारवहे पसत्य ज्ञाणोवगण सुंहं सुहेण विहरइ ” (श्रीउत्त० अध्य० २९.)

भावार्थ—कायोत्सर्ग करता हुवा जीव भूत और वर्तमानकालमें लगे हुवे अतिचारोंके प्रायश्चित्तको विशुद्ध करता है । उस प्रायश्चित्तको विशुद्ध करता हुवा जीव प्रशस्त हृदय शुभभावनाओं जैसे भारको वहनेवाला जीव भारकों कम करनेसे सुखी होता है इस माफीक प्रायश्चित्तरूपी वजनको कम करनेसे जीव प्रशस्तध्यान यानि धर्मध्यान शुद्धध्यानमें अपनी आत्माको जोड़ता हुवा सुखसे विहार करे ।

(६) प्रयात्त्वानाध्ययन—रागद्वेषसागी समभावी देवशुरभज्जि सुर्ति करनेवाले निष्कपटभावसे प्रतिकमण कर प्रायश्चित्तरूपी कायोत्सर्ग-करनेवाला होगा वह ही भविष्यके लिये प्रत्याख्यान करनेयोग्य बन सकेगा । नमुकारसि जांदि तपश्चर्या करने रूप यह छह अध्ययन है इसका फल-

“ पञ्चखाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? पञ्चग्राणेण
जीवे आसब दाराइ निरुम्भइ पञ्चखाणेण इच्छानिरोहं जण-
यइ इच्छानिरोहं गण्यणं जीवे सब्ब दब्बेसु विणीय तण्डे
सीयलभूए विहरइ ” (श्रीउत्त० अध्य० २९)

भावार्थ-प्रलाखयान करनेसे जीव कर्म आनेके दरवाजेरूप जो आश्रव है उन्होंका निरोध कर देते हैं । और भविष्यकी इच्छाकामी निरोध करते हैं। इच्छाका निरोध करनेसे सर्व द्रव्योंपर जो ममत्वभाव या उस तृष्णाल्ला स्थाग करनेसे शितलीभूत हो जाते हैं अर्थात् प्रलाखयान करनेवाले तृष्णाल्ला मुक्त हो जाते हैं।

यह आवश्यक भगवान् वीरप्रभुके शासनमें निर्विघ्नपणे समात हुवा है इसलिये कमसे कम तीन तथा अधिकसे अधिक १०८ श्लोकोंसे चैत्यक-
न्दन स्तुति की जाति है, जिसका फल—

“ शयथुइ मङ्गलेण भन्ते जीवे किं जणयइ ? शयथुइ मङ्ग-
लेण जीवे नाणदंसणचारित्त बोहिलाभं जणयइ. नाणदंसण
चारित्त बोहिलाभं संपन्नेयणं जीवे अन्तकिरियं कपप विम-
णोववत्तिगं आराहणं आराहेइ ”

(श्रीउत्त० अध्य० २९.)

भावार्थ—तीर्थकरोंके गुण कर्तिन स्तुति करनेसे जीवों ज्ञानदर्शन चारित्र-रूप बोधबीजकी प्राप्ती कर लेते हैं। ज्ञानादिकी प्राप्ती होनेसे उसी भवमें मोक्ष जाते हैं या वैमानिक देवके आयुष्य योग्य आराधना करते हैं वह तीसरे भवमें मोक्ष जाते हैं

पांच प्रकारके प्रतिकमण—मिथ्यात्वकाप्रतिकमण, अवतकाप्रति-कमण, प्रमादकाप्रतिकमण, कषायकाप्रतिकमण, अशुभयोगोंका प्रति-कमण, इन पांचों प्रकारके प्रतिकमणके करनेसे जीव सदैव निर्मल रहता है—
(श्रीस्थानायोग सूत्र स्थाने ५ वे)

दशगुणोंके धारक हो वह महानुभाव प्रतिकमणरूप आलोचना कर सकते हैं जातिवन्त, कुलवन्त, विनयवन्त, उपशान्तकषायवन्त, जितेन्द्रिय,
ज्ञानवन्त दर्शनवन्त चारित्रवन्त निष्कर्षटी और प्रायश्चित्त लेके पथात्ताप-
न करनेवाला अर्थात् प्रतिकमण करनेवालोंमें यह दशगुण सहजही प्रगट हो

जाते हैं।

(श्रीस्थानायांग सूत्र स्थाने १० वे.)

जैसे शृहस्य लोग अपने रहने के मकान सामान्यतः दिनके अन्तमें और रात्रीके अन्तमें ज्ञाहुसे कचरे को दूर कर साफ करते हैं। विशेषतः पक्षके अन्तमें चतुर्मास के अन्तमें और संवत्सरके अन्तमें धोना लिपनादि ऐश्वर्ग-प्रसे सुन्दर बनाते हैं तद्वर धर्मजिज्ञासु दिनके अन्तमें रात्रीके अन्तमें पक्षके अन्तमें चतुर्मासके अन्तमें और संवत्सरके अन्तमें अतिचार रूप कचरेको श्वर्मार्जनीरूप आलोचनेसे साफ कर भनोमंदीरिकों निर्मल सुन्दर बनाते हैं। जिससे भविष्यमें आराधिकपदसे अंतर्वासी आत्माभी मकानके माफीक शोभनीय होता है।

कितनेक महानुभाव प्रतिक्रमणके सूक्ष्म कण्ठस्थ करलेते हैं। वह क्रिया-समय तोतेकी माफीक पाठ पढ़ लेते हैं किन्तु उन मूलसूत्रोंके अर्थसे अश्वात होनेसे उतना लाभ नहीं उठा सकते हैं कि जितना अर्थभावार्थः और मतलबको जानकर लाभ उठा सके। शास्त्रकारोंने फरमाया है की—

शुद्धसिक्षिखतं—पद—पदार्थ अच्छी तरहसे पढा हो।

प्रितं—वाचनादि स्वाध्यायासे ठीक स्थिर किया हुवा हो।

जितं—सारणा वारणा धारणासे अस्त्वलित हो।

प्रमितं—पद अक्षर बराबर याद रखा हो।

परिजितं—क्रमोत्कम याद रखा हो।

नामसम—पढा हुवा ज्ञानको स्वनामवत् याद रखा हो।

शोससम—उदात्त अनुदात्त स्वरव्यञ्जन संयुक्त याद रखा हो।

अहिणअक्खरं—अक्षरादि हीनतारहित ”

अणाच्चअक्खरं—अक्षर मात्रादि अधिकपणेरहित ”

अवद्ध्यक्खरं—उलटपलट अक्षररहित ”

अक्खलियं—अस्त्वलितपनेसे बोलना ”

अमिलिय अक्खरं—अनमीलन—विरामादि संयुक्त बोलना ”

अवज्ञामेलियं—पुनराक्षी आदिरहित बोलना ”

पाडिपुञ्ज—अष्ट स्थानोच्चारण संयुक्त

कंठोढ़—विष्पुक—बालकोंकी माफीक अस्पष्टता न बोले

शुल्कायणोच्चारण—गुरुमुखसे वाचना ली हो उसी माफीक बोलना

सेणं तत्थ वायणाए—सूचार्थकी वाचना—बोलना याद रखा हो
 मुच्छणाए—शंका होनेपर शब्दार्थादि दुष्टना.
 परिअद्विष्टाए—पढे हुवे ज्ञानकी मुनःपुनः आवृत्ति करना.
 धम्मकहाए—उध स्वरसे धर्मकथाका कहना.
 नो अग्रुपेहाए—उपर बतलाइ हुइ झुख्ताके साथ मूल सूचका उच्चारण
 करते हुवेभी भावार्थ को नहीं जाननेवालेकी सब क्रियाओंको “ अणो-
 बग दब्बो ” उपयोग रहितको द्रव्य क्रिया बतलाइ है.

(श्रीअनुयोगद्वार सूत्र.)

इस परम व्याख्यापर पाठकोंको अवश्य ध्यान देना चाहिये कि इतनी
 झुख्ता पूर्वक शद्वोक्तारण करनेपरभी उपयोग रहितकी सब क्रियाओंको
 द्रव्य क्रिया बतलाइ है. वास्ते स्वत्पद्धि क्रिया क्यों न हो परंतु होना चाहिये.
 उपयोग संयुक्त वद्धम्महि क्रिया फलदायक होती है.

प्रतिक्रमण करनेवाले महानुभावोंको मूलपाठके साथही उसके भावार्थकोभी
 कण्ठस्थ करना जरूरी है. कहा है कि “ उवाग भावो ” उपयोग है
 वह ही भाव क्रिया कर्म निर्जराका हेतु है।

प्रतिक्रमण कोई सामान्य क्रिया नहीं है विन्तु धर्म जिज्ञासुओंके लिये
 परमावश्यक क्रिया है जैसे हिन्दुभाइयोंको सन्ध्या, मुशलमानको निमाज
 अवश्य क्रिया है इसी मार्फीक जैनीभाइयोंको प्रतिक्रमण यह एक अवश्य-
 क्रिया है।

इतनी अवश्य और उपयोगी क्रिया होनेपरभी हमारे कीतनेक जैन
 भाइयों जो कि प्रमादकी पाशमें फसे हुवे आलस्यके सरदरोंको प्रतिक्रमण-
 की तर्फ कितना अनादर भाव है कि सेंकडे दश लोगोंको भी प्रतिक्रमण
 मूलपाठस्थम्महि स्यात् कण्ठस्थ होगा. तब भावार्थ के साथकि तो आशाही
 क्यों करना चाहिये ?

इस पवित्र क्रियाको अस्तित्व भावमें रखनेके लिये कोई ऐसीभी
 कीताये छपाइ गई थी कि राइ देवसि प्रतिक्रमण कंठस्थ न होनेवालेभी
 विधिसहित प्रतिक्रमण किताबोंसेभी कर सके.

परन्तु पांच प्रतिक्रमणकी ऐसी किताब आजतक देखनेमें नहीं आह-
 कि प्रतिक्रमणसे अज्ञात भाइ उस किताबसे विधिसहित पांच प्रतिक्रमण-

कर सके। हम केइ दिनोंसे इस विचारमें थे कि एक ऐसी किताबें तैयार करवाइ जावे कि जिस किताबके जरिये हरेक भाषा पांचों प्रतिक्रमण विधिसहित कर सके आजसे दो साल पेश्तर हमने इस कार्यको प्रारंभ किया था परन्तु अच्छे कार्यों में बहुतसे विष्व होनेके नियमसे उस कार्यमें वाधाएं आती गइ। तथ्यपि हम इस स्थान मुनि श्रीजिनविजयजी और मुनि श्रीतिलकविजयजी महाराजका उपकार मानते हैं कि आपश्रीने कुछ फॉर्म संशोधन करने में सहायता दि है। शेष रहे हुवे फॉर्म एक सद्गृहस्थ महानुभावने संशोधन कर इस कार्य को संपूर्ण कीया है।

इस जगह हम अधिक उपकार उस महाशशजीका मानते हैं कि इस पुस्तक छगनेमें द्रव्यका दान देनेपर भी अपने नामको गुस्त रखा है उस गुस्तहनेधरको हम सहस्र धन्यवाद देते हैं कि अपनि उदारताका गुस्त परिचय दीया है।

दो वर्षोंसे पडे हुवे कार्यको श्रीरत्नप्रभाकरज्ञानपुष्टमाला थॉफीसु फलोदीवालोंने अपने हाथमें लेकर इस किताबकी शुद्धि और प्रस्तावनादि कार्यमें सहायता दे कार्यको प्रवृत्तिरूपमें पहुंचा दिया है। वास्ते उस संस्थाकोभी हम धन्यवाद देते हैं।

इस किताबमें पांच प्रतिक्रमणके सिवाय नौस्मरणादि परमोपयोगी स्तोत्र भी मुद्रित करवाये गये हैं।

अन्तमें हम हमारे स्वधर्मी भाइयों से यह निवेदन करते हैं कि अगर आप को पांचों प्रतिक्रमण कण्ठस्थ नहीं भी आता हो तो इस किताबसे कर अपने दिनमें रात्रीमें पक्षमें चतुर्मासमें और संवत्सरमें किये हुवे पापों को आलोचनकर आत्मा को निर्मल बना लिजिये इससे हम हमारे परिभ्रम को सफल समझेंगे एक सूचना और भी कर देते हैं वह यह है कि प्रुफ शोधनेमें कुछ अशुद्धियें रह गइ हैं जिसका शुद्धिपत्र इस किताब के साथ छपा दिया है जब यह किताब आपके हस्तगत हो तब पेस्तर आप शुद्धिपत्रसे इसे शुद्ध कर ले तोके प्रतिक्रमण करते समय आपको अच्छा सुविधा रहेगा शान्ति शान्ति शान्ति ॥

: प्रेसिडेन्ट श्री जैन नवयुवकमित्रमण्डल } भवदीय,
 मु. लोहावट-मारवाड. } छोगमल कोचर.

शुद्धिपत्रम्

५८३८८८९

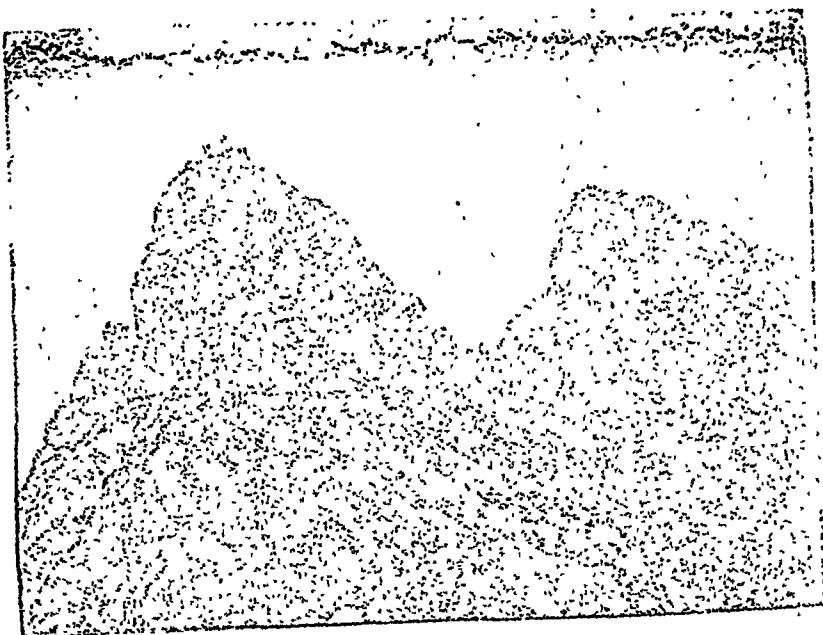
अनुच्छम्	शुद्धम्	पृष्ठम्	पहलकौ
मक्षतकय	मक्षतय	७	९
नमोत्थुणं	नमुत्थुणं	९	२३, २६ -
निससिएणं	नीससिएणं	१०, ११, १२ २०, २५, २६, २७, ३४, ५९	२२, २०, १४, ३०, १८, १८, १४, २४, २४,
आवद्यककी	आवद्यककी	१३	२०
सव्वमिन्द्योवराए	सव्वमिन्द्योवयाराए	१३, १९, २२, २२	२९, २५, २, १२ -
जीवायोनीमेसे	जीवायोनीमेसे	१४	२४
करनेको	करतेको	१५	८
दाहिणा	दाहिणा	१५	२३
सव्वस	सव्वस्स	१८	८
सभीद्	समिद्	„	१०
सप्परिभायं	सप्परिभायं	„	१३
बरसविहस्त	बारसविहस्त	२०	२५ -
अपूर्वचंद्र	अपूर्वचन्द्रम्	२४	२३
उद्गुणं	उद्गुणं	२५	१९
सधारवत्तिआए	सधारवत्तिआए	३१, ३४	२०, २१
कउस्सग	काउस्सग	३१	२१
इपम	इपम	३२, ३२, ४१	१९, २४, १९
दुक्षत्वाधो	दुक्षत्वाधो	३४	१६
सर्वसाधुभ्य	सर्वसाधुभ्यः	३४	३१
आयरिआणं	आयरिआणं	३६, ३७, ६०, ६४	२३, ९, ९, ३०
देवसिय	देवसिक	३७	८
उच्चरना	उच्चरना	३९, ७३	१२, २६ -

अनुद्धर	शुद्धम्	पृष्ठम्	पड़कौ
खमासमन	खमासमण	४०	५
खाइं	खाइं, साइं	४१,७५	६,२२
आठा	आठ	४१	३१
माणाए, माणाए	माणाए, मायाए	४१	४
अइकारो	अइआरो	४६,४९	६,१५
सब्बकालिआए	सब्बकालिआए सब्बमिच्छो		
जो मे अइकारो	वप्राराए, सब्बव्वम्पाइफ्रमगा —	४९	१५
	ए आसायगाए जो मे अइआरो		
खमासमाणाण	खमासमणाण	४९	१२
भेसञ्चे	भेसज्जे	५२	२२
आव	आवे	५७	४
गिन	गिनना	५८	२
पुक्खरवरदीवह्ने	पुक्खरवरदीवह्ने	५३	३
शान्तांशिवं	शान्तांशिवं	६६ (२)	६
पावति	पावंति	७०	२३
सुपांस	सुगासं	७२	२९
विमलमण्ठं	विमलमण्ठं	”	३१
हाके	हाके	८३	२८
खांडिअं	खांडिअं	८७	१४
यहाँ पर संबुद्धा खमासमणके			
साथ “अनुद्धिओमि” छपना			
रह गया है वह कहना चाहिये	{	९१	२१
अह	अह	९३	७
साध्वी	साध्वी	”	९
कूचा	कूचा	९४	२६
उपर	उपर	”	२७
भूखा	भूखा	९५	१७

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठम्	पद्धती
रखा	रखा	१५,१९,	२४,२३
चिल्ह	चील्ह	१५	२६
यतना की	यतना न की	१६	३
लेख	लेख	"	१७
सूक्ष्म	सूक्ष्म	"	१८
अलाहदा रखी	अलाहदी रखी	"	२८
डंगर	डांगर	११	२३
मिट्ठी	मिट्ठी	"	२६
विनोले	विनोले	"	२७
गुणव्याण	गुणव्याणं	१०६	१६
वंदित्त	वंदित्त	"	१७
कूडतुल	कूडतुल	१११	२५
॥२॥	॥२२॥	१०८	२३
सिक्खावए	सिक्खावए	१०८	१६
खमाससणो	खमाससमणो	१२३	२०
मंदर	मंदर	१२९	१५
सूर्योदयक	सूर्योदयके	१३८	"
आभवखंडा	आभवमखंडा	१४३	१८
दोप	दोप	१५२	२४
यद्गर्जदूर्जित	यद्गर्जदूर्जित	१६२	८
कृत्य	कृत्यम्	"	१०
भयदवक्र	भयदवकत्र	"	१८
प्रेतवकूलः	प्रेतवजः	"	१३
प्रोद्यत्प्रवन्ध	प्रोद्यत्प्रवन्ध	"	३०
गुहुग्रखग	गुहुग्रखग	१६४	२०
पमाणनेय	पमाणनेय	१६६	१५
भुक्तिश्वसेण	भुक्तिश्वसेण	१६७	१५

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठम्	पद्मकौ
दारिद्र्यापत्सपाश्रिते	दारिद्र्यापत्समाश्रिते	१६९	२५
देवासिप्रतिक्रमणविधि	पाक्षिकप्रतिक्रमणविधि	८२ से ११२ तक	१
लक्ष्मी	लक्ष्मीम्	१७०	७
र्ही	र्ही	१८१	५
र्ही	र्ही	१८२	१६
नमोऽवन्ते	नमोऽन्ते	„	„

धीसिद्धावलजो तीर्थ.



श्रीगिरिनार पर्वत पंचमी टॉक.



श्रीगिरिनार पर्वत नेमिनाथ टॉक.

अथ विधि सहित ॥ श्री पंचप्रतिक्रमण सूत्र ॥

सामायिक लेनेका विधि

(पहिले उन्हे आसन पर पुस्तक प्रमुख रखके श्रावक थाविका, कटासणा, मुहपत्ती, चरदला लेकर शुद्धवस्त्र, जगा दुंजके कटासणे पर बैठके मुह-पत्ती वामहाथमें दुःहके पास रखके जिम्णा हाथ थापनाजीके सम्मुख रखके)

नमो अरिहंताणं,
 नमो सिद्धाणं,
 नमो आयरियाणं,
 नमो उवज्ञायाणं,
 नमो लोए सव्वसाहृणं.
 एसो पंचनमुक्तारो,
 सव्व पावण्णासणो,
 मंगलाणं च सव्वेसि,
 पढमं हृचइ मंगलं ॥

(ऐसे एक नवकार गिनके फिर)

पंचिदिय संवरणो, तह नवविह वंभचेर गुत्तिधरो ।
 चउविह कसाय मुक्तो, इअ अट्टारस गुणोहिं संजुत्तो ।
 पंच. महव्वयजुत्तो, पंचविहायार पालणसमत्थो ।
 पंचसमिओ तिगुत्तो छत्तीसगुणो गुरुमज्ज ॥

(ऐसे पंचिदिय कहे, जो आगेसे उस स्थानपर आचार्य प्रमुखकी स्थापना की हुई हो तो वहां पंचिदिय नहीं कहना, फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिं, जावणिज्जाए निर्सीहिभाए
 भत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरिया वहियं पडिकमामि, इच्छामि पडिकमिडं, इरिया वहियाए, विराहणाप, गमणागमणे, पाणकमणे वीयकमणे हरियक्षमणे, ओसा उत्तिंग पणा दग, मट्टी मकडा संताणा लंकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एरिंदिया वेहंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया, संघाइया संघहिया परियाविया, किलामिया उद्दविया, ठाणा ओड्हाण संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि ढुकडं ॥

तस्स उत्तरी करणेण, पायच्छित्तकरणेण, विसोही करणेण, विसल्ली करणेण पावाण कम्माण निघायणहाए ठामि काउस्सगगं ॥

अन्नतथ उसासियण नीसा सिएण खासिएण छीएण जंभाइएण, उहुएण बायनिसगेण, भमलिप पित्तमुच्छाए, सुहुमेर्ह अंग संचालेहिं, सुहुमेर्ह खेलसंचालेहिं, सुहुमेर्ह दिहिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारोहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्जमे काउस्सगगो. जाच अरिहंताण भगवंताण, नमुक्कारेण न पारेमि तावकायं ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ॥

(फिर एक लोगस्स वा चार नवकारका काउस्सगग करना. पीछे प्रगट लोगस्स कहना सो नीचे नुतानिक)

लोगस्स उज्जोथगरे, धर्मतित्थयरे जिणे ।

अरिहंते कित्ताइसं, चउविसंपि केवली ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवममिमिणदणं च सुमई च ।

पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद्रप्पहं वंदे ॥

१ प्रतिकमण वगैरह विधिओमे जहा जहा खमासमण देनेमे आते हैं वहा खडे होकर देने चाहिए. आदेश भी खडे होकर माँगना चाहिए.

२ प्रतिकमण वगैरह विधिओमे तीन प्रकारकी मुद्रामे रहनेका होता है.

सुविहै च पुण्डदंतं, सीथल सिलंस वासुपुज्जं च।
 विमलमण्ठं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥
 कुंथुं अरं च माळ्हं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
 वंदामि रिङ्गोमि, पासं तह घङ्गमाणं च ॥
 पवं मए अभियुआ; विहुयरयमला पहीण जरमरणा ।
 चउवीसं पि जिणवरा, तिथ्ययरा मे पसीयंतु ॥
 कित्तिय वंदिथ महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
 आरुग वोहिलामं समाहित्यसुत्तमे दितु ॥
 वंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
 सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥

(किर खमासमण देना)

इच्छं इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्ञाए निसीहि-
 आए मथ्यएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक
 मुहपत्तो पडिलेहुं “इच्छं”

(ऐसे कहके मुहपत्तो पडिलेहनी. फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्ञाए निसीहिआए
 मथ्यएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक
 संदिसहुं? “इच्छं” । इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणि-
 ज्ञाए निसीहिआए मथ्यएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह
 भगवन् सामायिक ठाउं? “इच्छं” ।

(ऐसे कहके दोनों हाथ जोड़कर नीचे मुजबं नवकार गिनना.)

नमो अरिहंताणं,
 नमो सिद्धाणं,
 नमो आयरियाणं,
 नमो उवज्ञायाणं,
 नमो लोए सव्वसाहूणं.
 एसो पंचनमुक्तारो,
 सन्द्व पावप्पणस्सणो,
 मंगलाणं च सव्ववेसि,
 पढमं हवइ मंगलं ॥

(फिर-इच्छाकारि भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ऐसे गुरुको कहना यदि गुरु न हो तो स्वयं हाथसे ले लेना.)

करेमि भंते सामाइयं, सावज्ञं जोगं पञ्चधखामि, जावनियमं पञ्चुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवैमि तस्स भंते पांडिकमामि निंदामि गरिह्वामि अप्पाण चोसिरामि ॥ (फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्ञाए निसीहिआए मथ्यएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे संदिसाहुं ? “ इच्छं । ” इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्ञाए निसीहिआए मथ्यएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे ठाउं ? “ इच्छं । ” इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्ञाए निसीहिआए मथ्यएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय संदिसाहुं ? “ इच्छं । ” इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्ञाए निसीहिआए मथ्यएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, सज्जाय करुं ? “ इच्छं । ”

ऐसे कह कर दोनों हाथ जोड़के तीन नवकार गिनना. ॥

(इति सामायिक लेनेका विश्वि संपूर्ण.)

अथ श्री राइप्रतिक्रमण विधि.

(इस प्रकार सामायिक लेकर फिर.)

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्ञाए निसीहिआए मथ्यएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् कुसुमिण दुसुमिण

पहिली— “ योगमुद्रा ” दोनों हाथकी दसों अंगुलियां इच्छी करके इस मुद्रा को बैठे बैठे जो क्रिया करनेमें आती है उस खल्त पर उपयोगमें लेनी.

दूसरी “ जिनमुद्रा ”— खडे हुए दो पैरोंके बीचमें अगले आगमें चार अंगुल जगह रखनी और पिछले भागमें उससे कुछ कम रखनी, यह मुद्रा खडे खडे काउस्सग वगैरह विधिओमें करनेकी है. बिना काउस्सग खडे रहे हुए पांवसे जिनमुद्रा और हाथसे योगमुद्रा रखनी आहिये.

राहउद्गुवाणि पायचित्त विसोहणथं काउस्सग्ग करुः? 'इच्छुँ' ।
कुसुमिण दुसुमिण राहउद्गुवाणि पायचित्त विसोहणथं करेमि
काउस्सग्ग ॥ अन्नथथ उससिष्टणं नीससिष्टणं, खासिष्टणं छीष्टणं
जंभाइष्टणं उइहुणं वायनिस्सगोणं भमलिए पित्तमुच्छाए खुहु-
मेर्हि अंगसंचालेर्हि सुहुमेर्हि खेलसंचालेर्हि सुहुमेर्हि दिझि-
संचालेर्हि एवमाइष्टणं आगारेर्हि अभग्गो अविराहिथो हुज्ज
मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न
पारेमि तावकायं ठाणेणं भोणेणं झाणेणं अणाणं बोसिरामि ॥

(चार लोगस्सका काउस्सग्ग करना लोगस्स न आना हो तो सोलह
नवकारका काउस्सग्ग करना, काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना वह
नचै मुजब.) .

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणं ।
अरिहंते कित्तहस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिथं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिङ्गंस वासुपुज्जं च ॥
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंयुं अरं च मर्हि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥
वंदामि रिहुनेमि, पासं तह वडमाणं च ॥ ४ ॥
एवं मए अभियुआ, विहुयरथमला पहीणजरमरणा ॥
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिङ्गा ॥
आहुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥
सागरवरगंभीरा, सिङ्गा सिङ्गि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिलं जावाणिज्जाए निसीहिआए
मथथएण वंदामि:
(ऐसे कहके चैत्यवंदन करना) ..

त्रैत्यवंदन

जगचित्तामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्षण ।
 जगवंधव जगसत्थवाह, जगभावविअख्यण ॥
 अद्वावय संठविय रुवकम्मटु विणासण ।
 चउर्वीसंपि जिणवर जग्यतु अप्पडिह्यसासण ॥ १ ॥
 कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं यदम संघयाणि ।
 उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहर्तलभभइ ॥
 नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्रस नव साहु गम्मइ ।
 संपइ जिणवर वीस मुणि विहुं कोडिहिं वरनाण ।
 समणह कोडि सहस्र दुअ थुणिजिअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥
 जयउ सामी जयउ सामी रिसह सत्तुंजि उजित पंहुनेमिजिण ।
 जयउ वीर सच्चउरि मंडण, भरुथच्छहिं मुणिसुव्वय ।
 मुहरिपास दुह दुरिअवंडण, अवर विदेहिं तित्थयरा ।
 चिहुंदिसि विदिसि जिं केवि तीवणागय ॥
 संपइय वंडुजिण सव्वेचि ॥ ३ ॥
 सत्ताणवइ सहस्रा, लखवा छप्पन अद्वकोडिओ ।
 वत्तीसय वासीआइ, तिअलोए चेड्हए वंदे ॥ ४ ॥
 पन्नरस कोडि सयाइ कोडि वायाल लखद अडवन्ना ।
 छत्तीस सहस्र असिआइ, सासय विवाइ पणमामि ॥ ५ ॥
 जं किंचि नाम तिन्यं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
 जाइ जिणविवाइ, ताइ सव्वाइ घंदामि ॥
 फिर
 नमुत्थुण अरिहंताण भगवंताण ॥ ६ ॥
 वाइगराण तित्थयराण, सयंसंबुद्धाण ॥ ७ ॥
 षुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसवरपुंडरियाण ।
 पुरिसवरगंथहथीण ॥ ८ ॥
 लोगुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहिआण ।
 लोगपइवाण, लोगपज्जोथगराण ॥ ९ ॥
 अभयद्याण, चखबुद्याण, मगद्याण, ॥

सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥ ५ ॥

धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायराणं ॥

धम्मसतरहीणं, धम्मवरचाउरतचक्वद्वीणं ॥ ६ ॥

अप्पडिह्य वरनाण दंसणधराणं, वियद्वच्छुउमाणं ॥ ७ ॥

जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, ॥

बुद्धाणं वोहियाणं, मुन्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥

सव्ववन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयलमरुय ॥

मणंत मव्वखकय मव्वावाह मपुणराविच्चि सिद्धिगद्वनामधेयं ।

ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥

संपइअ वद्वमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उइढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।

सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ॥

सव्वेसि तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाद्यायसर्वसाधुभ्यः (फिर)

उवस्सगगहरं पासं, पासं वंदामि कस्मधणमुक्तं ।

विसहर विसनिन्नासं मंगलकल्पाण आवासं ॥ १ ॥

विसहर फुलिंगमंतं कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।

तस्स गह रोगमारी दुडुजरा जांति उवसामं ॥ २ ॥

चिड्डुउ दूरे मंतो, तुज्ज्ञ पणामो वि वहुफलो होइ ।

नरतिरिष्यसु वि जीवा पावंति न दुःख दोगचं ॥ ३ ॥

तुह सम्मते लङ्घे चितामणि कप्पपायवध्यहिए ।

पावंति अविग्धंणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥

इअसंथुओ महायस भन्तिभरनिधभरेण हियण ।

ता देव दिज्जयोहिं भवे भवे पांसजिणचंद ॥ ५ ॥

(फिर)

जय वीयराय जगगुरु होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।

भव निव्वेओ मग्गाणुसारिआ इहुफल सिद्धि ॥ ६ ॥

लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआ-परत्थकरणं च ।

तुहमुहजेगो तवथगसेवणा आभवमखंडा ॥२॥
वारिज्जइ जइवि निभाणवंवर्णं वियराय तुहसमण।

तहवि मम हुज सेवा भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३॥
दुःखक्खओ कमक्खओ समाहि मरणं च घोहलाभो अ ।
संपज्जओ मह एअं तुहनाह पगम करणेण ॥ ४॥
सर्वं मंगल मंगलयं सर्वं कल्याण करणं ।

प्रधानं सर्वं धर्मणां जैनं जयते शासनं ॥ ५॥

(यहाँ एक खमासमग देकर भगवानहै इसादि एक एक पद कहना चाहिये)

भगवानहै, आवर्यहै, उपाध्यायहै, सर्वसाधुहै। इच्छामि-
खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदमि-
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय संदिसाहुं ? “इच्छु”
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण
वंदमि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय कहुं ? “इच्छु”
(ऐसे कहके एक नक्कार गिनना, फिर भरहेसरकी सज्जाय कहनी,
वह नीचे मुजब)

भरहेसर वाहुवली अमयकुमारो अ ढंडणकुमारो ।
सिरिओ आणिआउत्तो अंदमुत्तो नागदत्तो अ ॥ २॥
मेअज्ज थूलिभद्रो वयररिसी नंदिसेण सीहिगिरि ।
कयवन्नोअ सुकोसल युंडरिओ केसिकरकंहू ॥ २॥
हलविहल सुदंसण सालमहासाल सालिभद्रोअ ।
मद्रो दसनभद्रो पसन्नचंदो अ जसमद्रो ॥ ३॥
जंबुपहु वंकचूलो गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ।
धन्नो इलाइपुत्तो चिलाइपुत्तो अ वाहुमुणी ॥ ४॥
अज्जगिरि अज्जरकिलअ अज्जसुहर्थी उदायगो मणगो ।
कालयसूरि संबो पञ्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५॥
पभवो विष्णुकुमारो अदकुमारो दढप्पहारी अ ।
सिज्जंस कुरगहु अ सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६॥
एवमाइ महासत्ता दिनु सुदं गुणगणेहि संजुत्ता ।
जैसिनामगहणे पावयवंधा विलयं जंति ॥ ७॥

सुलसा चंदनवाला, मणोरमा मयणरेहा दमयती ।
 नमयासुदंरि सीया नंदा भदा सुभदा य ॥ ८ ॥
 राहमइ रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरिदेवी ।
 जिद्धसुजिद्ध मिगावइ पभावइ विलुणादेवी ॥ ९ ॥
 वंभी सुंदरी रुपिणी रेवइ कुंती सिवा जंयती य ।
 देवइ दाँवइ धारणि, कलावइ पुफकूला य ॥ १० ॥
 एउमावश्य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ।
 जंबुवइ सञ्चभामा, रुपिणि कन्हडुमहिसीओ ॥ ११ ॥
 जक्खाय जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूआदिन्ना य ।
 सेणा चेणा रेणा, भइणीओ श्वलिमद्दस्स ॥ १२ ॥
 हृच्छाइ महारस्त्रीओ जयंति अकलंक सीलकालिआओ ।
 अज्ञायिवज्जह जासिं जसपडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥

(फिर एक नवकार मेल गिनना)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नसो आयरियाणं
 नमो उवज्ञायाणं नमो लोए सववसाहूणं एसो पंचनमुक्तारो
 सब्ब पावप्पणासणो मंगलाणं च सब्बेसि पढभं हृच्छ मंगलं ॥
 हृच्छकार सुहराइ सुखतपशरीर निरावाध सुखसंयमयान्ना
 निर्वहो छो जी स्वामी शाता छे जी
 हृच्छकारेण संदिसह भगवान् राहपडिक्कमणे ठाउं ? हृच्छं
 सब्बस्सवि राहअ दुचितिथ दुभासिथ दुचिद्दिठथ इच्छा-
 कारेण संदिसह भगवन् ? हृच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं.
 (फिर नेमोत्थुणं कहना)

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं १ आइगराणं तित्थयराणं
 सर्यसंवुद्धाणं २ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिस्सवर युडिथा-
 णं पुरिसवरगंधहत्थीणं ३ लोमुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगाहिआणं
 लोगपडवाणं लोगायज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्न-
 दयाणं सरणदयाणं ओहिदयाणं ४ धम्मदयाणं धम्मदेसि-
 आणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवटीणं ५
 अप्पडिहय घरनाणं दंसणधराणं विअहुछउमाणं ६ जिणाणं

जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुक्ताणं मोअ-
गाणं उ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमस्थमणंत-
मक्षयमव्वावाहुमणुगराविच्चित्ति सिद्धिगद्वामधेयं ठाणं-
संपत्ताणं नमोजिणाणं जिअभयाणं जे अ अईआ सिद्धा जे अ-
भविस्सांति णागप काले संपद्वा वद्वमाणा सव्वे तिविहेण
वंदामि १०.

करेमिभंते सामइयं सावज्जंजोगं पञ्चवखामि जावनियमं
फज्जुवासामि दुविहं तिविहेण मणेणं वायाएकाएणं न करेमि
न कारवेमि तस्स भंते पविक्फमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं
बोसिरामि ।

इच्छामिठामि काउस्सगं जो मे राइओ अद्वारो कओ काइ-
ओ वाइओ माणसिओ उसुक्तो उममगो अकप्यो अकर-
णिज्जो दुल्ज्ञाओ दुविचितिओ अणायारो अणिच्छयव्वो
असावगपाउगगो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए
तिन्हं मुक्तीणं चउन्हं कसायाणं पंचन्हमणुव्वयाणं तिन्हं मुण-
व्वयाणं चउन्हं सिक्खावयाणं वरसविहरस सावग धम्मस्स
जे खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिन्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरिकरणेण पायच्छित्त करणेण विसोही करणेण
विसल्लीकरणेण पावाणं कमराणं णिग्नायणद्वाए ठामि
काउस्सगं ।

अन्नतथ उससिपणं निससीएणं खासिपणं छीएणं जंभाइ-
गणं उहुएणं वायनिसगेणं भगलिए पित्तमुच्छ्वाए सुहु-
मेहिं अंग संचोलेहि सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिड्हि-
संचालेहिं एवमाइपहिं आगारेहिं अभगगो अविराहिओ
हुज्ज मे काउस्सगो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्तारेणं न
पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं बोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउस्सग करता, न आवे तो चार नवकार भंग
गिनना. फिर काउस्सग पारके प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे मुजब.)
लोगस्स उज्जोथगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।

अरिहंते कित्तइसर्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
 उंसभमाजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमहं च ।
 पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
 सुयिहिं च पुफ्फदतं, सीयल सिङ्गंस वासुपुज्जं च ।
 विमलमणंतं च जिणं, धरमं संतं च वंदामि ॥ ३ ॥
 कुंथुं थरं च मर्लि, वंदे सुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
 वंदामि रिटनोमिं, पासं तह वढ़माणं च ॥ ४ ॥
 एवं मए अभियुआ, विहुयरथमला पहीणजरमरणा ।
 चउवीसंपि जिणवरा, तिथयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
 कित्तिय वंदिय महिया जेण लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
 आरुग वोहिलामं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
 चंदेसु निम्मलयरा, आद्वेसु अहियं पयासयरा ।
 सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम द्रिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर)

सब्बलोए अरिहंतचेइआणं करोमि काउस्सगं वंदणघात्ति
 आए पूथणवत्तिआए सक्षारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहि-
 लाभवत्तिआए निरुवसगं वत्तिआए सज्जाए मेहाए धिहए
 धारणाए अणुष्पेहाए वढ़माणीए ठामि काउस्सगं ।

अन्नथ उसासिएणं निसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं
 उड्हुएणं वायनिसग्गोणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगर्स-
 चालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहिसंचालेहिं एव-
 माइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज भे काउस्सग्गो
 जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारोमि तावकायं
 ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अण्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउस्सग करना. न आवे तो चार नवकारमंत्र गिनने.
 फिर पुक्खरवरदीवहृ कहना. वह नीचे सुजव.)

पुक्खरवरदीवहृ धायइसंडे अ जंदीवे अ ।

भरहेरव्य विदैह धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥

तमतिमिरपडलविद्धसणस्स सरगणनारिदमहियस्स ।

सीमाधरस्स वंदे पण्फोडिअ मोहंजालंस्स ॥ २ ॥

जाइ जरा मरण सोग पणारदणस्स
 कहुण पुळखलविसालसुहावहस्स ।
 को देवदाणव नरिंदगणचियस्स
 धम्मस्स सारमुवलभ करे पमायं ॥ ३ ॥
 सिंद्वे भो पयथो णमो जिणमये नंदिसया संजमे
 देवं नाग सुवन्नकिन्नर गणस्सभूथ भावचिण ।
 लोगो जन्थ पडिठिओ जगमिण तेलुक्कमचासुरं
 धम्मो बहुउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं बहुथो ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, धंदण वत्तिआए
 पूअण वत्तिआए सक्कार वत्तिआए सम्माण वत्तिआए बोह्हि-
 लाभ वत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सन्द्वाए मेहाए धिझण
 धारणाए अणुल्येहाए बहुमाणिष ठामि काउस्सग्गं ।

अब्बत्थ उससीएण निससीएण खासिएण छीएण जंभाह-
 पण उडुएण वायनिसग्गेण भमालिष पित्तमुच्छाए सुहुमेहि-
 अंगसंचालेहि सुहुमेहि खेलसंचालेहि सुहुमेहि दिह्विसंचालेहि-
 एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो अचिराहिओ हुज्ज मे काउस्स-
 ग्गो जाव अरिहंताण भगवंताण नमुक्कारेण न पारेमि ताव-
 कायं ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण घोसिरामि ॥

(किर आठ गाथाका काउस्सग्ग करना, न आवे तो आठ नवकारमंत्र
 गिनना, वह आठ गाथाका काउस्सग्ग नीचे मुजव,)

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तर्वंमि तह य विरियंमि ।
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥
 काले विणए वहु माणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ।
 वंजण अत्थ तदुभय, अहुविहो नाणमायारो ॥ २ ॥
 निससंकिश निक्रंखिथ निवितिगिच्छा असूढिष्ठी अ ।
 उववूह थिरीकरणे चच्छलप्पभावणे अहु ॥ ३ ॥
 पणिहाण जोगजुत्तो पंचाहिं समिहाहिं तिंहिं गुरत्तिहिं ।
 एस चरित्तायारो, अहुविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥
 चारस विहंमि तवे, सर्विमत्तर चाहिरे कुसलदिष्टे ।

अग्निलाइ अणाजीवी, नायव्वो सां तवायारो ॥ ५ ॥

अणसणमूणो अरिया, वित्तीसंखेवणं रसज्ञाओ ।

कांयकिलेसो संलीणयाय वज्ञो तवो होई ॥ ६ ॥

पायच्छित्तं विणओ, देयावज्ञं तहेव सज्ञाओ ।

ज्ञाणं उस्सग्गोवि अ, अद्विभतरओ तवो होई ॥ ७ ॥

अणगृहिअ वलविरिओ परिक्षमइ जो जहुत्तमाउत्तो ।

जुंजइ अ जहा थामं नायव्वो वीरियायारो ॥ ८ ॥

(काउस्सग्ग पारके सिद्धाणं दुद्धाणं कहना. वह नीचे मुजब.)

सिद्धाणं दुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ।

लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥

जो देवाण वि देवो जं देवा पंजली नमंसंति ।

तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥

इक्षोवि नमुक्तारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ।

संसार सागराओ तरेह नरं व नारि वा ॥ ३ ॥

उर्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।

तं धम्मचक्रवर्हिं अरिठुनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥

चत्तारि अहु दस दोय, वंदिया जिणवरा चउवीसं ।

परमङ्गु निहिथद्वा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥

(फिर तिसरे आवस्यककी मुहपत्ती पठिलेहनी फिर दो वांदणा देना वह नीचे मुजब.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए
आणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहिअ होकायं काय संफासं
खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण मे गाइ वइ-
झेता जत्ता मे जवाणिज्जं च मे खामेभि खमासमणो राहआए
खद्धक्षमं थावसिआए पाडिक्कमामि खमासमणाणं राहआए
आसाएणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मणंदुक्कडाए
धयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए
खव्वकालिआए सव्वमिच्छोवराए सव्वधमाइक्कमणाए
आसायणाए जो मे अहआरो कओ तस्स खमासमणो पाडिक्कमा-
मि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वीसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो चंदिर्जावणिज्ञाए निसीहिआए अणु-
जाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकायं काय संफासं खम-
गिज्जो भे किलमो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे राहू वद्वकंता
जत्ता भे जवणिज्जं च भे खमेमि खमासमणो राइअं वद्वकम्य
पडिकमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तिर्चासन्न अ
राए जंकिंचि मिच्छाए मणदुकडाए वयदुकडाए कायदुक-
डाए कोहाए माणाए माणाए लोभाए सव्वकालिआए
सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधर्माइक्षमणाए आसायणाए जो
मे अइआगो कओ तस्स खपासत्रणो पडिकमामि निदामि
गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥२॥

(फिर)

इच्छाकारिण संदिसह भगवन् राइअं आलोडं ? “ इच्छं ” !
आलोषमि जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ धाइओ
माणसिओ उसुत्तो उम्मगो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्ज्ञाओ
दुविर्धातिओ अणत्यरो अणिच्छियव्वो असावग पाउगगो
नाणे दंसणे चरित्ता चरित्ते सुए सामाइए तिणहुगुर्तीणं चउ-
णहु कसायाणं पचणहुमणुव्वयाणं तिणहु गुणव्वयाणं चउणहु
सिक्खावयाणं वारसचिह्नस्स सावग धमस्स जं खंडिअं जं वि-
राहिअं तस्स मिच्छामि दुकडं ॥

(फिर)

सात लाख पृथिवीकाय सात लाख अपकाय सात लाख
तेउकाय सात लाख वाडकाय दस लाख प्रत्येक वनस्पति-
काय चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय वे लाख वे हँद्रिय
वे लाख तेहँद्रिय वे लाख चउर्हिद्रिय चार लाख देवता चार
लाख नारकी चार लाख त्रियंब पचेंद्रिय चौद लाख मनुष्य
एवंकारे चोरासी लाख जीवायोनीमेंसे मेरे जीवने जो कोई जीव
हनन किया हो करया हो करनेवाले को भला जाना होय से
सब मन चचन काया कर मिच्छामि दुकडं ॥

(फिर)

पहले प्राणातिपात दूजे मृथावाद तीजे अदत्तादान चौथे
मैथुन पांचमे परिग्रह छठे क्लोध सातमे मान आठमे माया
नवमे लोभ दसमे राग इग्यारमे द्वेष बारमे कलह तेरमे
अभ्याख्यान चौदमें पैशुन्य पंदरमे रति अरति लोलमे पर
परिवाद सत्तरमे मायामृथावाद अठारमे मिथ्यात्वशब्द्य इन
अठारह पापस्थानौमें से मेरे जीवने जो कोई पापस्थान सेवन
किया हो कराया हो करनेको भला जाना हो चह सब मन
बचन कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

फिर

सब्बससवि राइअ दुच्छिन्तिभ दुब्भासिभ दुच्छिह्निभ इच्छा-
कारेण संदिसह भगवन् तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥

(दाहिणा गोडा ऊचा करके नीचे मुजब बोलना)

नमो आरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं ।
नमो उच्छ्वायाणं नमो लोए सब्बसाहूणं एसो पंच
नमुक्कारो सब्बपावप्यणासणो मंगलाणच सब्बेओंसि
पढमं हृवह मंगलं ॥

करोमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चवक्षामि जाव-
नियमं पञ्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं घायाए काएणं न
करोमि न कारवोमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं घोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिडं जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ
चाइओ माणसिथो उसुत्तो उमग्गो थकप्पो थकरणिज्जो
दुज्ज्ञाओ दुविवर्चितिओ अणायारो थणिच्छअब्बो असा-
वग पाउग्गो जाणे दंसणे चरित्ताचारित्ते सुष सामाइए तिष्ठं
गुत्तीणं चउणहं कसायाणं पंचणहमणुव्ययाणं तिष्ठं शुण-
व्ययाणं घउणहं सिक्खावयाणं वारस विहस्स सावग
धम्मस्स जं खंडिअं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥

वंदेत्तु सब्बसिद्धे, धम्मायरिए अ सब्बसाहू अ ।

इच्छामि पडिक्कमिडं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥

जो मे वयाइबारो, नाणे तह दंसणे चरिते अ ।
 सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥
 दुविहे परिगग्निमि, सावन्जे बहुविहे अ आरंभे ।
 कारावणे अ करणे, पडिकमे राइबं सव्वं ॥ ३ ॥
 जं वद्धामिदिएहीं, चउहीं कसाएहीं अणसत्येहीं ।
 रगेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥
 आगमणे निगमणे, डाणे चकमणे अणाभोगे ।
 अभियोगे अ नियोगे पडिकमे राइबं सव्वं ॥ ५ ॥
 संका कंख विगिछ्छा, पसंस तह संथदो कुलिर्गीसु ।
 सम्भत्स्त इयारे, पडिकमे राइबं सव्वं ॥ ६ ॥
 उज्जाय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोस्ता ।
 अत्तद्वय परड्हा, उभयड्हा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
 यंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे ।
 सिक्षाणं च चउणहं, पडिकमे राइबं सव्वं ॥ ८ ॥
 पठमे अणुव्वयंमि, शूलगपाणाइवाद विरईओ ।
 आयरियमप्पसत्ये, इत्थं प्पमायप्पसंगेण ॥ ९ ॥
 वह वंध छविच्छेए, अइमारे भत्तपाणकुच्छेए ।
 पठमवयस्त इयारे, पडिकमे राइबं सव्वं ॥ १० ॥
 वीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलियवयण विरईओ ।
 आयरियमप्पसत्ये, इत्थं प्पमायप्पसंगेण ॥ ११ ॥
 सहसा रहस्स दारे, मोलुवएसे अ कूडलेहे अ ।
 वीयवयस्त इयारे, पडिकमे राइबं सव्वं ॥ १२ ॥
 तइए अणुव्वयंमि, शूलग परद्व्वहरण विरईओ ।
 आयरियमप्पसत्ये, इत्थं प्पमायप्पसंगेण ॥ १३ ॥
 लेनाहडप्पयोगे, तप्पडिरुवे विरुद्धगमणे अ ।
 कूडदुल कूडमाणे, पडिकमे राइबं सव्वं ॥ १४ ॥
 चउत्ये अणुव्वयंमि, निर्वं परद्वारणमण विरईओ ।
 आयरियमप्पसत्ये, इत्थं प्पमायप्पसंगेण ॥ १५ ॥
 घयरिणहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे ।
 वउत्यवयस्त इयारे, पडिकमे राइबं सव्वं ॥ १६ ॥

इत्तो अणुव्वए पंचमांमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।

परिमाण परिच्छेष, इत्थप्पमायप्पसंगेण ॥ १७ ॥

धण धन्न खित्तवत्यु, रूप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमापे ।

दुप्प चउप्पयंमि, पडिक्कमे राहअं सव्वं ॥ १८ ॥

गमणस्सज परिमाणे, दिसासु उहङ्गं अहेअ तिरिअं च ।

बुहिदसइ अंतरद्धा, पढमांमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥

मज्जांमि अ मंसंमि अ, पुष्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ।

उवभोगे परिभोगे, वीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥

सञ्चित्ते पडिव्वद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअं च आहारे ।

तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे राहअं सव्वं ॥ २१ ॥

इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जाए कम्मं ।

वाणिज्जं चेव य दंत, लक्खरस केसविस विसयं ॥ २२ ॥

एवं खु जंतपिलुण, कम्मं निलुँछणं च दवदाणं ।

सरदह तलायसोसं, असई पोसं च वज्जिजा ॥ २३ ॥

सत्थांग मुसल जंतग, तणकडे मंतमूलभेसजे ।

दिव्वे दवाविएवा पडिक्कमे राहअं सव्वं ॥ २४ ॥

न्हाणुवट्टणवन्नग, विलेवणे सहरूवरसगंधे ।

वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे राहअं सव्वं ॥ २५ ॥

कंदप्पे कुक्कडप, मोहारि अहिगरण भोगअइरिते ।

दंडांमि अणद्वाप, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥

तिविहे दुप्पणिहाणे, थणवडाणे तहासझविहुणे ।

सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥

आणवणे पेसवणे, सहे रुवे अ पुभगलवखेवे ।

देसावगासिअंमि, वीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥

संथारुच्चारविही, पमाए तहचेव भोयणा भोए ।

पोसह विहि विवरीए, तझए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥

सञ्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव ।

कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥

सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे असंजपसु अणुकंपा ।

रागेण व दोस्तेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥
 साहूसु संविभागो, न कओ तवचरण करण जुत्तेसु ।
 संते फासुयदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥
 इहलोए परलोए, जीविथ मरणे अ आसंसप्पओगे ।
 पंचविहो अइआरो, मा मज्ज हुज्ज मरण्ते ॥३३॥
 काएण काइअस्स, पडिक्कमे बाइअस्स वायाए ।
 मणसा माणसिअस्स, सव्वसं वयाइयारस्स ॥३४॥
 चंदणवर्यसिक्कलागा, रबेसु सन्ना कसाय दंडेसु ।
 गुत्तीसु अ समाइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥
 सम्मदिईर्जीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि ।
 अप्पोसि होई वंध्रो, जेण न निद्वंधसं कुणइ ॥३६॥
 तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआयं सउत्तरगुणं च ।
 खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिखिलओ विज्ञा ॥३७॥
 जहा विसं कुट्टगयं, मंतमूलविसारया ।
 विज्ञा हणंति मंतेहि, तो तं हवइ निविसं ॥३८॥
 एत्रं अडुविहं कममं, रागदोस संमालिअं ।
 आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥
 कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिथ गुरुसगाले ।
 होइ अइरेग लहुओ, ओहरिथ भरव्व भारवहो ॥४०॥
 आवस्सप्पण एण, साषओ जइवि वहुरओ होइ ॥
 दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥
 आलोअणा वहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले ।
 मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥
 तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तरस्स ॥
 अन्मुहिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए ।
 तिविहेण पडिकंतो, चंदामि जिणे चउव्वासिं ॥४३॥
 जावंति चेइआइ०॥४४॥ जावंत कोव साहू०॥४५॥
 चिर संचिय पाव प्रणासणीए भवसय सहस्स महणाए

चउवीस जिण विणिगगय कहाइ, घोलंतु मे दिअहा ॥
 मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
 सम्मदिहीदेवा, दितु समाहिं च घोहिं च ॥ ४७ ॥
 पडिसिद्धाणं करणे, किञ्चाणमकरणे पडिक्रमणं ।
 असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरुचणाए अ ॥ ४८ ॥
 खामेमि सब्ब जीवे, सब्बे जीवा खमंतु मे ॥
 मित्ति मे सब्बभूपसु, वेरं मज्ज्ञ न केणइ ॥ ४९ ॥
 एवमहं आलोहिअ, निंदिअ गरहिअ दुर्गंच्छिअं सम्मं ।
 तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्मुहिओमि अन्विन्तर
 राइअं खामेउं इच्छे खामेमि राइअं, जं किंचि अपत्तिअं पर-
 पत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावधे जालावे संलावे उच्चासणे
 समासणे थंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्ज्ञ विणय
 परिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुव्वमे जाणह अहं न जाणामि
 तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(किर दो वांदनां देनां)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए
 अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकायं काय संफासं
 खमाणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुमेण भे राइ वइ-
 कंता जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइअं
 वइक्रमं आवसिभाए पडिक्रमामि खमासमणाणं राइआए
 आसाएणाए तिच्छीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए
 वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए
 सब्बकालिआए सब्बमिच्छोवराए सब्बधम्माइक्रमणाए
 आसायणाए जो मे अइअरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्रमा-
 मि निंदामि गरहिअमि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणु-
 जाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकायं काय संफासं खमणिज्जो

भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइओ बहकंतो
जत्ता भे जबणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइअं बहकम्मं
पडिकमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नय-
राए जांकिचि मिच्छाए मणदुक्कडाए बयदुक्कडाए कायदुक्क-
डाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए
सव्वमिच्छेवयाराए सव्वधम्माइकमणाए आसायणाए जो
मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिकमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥२॥

आयरिय उच्चज्ञाए, सीसे साहम्मिए कुल गणेअ,

जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥

सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिकरिअ सीसे ।

सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥

सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहीअ निआचित्तो ।

सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

करेमि भंते सामइयं सावज्जं जोगं पच्चकखामि जावनियमं
पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि
न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
बोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सगं जो मे राइओ अइआरो कओ काइ-
ओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकर-
णिज्जो दुज्ज्वाओ दुविर्विचितिओ अणायारो अणिच्छियव्वो
असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए
तिन्हं मुत्तीणं चउन्हं कसायाणं पंचन्हमणुवयाणं तिन्हं मुण-
वयाणं चउन्हं सिक्खावयाणं वरसविहस्स सावगधम्मस्स
जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरिकरणेणः पायच्छित्त करणेण विसोही करणेण
विसल्लीकरणेण पावाणं कम्माणं पिण्डायणद्वाए ठामि
काउस्सगं ।

अन्नतथ उससिएणं निससीएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
एणं उदुएणं वायनिसगेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहु-

भेद्हि अंग संचालेहिं सुहुमेहिं. खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि-
संचालेहिं एवमाइपर्हि. आगारेहिं. अभगगो अविराहिओ
हुजा मे काउस्सगगो जाव अरिहंताणं भगवंताणं. नमुक्तरेणं न
पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं चोसिरामि ॥

(यहाँपर तपचित्तनका काउस्सग करना न आवे तो .सोलह नवकार
गिनने फिर काउस्सग परके प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे मुताविक)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थये जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।

पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

खुविहिं च पुण्फदंतं, सीयल सिङ्गंस वासुपुज्जं च ।

विमलमणंतं च. जिणं, धम्मं संति. च वंदामि ॥ ३ ॥

कुंथुं अरं च मर्ल्लि, वंदे मुणिखुव्वयं नमिजिणं च ।

वंदामि रिद्धनोर्मि, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

एवं मए अभिथुआ, विहुयरथमला पहीणजरमरणा ।

चउवीसंपि जिणवरा, तिलशगरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

कित्तिय वंदिय महिया, जे ५ लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।

आहग घोहिलाभं, समाहि वरसुच्तमं दितु ॥ ६ ॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइष्वेसु अहियं पयासयरा ।

सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर छट्टा आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहनी, फिर दो खमासमण
देने वह नीचे मुजब.)

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकायं काय संफासं
खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुमेण भे राह चइ-
कंता जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राहयं
वहुक्तमं आवसिआए पडिकमामि खमासमणाणं राहआए
आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मणदुकडाए
चयदुकडाए कायदुकडाए कोहाए माणाए लोभाए

सब्बकालिआए सब्बमिच्छोवराए सब्बधरमाइकमणाए
आसायणाए जोमे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्क-
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्जाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं काय संफासं
खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे राइ वइ-
कंता जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइअं
वइकमं आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए
आसायणाए तिन्तीसन्नयराए जांकिंचि मिच्छाए मणुकडाए
वयदुकडाए कायदुकडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए
सब्बकालिआए सब्बमिच्छोवराए सब्बधरमाइकमणाए
आसायणाए जोमे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्क-
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

(फिर सकलतीर्थ कहना.)

सकल तीर्थ बंदु कर जोड, जिनवरनामे मंगल कोड ॥
पहेले स्वर्गे लाख बतीश, जिनवर चैत्य नमुं निशादिश ॥ १ ॥
बीजे लाख अठाबीश कहां, ब्रीजे वार लाख सद्दहां ।
चोथे स्वर्गे अडलख धार, पांचमे बंदु लाखज चार ॥ २ ॥
छडे स्वर्गे लहसं पचास, सातमे चालीश सहस्र प्रासाद ।
आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमे बंदु शत चार ॥ ३ ॥
अर्यार वारमे ब्रणसे सार, नव ग्रैवेयके ब्रणसे अढार ।
पांच अनुत्तर सर्वे मळी, लाख चोराशी अधिकां बळी ॥ ४ ॥
सहस्र सत्ताणुं त्रेवीस सार, जिनवर भुवनतणो अधिकार ।
लांवा सो जोजन विस्तार, पचास उंचां बोहोतेर धार ॥ ५ ॥
एकसो एंशी विव प्रमाण, सभासहित एक चैत्ये जाण ।
सो कोड वावन कोड संभाल, लाख चोराणुं सहस्र चौंथाल ॥ ६ ॥
सातसे ऊपर साठ विशाल, सवि विव प्रणमुं ब्रण काल ।
सात क्रोडने बोहोतेर लाख, भुवनपतिमां देवल भाख ॥ ७ ॥
एकसो एंशी विव प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण ।

तेरसें कोड नेव्याशी कोड, साठ लाख बंदुं करजोड ॥ ८ ॥
 वशीसें ने ओगणसाठ, तीर्छालोकमां चैत्यनो पाठ ।
 लण लाख एकाणुं हजार, ब्रणसें वीश तें विव जुहार ॥ ९ ॥
 व्यतर जोतिपिमां वलीं जेह, शाश्वता जिन बंदुं तेह ।
 ऋषभ चंद्रानन वारिपेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ॥ १० ॥
 समेत शिखर बंदुं जिन वीश, अष्टापद बंदुं चोवीश ।
 विमलाचल ने गढ गिरनार, आळु ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥
 शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजितजुहार ।
 अंतरिक घरकाणो पास, जीरावलो ने थंभण पास ॥ १२ ॥
 गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगोह ।
 विहरमान बंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निश दिश ॥ १३ ॥
 अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस सिलांगना धार ।
 पंचमहावत समितिसार, पाळे पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥
 वाह्य अविभतर तप उजमाळ, ते मुनि बंदुं गुण मणिमाळ ।
 नित नित ऊठी कीर्ति करूं, जीव कहे भवसागर तरूं ॥ १५ ॥

(किर जो पचक्खाण धारणा हो सो यहांपर धार लेना.)

॥ अथ नमुक्कार सहिअं मुहुसहिअर्भर्तुं पचक्खाण ॥

उगगए सूरे नमुक्कार सहिअं मुहुसहिअं पचक्खाइ । चउ-
 विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्यणामोगेणं
 सहस्रागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे

(अथ पोरिसिं साढूढपोरिसिंका पचक्खाण)

उगगए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढूयोरिसिं मुहु-
 सहिअं पचक्खाइ । उगगएसूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं
 खाइमं साइमं अन्नत्यणामोगेणं सहस्रागारेणं पचछकालेणं
 दिसामोहेणं साहूवयणेणं मंहत्तरागारेणं सब्बसमाहिवात्त-
 आगारेण वोसिरे ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक, चउविसथओ,
 बंदणा, पडिकमणु, काउस्सग, पचक्खाण, कीया होतों कीया
 है, धारा होतो धारा है, वैसा कहना, और नोकारसी पारास.

उपरांत पचक्षण करना होतो भी यहाँ पर ही धार लेना ।

(फिर वाह्याँ प्रतिक्रमण करती हो तो वहाँपर संसारदावा कहे दृढ़ नीचे सुजब) -

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहद्वूलीहरणे समीरं,

मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥

भावावनामंसुरदानवमानवेन,

द्वूलाविलोलकमलावलिमालितानि ।

संपूरितामिनतलोकसमीहितानि,

कामं नमामि जिन्दराजपदानि तानि ॥ २ ॥

वोधानाथं सुपदपद्वी नीरपूरामिरामं,

जीवाहिंसाचिरललहरी संगमानाहदेहं ।

द्वूलावेलं चुखाममणि संकुलं दूरपारं,

सारं वीरानमजलानिर्धं साङ्गं साधु सेव ॥ ३ ॥

पुरुष इच्छामि असुन्नद्वे नमो त्वन्मुमणाणे नमोऽहन् चिद्वाचायो-
पाचाद तर्वेसाधुभ्यः ऐसा इहके विज्ञाललोचन कहे

विशालंलोचनदलं, प्रोद्धदंतांशुकेतरं,

प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं बुनातु वः ॥ ३ ॥

येयामामेवेकर्मदृन्वा, मत्ता हर्षमरात् सुखं सुर्याः ।

तुणमापि राणयंति नैव नाकं,

ग्रान्तःसन्तु दिवाय ते जिन्द्राः ॥ २ ॥

कलंकनिर्सुक्तममुक्तपूर्णतं, कुर्तकराहुग्रसनं सदोदयं ।

अपूर्वचंद्र जिनचंद्रभापितं,

दिनागमे नौमि धुर्यन्तमस्तुतं ॥ ३ ॥

नसुत्युणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ ३ ॥

आइगराणं, तित्थयराणं सर्वसंबुद्धाणं ॥ २ ॥

पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरसुंडरियाणं;

पुरिसवरगांथहंश्यीणं ॥ ३ ॥

लोकुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिमाणं;

लोगोपइवाणं, लोगपल्लोबगराणं ॥ ४ ॥

अभयदयाणं, चरखुदयाणं, मग्नदयाणं,,
सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्षवझीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, वियहृछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिज्ञाणं, तारयाणं,
बुद्धाणं वोहियाणं, मुक्त्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयलमरुय मण्ठं-
मक्खयमव्वावाहमपुणराविति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिज्ञा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
संपहब वहृमाणा, सब्बे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

अरिहंतचेइआणं करोमि काउस्सगं, वंदणवच्छिआए
पुअणवच्छिआए सक्कारवच्छिआए सम्माणवच्छिआए वोहिला-
भवच्छिआए निरुवसम्भवच्छिआए सद्भाए मेहाए धीइए
धारणाए अगुण्येहाए वहृढमाणीए ठामि काउस्सगं ।

अन्नतथउससिद्धणं निसलिष्टणं खालिष्टणं छीष्टणं जंभाइष्टणं
उहुण्टणं वायनेसग्नेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगक्षंवालेहिं सुहुमेहिं खे लसंवालेहिं सुहुमेहिं दिडिसंचालेहिं
एवमाइषहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिंओ हुज्ज मे काउस्सग्गो
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं नपारोमि तावकाय
ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग पारके फिर नमोऽहंतपिद्वाचायोपा-
ध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके प्रगट स्तुति कहनी वह नीचे मुताबिक ।)

कल्पाणकंदं पढमं जिणंदं, सांति तओ नेमिजिणं मुण्ठिंदं ।
पासं पथासं सुमुणिक्कठाणं, भन्तीह वंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥

(फिर)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसांपि केवली ॥ १ ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणदणं च सुमइं च ।
 पलमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
 सुविहिं च पुष्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुयुज्जं च ।
 विमलमणातं च जिणं, धर्ममं संति च वंदामि ॥ ३ ॥
 कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
 वंदामि रिद्युनेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
 एवं मए अभियुआ, विहुयरथमला पहीणजरमरणा ।
 चउवीसंपि जिणवरा, तिथयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
 कित्तिय वंदिय महिया, जेष लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
 आरुग वोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
 चंदेसु निमलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासंयरा ।
 सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिर्द्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सब्बलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सगं चंदणवात्ति-
 आए पूअणवात्तिआए सक्कारवात्तिआए सम्माणवात्तिआए वोहिं-
 लाभवात्तिआए निरुवस्सगवात्तिआए सद्धाए मेहाए घ्रिइए
 धारणाए अणुप्पेहाए वहुमाणीए ठामि काउस्सगं ।

अन्नतथ उससिएणं निसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं
 उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसं-
 चालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिड्हिसंचालेहिं एव-
 माइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज मे काउस्सग्गो
 जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुकारेणं न पारेमि तावकायं
 ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग करना फिर स्तुति कहनी वह नीचे मुजव)

अपार संसार समुद्धारां, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारां ।

सब्बे जिणिदा, सुरविंद वंदा, कह्लाण वहुण विसालकंदा ॥ ८ ॥

पुक्कवरवरदीवहु धायइसंडे अ जंवुदीवे अ ।

भरहेरवय विदेहे धर्ममाइगरे नमंसामि ॥ ९ ॥

तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगाणनर्दमहियस्स ।

सीमाधरस्स वंदे पफोडिंअ मोहजालस्स ॥ १० ॥

जाइ जरा मरण सोग पण्णासणस्स
 कल्पाण पुक्खलविसालसुहावहस्स ।
 को देवदाणवनार्दिगणाच्चियस्स ।
 धम्मस्स सारसुवलब्ध करे पमायं ॥ ३ ॥
 सिद्धे भो पयओ णमो जिणमये नंदिसया संजमे
 देवंनागसुवन्नकिन्नर गणस्सध्मूअ भावच्चिए ।
 लोगो जत्थ पइठिओ जगमिण तेलुक्कमच्चासुरं
 धम्मो वंडूउ सासओ विजयओ । धम्मुत्तरं वढूओ ॥ ४ ॥
 सुअस्स भगवओ करोमि काउस्सग्गं । वंदण वत्तिआए
 पूअण वत्तिआए सक्कार वत्तिआए सम्माण वत्तिआए बोहि-
 लाभ वत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए
 धारणाए अणुप्पेहाए वहुमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नतथ उससिएण निसासिएण खासिएण छीएण जंभाइ-
 शण उहुएण वायनिसग्गेण भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेर्हि
 अंगसंचालेहि सुहुमेर्हि खेलसंचालेहि सुहुमेर्हि दिहिसंचालेहि
 एवमाइर्हि आगारोहि अभग्गो अविराहिओ हुज मे काउस्स-
 ग्गो जाव अरिहंताण भगवंताण नमुक्करेण न पारेमि ताव-
 कायं ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ॥

(फिर एक नवकारका काउस्सग्ग करना, काउस्सग्ग पारके एक
 स्तुति कहनी वह नीचे मुजब ।)

निव्वाण मग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुचाइदप्पं ।
 मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ।
 लोअग्गमुवंगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥
 जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
 तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
 इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्माणस्स ।
 संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥
 उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।
 तं धम्मचक्रवर्हिं, अरिहुनेमि नमंसामि ॥ ४ ॥

चत्तारि अठु दस दोय, वंदियां जिणवरा चउवीसं ।

परमठनिहिंअठ्ठा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ १ ॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं समप्रद्विष्टि समाहिगराणं
करेमि काउस्सगं ।

अन्नात्थ उसासिएणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं,
उहुएणं चायनिसगेणं, भमलिप पित्तमुच्छाप, सुहुमेहि
अंग संचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहि दिहिसं-
चालेहि, एवभाइपहि, आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्जमे
काउस्सगगो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्करेणं न पारेमि
तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अण्पाणं वोसिरामि ॥

(ऐक इनवकारका काउस्सर्गम् करना किर नमोऽर्हत कहके स्तुति
कहनी वह नीचे मुजब ।)

कुंदिंदुंगोक्खीरं तुसारवज्ञा, सरोजहृथ्या क्रमले निसंवा ।
चाएसिरिपुत्थयवग्गहृथ्या, सुहाय सा अम्ह सथा पसत्थ्यो ॥ ५ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥

आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥

पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुङ्डरियाणं,
पुरिसवरगंधहृथीणं ॥ ३ ॥

लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं,

लोगर्पद्वाणं, लोगयज्ञोअगराणं ॥ ४ ॥

अभयद्याणं, चकखुद्याणं, मग्गद्याणं,

सरणद्याणं, बोहिद्याणं ॥ ५ ॥

धम्मद्याणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,

धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवटीणं ॥ ६ ॥

अप्पद्विहय वरनाण दंसणधराणं, विअड्ढउमाणं ॥ ७ ॥

जिणाणं, ज्ञावयाणं, तिज्ञाणं तारयाणं,

बुद्धाणं बोहिआणं, मुक्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥

सूच्यन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुय मणंत-
मक्खय मव्वावाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ।

ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सांति णागणं काले ॥

संपदइ वहुमाणा, सव्वे तिचिहेण वंदामि ॥ १० ॥

(यहांपर चार बल्ल एक एक खमासमण देकर दरेकके अंतमें भगवान् हं आदि कहना।)

भगवानहं, आचार्य हं, उपाख्याय हं, सर्वसाधु हं.

फिर

अहूाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पञ्चरससु कम्मभूमीसु, जावंत-
केविं साहू रथहरणगुच्छपडिगगहधरा पंचमहव्यधरा अहू-
रससहस्स सीलांगधरा, अवखयायारचरित्ता, ते सव्वे
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

(फिर एक खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीसीमंधर-
स्वामी आराधनार्थ दैत्यवंदन कहु। “ इच्छ ”)

चैत्यवंदन

श्री सीमंधर वीतराग, लिभुवन उपगारी ।

श्री श्रेयांस पिताकुले, वहु शोभा तुमारी ॥ १ ॥

धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी ।

चृपभलंछन विराजमान, वंदे नरनारी ॥ २ ॥

धनुष पांचशे देहडीप, सोहिए सोवनवान ।

कार्तिंविजय उवज्ञायनो, विनयधरे तुम ध्यान ॥ ३ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्ने पायालि माणुसे लोए ।

जाइं जिणिविघाइ, ताइं सद्वाइ वंदामि ॥ ४ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥

आइगराणं तित्थयराणं, सर्यसंबुद्धाणं ॥ २ ॥

पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरियाणं,

पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥

लोकुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं,

लोगर्हिवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अभयदाणं चख्खुदयाणं, मग्गदयाणं,
सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्षवटीणं ॥ ६ ॥
अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, वियहुछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सङ्घनूणं, स्ववदरिसिणं, सिवमयलमरुय मण्ठंत-
मक्षय मव्वावाह मयुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं
ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
संपइअ बहुमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥
जावंति चेइआइ उहुदेअ अहेथ तिरिय लोए अ ।
सव्वाइ ताइ वंदे, इह संतो तथसंताइ ॥ १ ॥

(एक खमासमण देके)

जावंत केये साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥
नमोईहृत् सिद्धावायोपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

(ऐसा कहके स्तवन कहना.)

(स्तवन)

पुक्खलवइ विजए जयोरे, नयरी पुँडरिगिणी सार ।
श्रीसीमंधर साहिबोरे, राय श्रेयांस कुमार ॥
जिणदराय धरजो धर्म सनेह । ए आंकणी ॥
मोटा न्हाना अंतरारे, गिरुआ नवि दाखंत ॥
शशि दरिसण सायरवधेरे, कैरववनविकसंत । जिऽध० ॥२॥
ठाम कुठाम नवि लेखबेरे, यरसंत जलधार ।
करदोय कुसुमे वासियरे, छाया सवि आधार । जिऽध० ॥३॥
राय ने रंक सरिखा गणेरे, उद्योते शाशि मूर ।

गंगाजल ते विहुं तणारे, ताप करे सवि दूर । जि०ध० ॥ ४ ॥
सरिखा सहुने तारवारे, तिम तुमे छो महाराज ।

मुजखुं अंतर किम करोरे, वांहे ग्रहांनी लाज । जि०ध० ॥ ५ ॥
मुख देखी टीलुं करोरे, ते नवि होय प्रमाण ।

मुजरो माने सवि तणोरे, साहेव तेह सुजाण । जि०ध० ॥ ६ ॥
वृपभलंछन माता सत्यकीरे, नंदन रुक्मिणीकंत ।

चाचकजसपम विनवेरे, भयभंजन भगवंत जि०ध० ॥ ७ ॥

जय वीर्यराय जगमुरु होउ ममं तुह पमावओ भयवं ।

भवनिवेओ मग्गाणुसारिआ इडफल सिद्धि ॥ १ ॥

लोगविरुद्धच्छाओ गुरुजणपूआपरत्थकरणं च ।

सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

चारिज्जइ जइचि निआणवंधणं वीर्यराय तुहसमए ।

तहवि मम हुज सेवा भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥

दुक्खवक्खओ कम्मवक्खओ समाहिंमरणं च वोहिलाभो अ ।

संपञ्जओ मह एअं तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥

सर्वं मंगलमांगल्यं सर्वं कल्याण कारणं ।

प्रधानं सर्वं धर्माणां जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥

अरिहंत वैद्यथाणं करोमि काउस्सगं, वंदण वत्तिआए
पृथण वत्तिआए सक्करवत्तिआए सम्माण वत्तिआए वोहिला-
भवत्तिआए भिरुवस्सगवत्तिआए सद्वाए मेहाए धीइए
धारणाए अणुणेहाए वहूमाणीए ठामि काउस्सगं ॥

अन्नथथ उससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं जंभाइ-
एणं उहहुएणं वायनिसग्गोणं भमालिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहिसंचा-
लेहिं एवमाइएहिं आगारोहिं अभग्गो अविराहिथो हुज मे
काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कोरणं न पारोमि
ताचकायं टाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहाँपर एक नवकारका क उस्सग करके फिर नमोर्हत् सिद्धाचायों-
पाध्याय सर्वसाधुभ्यः कहके एक स्तुति कहनी वह नीचे मुजबः)

सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिव देव ।
 अरिहंत सकलनी, भावधरी करुंसेव ।
 सकलागम पारण, गणधरभाषित वाणी ।
 जयवंति आणा, शानविमल मुणखाणी ॥ १ ॥

(दोहरा)

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठदेश मङ्गार ।
 मनुषजनम पामी करी, वंदूं वार हजार ॥ १ ॥
 एकेकुंडगलुं भरे, शेनुंजा साहसुं जेह ।
 रिथम कहे भवकोडनां, कर्म खपावे तेह ॥ २ ॥
 शेनुंजा समो तीरथ नहि, रुषभ समो नहि देव ।
 गौतमसारखा गुरु नहि, वली वली वंदूं तेह ॥ ३ ॥
 सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोङ्गार ।
 मनुषजनम पामी करी, वंदूं वार हजार ॥ ४ ॥
 सोरठ देशमां संचर्यों, न चढ्यो गढ गिरनार ।
 शेनुंजी नदीं नाहो नहि, तेनो एळे गयो अवतार ॥ ५ ॥

(फिर समाप्तमण देकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीसिद्धगिरि आराधनार्थं चैत्यवंदन
करुं “इच्छुं”

चैत्यवंदन.

श्री शेनुंजय सिद्धस्तेव, दीठे दुर्गति वारे ।
 भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥ १ ॥
 अनंत सिद्धनुं एह ठाम, सकल तीरथनो राय ।
 पूर्व नवाणुं रुषभ देव, उयां डवीया प्रभु पाय ॥ २ ॥
 सूरजकुंड सोहामणो, कविडयक्ष अभिराम ।
 नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सगे पायाले माणुसे लोए ।
 जाइं जिण विवाइं, ताइं सब्बाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥

आइगराणं तित्थयराणं, सर्थसंबुद्धाणं, ॥ २ ॥

पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरियाणं ।
 पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥

लेखुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥
 लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अभयदाणं, चखुदयाणं, भगदयाणं, ॥
 सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥

धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं ॥
 धम्मसारहीणं, धम्मवरच्चाउरंतचकवटीणं ॥ ६ ॥

अप्पडिहय वरनाण देसणधराणं, वियहुछउमाणं ॥ ७ ॥

जिणाणं, जावयाणं, तिच्छाणं तारयाणं, ॥
 बुद्धाणं बोहियाणं, मुक्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥

सब्बन्नूणं, सब्बदरिसिणं, सिवमयलमरुय मणंत-
 मक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
 संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविससंति णागए काले ।
 संपढथ बहुमाणा, सब्बे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइ उङ्घडेअ अहेअ तिरिय लोए अ ।
 सब्बाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

(फिर एक खमासमण देकर)

जावंत केयि साहू, भरहेरवयमहाविद्वै अ ।
 सब्बेसिं तेसि पणओ, तिविहेण तिदंड.विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचायोंपाव्यायसर्वसाधुभ्यः
 (ऐसा कहके स्तवन कहना.)

(स्तवन)

विमलाचल नितु वंदिये, कीजे एहनी सेवा ।
 मानुं हात ए धर्मनो शिवतरफल लेवा । विमला० ॥ १ ॥

उज्ज्वलं जिनगृहं मंडलीं, तिहाँ दीपे उत्तंगा ।

मानुं हिमगिरी विभ्रमे, आइ अंवर गंगा । वि० ॥ २ ॥
कोई अनेरो जग नहि, ए तीरथ तोले ।

एम श्रीमुख हरि आगले, श्रीसीमंधर बोले । वि० ॥३॥
जे सगळा तीरथ कर्या, याता फल कहिए ।

तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहिए । वि०॥४॥
जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि धंदे ।

सुजशाविजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे । वि० ॥५॥

जय वीयराय जगमुरु होउ ममं तुह पभावओ भयर्वं
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इटफल सिद्धि ॥ १ ॥

लोगविरुद्धचाओ मुरुजणपूआपरत्थदरणं च ।

सुहगुरुजोगो तद्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

चारिज्जाइ जइवि निथाणवंधणं वीयराय तुहसमए ।

तहवि मम हुज्ज सेवा भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥

दुखमओ कम्मम्भओ समाहिमरणं च बोहिलामो अ ।

संपज्जउ मह एअं, तुह णाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥

सर्वमंगल मांगल्यं सर्व कल्याण कारणं ।

प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सगं चंदणवत्तिआए पूथ-
णवत्तिआए सक्करवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभ-
वत्तिआए निरुवसगवत्तिआए सद्गाए मेहाए धीहिए धार-
णाए अणुप्पेहाए बहुमाणीए ठामि काउस्सगं ॥

अन्नत्य उसासिएणं निससीएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
एणं उहुएणं वायनिसगेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहु-
मेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहि-
संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ
हुज्ज मे काउस्सगो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न
पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं बोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग करना काउस्सग पारके नमोऽर्द्धत्
सिद्धाचायोपाध्याय सर्वसाधुभ्य ऐसा कहकर स्तुति कहनी.)

पुँडरिकगिरी महिमा आगममां परस्तिष्ठ ।
 विमलाचल भेटी, लहिए अविचल रिष्ठ ॥
 पंचमि गति पहोत्या, मुनिवर कोडाकोड ।
 एणे तीरथे आवी, कर्म विपातिक छोड ॥ १ ॥
 (अथ सामायिक पारनेका विधि)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहिर्यं पाडिक्कमामि,
 इच्छं इच्छामि पाडिक्कमिञ्चं, इरियावहिआए विराहणाए गम-
 णागमणे पाणक्कमणे चीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसाउर्त्तिंग
 पणगदग मट्टी मक्कडा संताणा संक्कमणे जे मे जीवा विरा-
 हिआ एगिंदिया वेईंदिया तेईंदिया चउर्रिंदिया पंचिंदिया
 अभिहया वाच्चिया लेसिया संघाहया संघट्टिया परियाविया
 किलामिया उहविया ठाणाउठाणं संकामिया जीविथाओ चव-
 रोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरिकरणेण पायच्छित्त करणेण विसोही करणेण
 विसल्लीकरणेण पावाणं कम्माणं णिग्धायणदूठाए ठामि
 काउस्सग्गं ।

अन्नतथ उससीपणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
 एणं उहुहुएणं वयनिसगेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
 अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिदिठसंचा-
 लेहिं एकमाइएहिं आगारेहिं अभगो अविराहिओ हुज्ज मे
 काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि
 तावकायं ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाणं वोसिरामि॥

(ऐसा कहके एक लोगस्सका काउस्सग्ग करना लोगस्स आता न हो
 तो चार नवकार मंत्र गिनने किर काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना
 वह नीचे मुजब)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
 अरिहंते कित्तद्वस्सं, चउर्वासं पि केवली ॥
 उसभमजिथं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
 पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥

सुविहिं च उपर्युक्तं, सीअल सिङ्गंस वासुपुर्जं च ।
 विमलमणं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥
 कुंथुं अरं च माल्हे, वंदे मुणिसुव्वयं नामिजिणं च ।
 वंदामि रिष्टुनेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥
 एवं मए अभियुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
 चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥
 कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
 आरुगग-वोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥
 चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
 सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
 मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहुं, “इच्छुं”

(ऐसा कहके मुहपत्ति पडिलेहनी. फिर खमासमण देना.)

इच्छामि खमाणमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
 मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पार्ह, ‘यथाशक्ति’।
 इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
 मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पार्ह्यु, “तहत्ति”।

(ऐसा कहकर फिर एक नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरिआणं नमो उव-
 ज्ञायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंचमुक्कारो सव्वपाव-
 षणासणो मंगलाणं च सव्ववेसि पढमं हवइ मंगलं ॥

(फिर आसनपर दाहिणा हाथ रखके नीचे मुजब गाथा बोलना)

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो ।

छिन्नइ असुहुं कम्मं, सामाइय जन्तिया वारा ॥ १ ॥

सामाइयंमिउ कष, समणो इव सावओ हवइ जम्हा ॥

एपण कारणेण, वहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ २ ॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो
कोइ अविधि हुआ हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छामि
दुक्कड़ । दश मनके दश वचनके बारह कायाके यह बत्तीस
दोषमें जो कोइ दोष हुआ हो वह सब मन वचन कायाकर
मिच्छामि दुक्कड़ ॥

(इति सामायिक पारनेका विधि)

॥ अथ देवसिथ प्रतिक्रमण विधि ॥



नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआणं, नमो
उघज्ज्वायाणं, नमो लोप सब्वसाहूणं. एसो पंचनमुक्तारो,
सब्वपावण्पणासणो, मंगलाणं च सब्वोर्सि, पढमं हवइ मंगलं ॥
पंचिदियसंचरणो, तह नवविहवंभच्चेरमुत्तिधरो ।

चउविक्तकसायमुक्तो, इअ अह्वारसमुणेहि संजुत्तो ।

पंचमहव्वयज्ञुत्तो, पंचविहायारपालणसमत्थो ।

पंचसमिथो तिमुत्तो छत्तीसमुणो गुरु भज्ञ ॥

(आचार्यजी हो तो पंचिदियन कहना; न हो तो पुस्तक, नवकारवाली
प्रमुखकी पंचिदिय कहके दाहिणा हाथ नीचे जभीन पर रखके
स्थापना करनी.)

इच्छामि खमासमणो वंदिं, जावणिज्जाए निसीहिआए,
मत्थएण वंदगामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि,
इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहिआए, विराहणाए,
गमणागमणे पाणकमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग
पणग दग, मझी मकडा संताणा संकमणे, जे मे जीवा विरा-
हिआ, परिंदिया वेझंदिया, तेझंदिया चउरिंदिया, पंचिदिया,

अभिहया वक्तिया लेसिया, संघाइया संघाईया परियाविया,
किलामिया उहविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ
बवरोविया तस्स मिच्छामि डुङ्गडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छत्तकरणेण, विसोहीकर-
णेण, विस्फीकरणेण पावाणं कम्माणं निर्गायणहुए ठामि
काउस्सगं ॥

अन्नत्थ ऊसासिएणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं,
उड्हुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाप, सुहुमेहिं अंग-
संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिड्हिसंचालेहिं;
एवमाइएहिं, आगारोहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुञ्ज मे काउ-
स्सगो. जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(ऐसा कहकर एक लोगस्सका काउस्सग करना न आता हो तो चार
नवकार गिनने. फिर प्रनट लोगस्स कहना. वह नीचे मुताविक.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थये जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउचीसं पि केवली ॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥
सुविहिं च पुफ्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संर्ति च वंदामि ॥
कुँथुं अरं च मर्लि, वंदे सुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिड्हनेमि, पासं तह चद्धमाणं च ॥
एवं मए अभियुआः विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउचीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे प्रसीयंतु ॥
कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-वोहिलाभं समाहिवरसुत्तमं दिंतु ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पथासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥
इच्छं इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावाणिज्जाए निसीहि-

आए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं “इच्छं”

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं ? “इच्छं” । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक ठाउं ? “इच्छं” ।

(ऐसा कहकर एक नवकार गिनना फिर)

इच्छकारि भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड़कर करेमिभंते उचरना वह नीचे मुताविक

करेमि भंते सामाइयं, सावजं जोगं पञ्चखामि, जावनियमं पञ्जुवासामि, दुविहुं तिविहेणं मणेणं वायाए कायणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामिं गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे संदिसाहुं ? “इच्छं ।” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे ठाउं ? “इच्छं.” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, सज्जाय संदिसाहुं ? “इच्छं” । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, सज्जाय करुं ? “इच्छं” ।

ऐसा कहके दोनों हाथ जोड़कर तीन नवकार गिनने.

(इति सामायिक लेनेका विधि.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए
मतथएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ति
पडिलेहुं ? “ इच्छुं ”

ऐसा कहकर सुहृत्ति पडिलेहनी फिर खमासमन देने.

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं
खमाणिज्ञो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे द्विवसो वहु
कंतो जन्ता भे जवणिज्ञं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं
वइक्षमं आवसिआए पाडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए
आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए
वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए
सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए
आसायणाए जो मे अद्वारो कओ तस्स खमासमणो पाडिक्कमा-
मि निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए अणु-
जाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमाणिज्ञो
भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे द्विवसो वहुकंनो
जन्ता भे जवणिज्ञं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्षमं
पाडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्न-
यराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्क-
डाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए
सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो
भे अद्वारो कओ तस्स खमासमणो पाडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥ २ ॥

(फिर पञ्चक्खाण करना.)

चउविहारका पञ्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पञ्चक्खाइ चउविहं पि आहारं असणं पाणं
खाइमं साइमं अन्नथणाभोगेण सहस्रागारेणं महत्तरागारेणं
सव्वसमाहिवत्तिथागारेणं बोसिरे ॥

पाणहारका पच्चकखाण ।

पाणहारदेवसचरिमं पच्चकखाइ अन्नतथणाभोगेणं सह-
स्सागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ।
तिविहारका पच्चकखाण ।

दिवसचरिमं पच्चकखाइ तिविहं पि आहारं असणं खाइमं
अन्नतथणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमा-
हिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥

दुविहारका पच्चकखाण

दिवसचरिमं पच्चकखाइ दुविहं पि आहारं असणं खाइमं
अन्नतथणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमा-
हिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥

(एकासण वा बेआसण किया हो तो भी पाणहारका पच्चकखाण करना)
(इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? “इच्छं” ऐसा
कहकर चैत्यवंदन करना)

चैत्यवंदन

माहासुदि आठमने दिने, विजयासुत जायो ।

तिम फागण सुदि आठमे, संभव चवौ आयो ॥ १ ॥

चइतर वदनी आठमे, जन्म्या रुषभजिणंद ।

दिक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥

भाधवसुदि आठम दिने, आठा कर्म कर्या दूर ।

अभिनंदन चोथा प्रभु, पास्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥

एही ज आठम ऊजली, जन्म्या सुमति जिणंद ।

आठ जाति कलशे करी, नवराखे सुर इंद ॥ ४ ॥

जन्म्या जेठ वादि आठमे, मुनिसुवतस्वामी ।

नेम आषाढसुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥

आवणवदनी आठमे, नमि जन्म्या जगभाण ।

तिम श्रावणसुदि आठमे, पासजिन निरवाण ॥ ६ ॥

भाद्रवा वदि आठम दिने, चविया स्वामी सुपास ।
 जिन उत्तम पद पद्धने, सेव्यार्थी शिववास ॥ ७ ॥
 जं किंचि नाम तित्थं, सगे पायालि माणुसे लोए ।
 जाइं जिणविवाइं, ताइं सव्वाइं बंदामि ॥ ८ ॥
 नमु त्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ ९ ॥
 आइगराणं, तित्थयराणं सर्यसंबुद्धाणं ॥ १० ॥
 पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरियाणं,
 पुरिसवरजंग्रहत्थीणं ॥ ११ ॥
 लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं,
 लोगपईचाणं, लोगपज्जोयगराणं ॥ १२ ॥
 अभयद्याणं, चक्रबुद्याणं, मग्नद्याणं,
 सरणद्याणं, घोहिद्याणं ॥ १३ ॥
 धम्मद्याणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
 धम्मसारहीणं, धम्मवरचाडरंतचक्रवट्टीणं ॥ १४ ॥
 अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, घियटुछउमाणं ॥ १५ ॥
 जिणाणं, जान्याणं, तिन्नाणं, तार्याणं,
 बुद्धाणं घोहियाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ १६ ॥
 सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुयमणंत-
 मक्षवयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
 संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ १७ ॥
 जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥
 संपइ अ बट्टमाणा, सव्वे तिचिहेण बंदामि ॥ १८ ॥

अरिहंतचेइआणं करोमि काउस्सग्गं, बंदणवत्तिआए
 पूयणवत्तिआए सकारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए घोहिला-
 भवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्ब्रह्म भेदाए धीइए
 धारणाए अणुपेहाए बइडमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्य ऊसीसिएणं नीसीसिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं
 उड्हुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेर्हि
 अंगसंचालेहिं सुहुमेर्हि खेलसंचालेहिं सुहुमेर्हि दिहुसंचालेहिं

एवमाइषहिं आगारोहिं अभग्गो अविराहिथो हुज्ज मे काउस्सग्गो
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्तारेणं न पारेमि ताव कार्यं
ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं घोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करना. फिर काउस्सग्ग पारकर प्रगट
स्तुति कहनी, वह स्तुति नीचे मुजव.)

नमोऽहंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः
कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतिं तथो नेमिजिणं मुणिंदं
पासं पयासं सुगुणिकठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥

(ऐसे स्तुति बहकर फिर प्रगट लोगस्स कहना. वह लोगस्स
नीचे मुताविक.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे

अरिहंते कित्तिइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥

उसभमाजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमईं च ।

पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

सुविहिं च पुण्डदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।

विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥

कुंथुं अरं च मर्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।

वंदामि रिद्धनोर्मि, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।

चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।

आरुग-वेहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहियं पयासयरा ।

सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सब्बलोए अरिहंतचेइआणं करोमि काउस्सग्गं वंदणवाच्च-
आए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए घोहि-
लाभवत्तिआए निरुवस्सग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए घिइए
धारणाए अणुपेहाए वद्धुमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्य ऊससिएणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं

उहुएणं वायनिसग्गेणं भमलिष पित्तमुच्छाए सुहुमेर्हि अंगसं-
चालेर्हि सुहुमेर्हि खेलसंचालेर्हि सुहुमेर्हि दिहिसंचालेर्हि एव-
भाइषर्हि आगरोर्हि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं
ठाणेणं भोणेणं झाणेणं अप्पाणं बोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग करना फिर स्तुति कहनी वह नीचे मुजब)
अपारसंसारसमुद्धारं, पत्ता सिवं दितु सुइक्षसारं ।
सत्त्वे जिणिदा, सुरर्विद्वंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवृहै धायइसंडे अ जंयुदीवे अ ।

भरहेरवयविदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥

तमतिमिरपडलविद्वंसणस्स स्त्ररगणनर्दिमहियस्स ।

सीमाधरस्स वंदे पफ्फोडिअभोहजालस्स ॥ २ ॥

जाइजरामरणसोगपणासणस्स

कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स ।

को देवदाणवनर्दिगणच्चियस्स

धम्मस्स सारसुवलभ्म करे पमायं ॥ ३ ॥

सिद्धे भो पयओ णमो जिणमये नंदि सया संजमे

देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सव्युअभावच्चिए ।

लोगो जत्य पहडिओ जगमिणं तेलुक्कमचासुरं

धम्मो वहुज सासङ्गो विजयड धमुत्तरं वहुज ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवंतो करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए
पूवशवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहि-
लाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्गाए मेहाए धिइप
धारणाए अणुपेहाए वहुमार्णीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नथ ऊससिएणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
यणं उहुएणं वायनिसग्गेणं भमलिष पित्तमुच्छाए सुहुमेर्हि
अंगसंचालेर्हि सुहुमेर्हि खेलसंचालेर्हि सुहुमेर्हि दिहिसंचालेर्हि
एवभाइषर्हि आगरोर्हि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्स-
ग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव

कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर एक नवकारका काउस्सग्ग करके स्तुति कहनी)

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुचाइदप्पं ।

मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ।

लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वासिद्धाणं ॥ १ ॥

जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।

तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥

इक्षो वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्रस वद्धमाणस्स ।

संसारसागराओ, तारेऽ नरं व नारि वा ॥ ३ ॥

उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ।

तं धम्मचक्रवर्द्धि, अरिङ्गेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥

चत्तारि अडु दस दो य, धंदिया जिणवरा चउवीसं ।

परमष्टुनिहिथट्टा, सिद्धा सिर्द्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्माहिष्टिसमाहिगराणं
करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नतथ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं,
उडुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिहिसं-
चालेहिं, एवमाइर्यहिं, आगरोहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे-
काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्करेणं न पारेमि
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करना फिर काउस्सग्ग पारकर 'नमोऽहृत-
सिद्धाचायोपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कहके स्तुति कहनी वह नीचे मुजब.)

कुंदिंदुगोक्षवीरतुसारवन्ना, सरोजहस्ता कमले निसन्ना ।

वापसिरी पुत्थयवग्गहस्ता, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥ ४ ॥

नमु त्यु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥

आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥

पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरियाणं,

पुरिसवरगंधहत्थीण ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं,
लोगपूर्वाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
अभयदयाणं, चक्रखुदयाणं, मगगदयाणं,
सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्रघटीणं ॥ ६ ॥
अपपडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअहृछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
युद्धाणं बोहिआणं, मुक्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सञ्चन्नूणं, सञ्चदरिसीणं, सिवमयलमरुयमणं-
मक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ।
ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सांति पागए काले ॥
संपह अ बहुमाणा, सञ्चे तिविहेण बंदामि ॥ १० ॥

(फिर)

इच्छामि खमासमणो बंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मतथएण बंदामि । भगवान् हं ।
इच्छामि खमासमणो बंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मतथएण बंदामि । आचार्यहं ।
इच्छामि खमासमणो बंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मतथएण बंदामि । उपाध्यायहं ।
इच्छामि खमासमणो बंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मतथएण बंदामि । सर्वसाधुहं ।
सर्व श्रावकने बांदु ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिय पडिक्रमणे ठाउं ?
इच्छं, सञ्चस्स वि-देवसिय दुर्चितिय दुष्मासिअ दुचिष्टिअ
इच्छं तस्त मिच्छामि दुक्कडं ।

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पञ्चक्खामि जाव त्रियमं

पञ्जुवासामि दुविहं तिविहेण मणेण वायाए कायणं न करेमि
न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउसगं जो मे देवसिओ अइआरो कओ
काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकर-
णिज्जो दुज्ज्ञाओ दुविचितिओ अणायारो अणिच्छयव्वो
असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुप सामाइए
तिणहं शुच्चीणं चउणहं कसायाणं पंचणहमणुव्वयाणं तिणहं
शुणव्वयाणं चउणहं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावग-
धम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छत्तकरणेणं विसोहीकरणेणं
विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्धायणद्वाए ठामि
काउस्सगं ।

अन्नत्य ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
एणं उड्हुएणं वायनिसगेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहिसंचा-
लेहिं एवमाइपर्हिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज मे
काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(आठ गाथाका काउस्सग्ग करना न आवे तो आठ नवकार गिनने
काउस्सगकी आठ गाथा नीचे मुजब.)

नाणंमि दंसणांमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि ।
आथरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥
काले विणए वहुमाणे, उवहाणे तह य निन्हवणे
वंजण अथ तदुभय, अड्हविहो नाणमायारो ॥ २ ॥
निस्संकिअ निकंखिअ निवितिगिच्छा अमूढादिही अ ।
उवहूह थिरीकरणे वच्छल्लापभावणे अटु ॥ ३ ॥
पणिहाण जोगजुत्तो पंचहिं समिइहिं तिहिं शुच्चिहिं ।
एस चरित्तायारो, अड्हविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥

वारहावदामं तचे, सन्भितरवाहिरे कुसलंदिष्टे ।
 आगिलाइ अणजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥
 अणसणमूणोअरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ।
 कायकिलेसो संलीणया य बज्ज्ञो तचो होई ॥ ६ ॥
 पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्ज्ञाओ ।
 झाणं उस्सगगो चि अ, अविभतरओ तचो होई ॥ ७ ॥
 अणगूहिअ वलविरिओ परिक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ।
 जुंजइ अ जहाथामं नायव्वो धीरियायारो ॥ ८ ॥
 (फिर काउस्सग पारकर प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे मुजव.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्यथरे जिणे ।
 अरिहंते कित्तइसं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
 उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिण्दणं च सुमइं च ।
 पउमण्हं सुपासं, जिणं च चंदपण्हं वंदे ॥ २ ॥
 सुविहिं च पुष्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।
 विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
 कुंथुं थरं च मर्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
 वंदामि रिठ्ठनोमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
 एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
 चउवीसं पि जिणवरा, तिथयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
 कित्तिय वंदिय महिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
 आरुगग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
 चंदेसु निम्मलयरा, आइच्छेसु अहियं पयासयरा ।
 सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥
 (फिर तीजा आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहनी, फिर दो खमासमण देने.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिथाए
 अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकार्यं कायसफासं खम-
 णिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइ-
 कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामोमि खमासमणो देवसिअं

वद्वक्तमं आवस्तिवाए पदिक्तमामि खमासमणाणं देवसिआ-
ए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मणदुक्त-
डाए वयदुक्तडाए कायदुक्तडाए कोहाए माणाए माणाए
लोभाए सब्बकालिआए सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधम्माइक्त-
मणाए आसायणाए जो मे अइकारो कओ तस्स रवमासमणो
पदिक्तमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए निर्सीहिआए
अणुजाणह मे मिउगगह निसीहि अहोकायं कायसंफासं खम-
णिज्जो भे किलामो अण्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वद्व-
क्तंतो जत्ता भे जवणिजं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं
वद्वक्तमं आवस्तिवाए पदिक्तमामि खमासमणाणं देवसि-
आए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मण-
दुक्तडाए वयदुक्तडाए कायदुक्तडाए कोहाए माणाए मायाए
लोभाए सब्बकालिआए जो मे अइकारो कओ तस्स खमा-
समणो पदिक्तमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

फिर खडा होकर

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं? “इच्छं”!
आलोएमि जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ
माणसिथो उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्ज्ञाओ
दुविविचितिथो अणायारो अणिच्छिअब्बो असावगपाउग्गो
नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिणहं गुर्तीणं चउ-
णहं कसायाणं पचण्हमणुव्ययाणं तिणहं गुणव्ययाणं चउणहं
सिक्खाव्ययाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं
विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्तडं ॥

(फिर हाथ जोडके)

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख
तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति-
काय, चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय, वे लाख वे इंद्रिय,

वे लाख तेइंद्रिय, वे लाख चउरीन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पचैंद्रिय, चौद लाख मनुष्य एवंकारे चौरासी लाख जीवायोनीमेंसे मेरे जीवने जो कोई जीव हनन किया हो, कराया हो, करनेवाले को भला जाना होय वह सब मन बचन काया कर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

पहले प्राणातिपात, दूजे मृषावाद, तीजे अश्चादान, चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छठे ऋष, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दसमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्यात्यान, चौदमे पैशुन्य, पंदरमे राति अरति, सोलमे पर परिवाद, सत्तरमे मायासृषावाद, अठारमे मिथ्यात्वशल्य इन अठारह पापस्थानोंमें से मेरे जीवने जो कोई पापस्थान सेवन किया हो, कराया हो, करनेको भला जाना हो वह सब मन बचन कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

सब्बस्सचि देवसिय दुच्छिन्तिय दुव्भासिय दुच्छिष्ठिय
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥

(फिर दाहिणा ढींचण खडा (वीरासन) करके नीचे मुजव कहना)

नमो आरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं ।

नमो उवज्ज्वायाणं नमो लोएं सब्बसाहूणं एसो पंच

नमुक्कारो सब्बपावप्पणासणो मंगलाणं च सब्बेसि

पढ़मं हवइ मंगलं ॥

करोमि मंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पञ्चक्खामि, जावनि-
यमं पञ्जुवासामि, दुविहं तिवीहेणं मणेण वायाए काएणं नक-
रोमि न कारवेमि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिडं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ
चाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उभग्गो अकप्पो अकरणिङ्गो
दुज्ज्हाओ दुविवीचितिओ अणायारो अणिच्छअब्बो असा-
घगपाउंगो नाणे दंसणे चरित्ताचारित्ते सुए सामाइय तिणहं

गुरुतीर्णं चउणहं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिणहं गुण-
व्वयाणं चउणहं सिक्खाव्वयाणं वारसव्विहस्स सावग-
धम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदिच्चु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिलं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥
जो मे व्याइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
सुहुमो अ वायरो घा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥
दुविहे परिगगहंमि, सावज्जे वहुविहे अ आरंभे ।
करवणे अ करणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ३ ॥
जं वद्वर्मिदिपाहं, चउर्हं कसाएहं अप्पसत्थेहं ।
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥
आगमणे निगमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ५ ॥
संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।
सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ६ ॥
छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
अत्तडा य परडा, उभयडा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमहआरे ।
सिक्खाणं च चउणहं, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ८ ॥
पढमे अणुव्वयंमि, शूलगपाणाइवायविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ९ ॥
वह वंध छवि च्छेष, अइभारे भन्तपाणवुच्छेष ।
पढमवयस्स इयारे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १० ॥
वीए अणुव्वयंमि, परिशूलगअलियवयणविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ११ ॥
सहंसा रहस्स दारे, मोसुघएसे अ कूडलेहे अ ।
घीयवयस्स अइयारे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १२ ॥
तइए अणुव्वयंमि, शूलगपरदव्वहरणविरईओ ।
आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १३ ॥

- तोनाहडप्पओगे, तप्पडिरुवे चिरुद्गगमणे अः।
 कूडतुलकूडमाणे, पडिकमे देवसिअं सव्वं ॥१४॥
 चउत्थं अणुव्वयंमि, तिच्यं प्रदारगमणविरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थ्ये, इथ्य पमायप्पसंगोणं ॥१५॥
 अपरिगंहिओ इत्तर, अणंग विवाहे तिव्व अणुरागे ।
 चउत्थव्वयसंस अइयारे, पडिकमे देवसिअं सव्वं ॥१६॥
 इज्जो अणुव्वए पंचमांमि, आयरियमप्पसत्थ्यंमि ।
 परिमाणपरिच्छेष, इथ्य पमायप्पसंगोणं ॥१७॥
 धण धन्न खित्तवर्त्यु, रूप्प सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे ।
 दुपए चउप्पयंमि, पडिकमे देवसिअं सव्वं ॥१८॥
 गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उहूढं अहे अ तिरिञ्च ।
 शुद्धिद सइ अंतरद्वा, पढमांमि गुणव्वए निंदे ॥१९॥
 मज्जांमि अ मैसांमि अ, पुष्के अ फले अ गंधमल्ले अ ।
 उवभोगे परिमोगे, वीर्यांमि गुणव्वए निंदे ॥२०॥
 सचित्ते पडिवद्वे, आण्योल दुपोलिअंच आहारे ।
 तुच्छोसहि भक्त्यणया, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥२१॥
 इंगाली वण-साडी भाडी, फोडी सुवज्जाए कम्मं ।
 वाणिजं चेवदंत लक्खरसकेसवीस वीसयं ॥२२॥
 एवं खुजंत पिलुण, कम्मं निलुंछणंच दवदाणं ।
 सरदहत लायसोसं, असइ पोसंच वज्जिजा ॥२३॥
 सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कहे मंत मूल भेसञ्चे ।
 दिन्ने दवा विएवा, पडिकमे देसिअं सव्वं २४
 न्हाणुव्वण वन्नग, विले-वणे सद्वरस गंधे ।
 वत्थासण आभरणे, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥२५॥
 कंदप्पे कुक्कडे, मोहरि अहिगरण भोगावशित्ते ।
 दंडंसि अणव्वाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥२६॥
 तिविहे दुपपणिहाणे, अणव्वाणे तहासद्विहुणे ।
 सामाइअ चितह कए, पढमे सिक्कवायए निंदे ॥२७॥
 आणवणे प्रेसवणे, सदे रुक्के अ पुण्यलव्वेचे ।

देसावगासितंभि, वीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥
 संथारुच्चारविंही, पमाए तहचेव भोयणा भोए ।
 पौसंह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥
 सच्चित्ते निविक्षवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव ।
 कालाइकमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥
 सुहिएसु अ डुहिएसु अ, जामे असंजएसु अणुपंका ।
 रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गिरहामि ॥३१॥
 साहुसु संविभागो, न कओ तवचरण करण जुत्तेसु ।
 संते फासुयदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥
 इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसप्पओगे ।
 पंचविहो अइआरो, मा मज्जा हुज्ज मरणंते ॥३३॥
 काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
 मणसा माणसिअस्स, सब्बस वयाइयारस्से ॥३४॥
 घंदणवयसिक्खागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ।
 गुत्तीसु अ समीइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥
 सम्मदिहीजीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि ।
 अप्पोसि होई वंधो, जेण न निद्वंधसं कुणइ ॥३६॥
 तं पि हु सपडिक्कमण, सप्परिआयं सउत्तरगुणं च ।
 खिप्पं उवसामेइ, वाहि व्व सुसिक्खओ विज्जो ॥३७॥
 जहा विसं कुहगयं, मंतमूलविसारया ।
 विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥३८॥
 एवं अट्टविहं कम्मं, रागदोस समज्जिअं ।
 आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥
 कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअं गुरुसगासे ।
 होइ अहरेग लहुओ, ओहरिअ भरुव भारवहो ॥४०॥
 आवस्सएण एण, सावओ जहवि बहुरओ होइ ॥
 दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥
 आलोअणा बहुविहा, नय संभरिअा पडिक्कमणकाले ।

मूलगुण उत्तरगुणो, तं निदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ :
 तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स ॥
 अभुट्ठिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए ।
 तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥
 जावंति चेइआइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू ॥ ४५ ॥
 चिर संचिय पाव पणासणीए, भवसय सहस्स महणीए
 चउवीसि जिण विणिगगय कहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥
 भम मंगलभरिहता, सिद्धा साहू सुधं च धम्मो थ ।
 सम्महिडीदेवा, दितु समाहिं च वोहिं च ॥ ४७ ॥
 पडिसिद्धाण करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्रमण ।
 असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरुवणाए अ ॥ ४८ ॥
 खामेमि सब्ब जीवि, सब्बे जीवा खेमंतु मे ॥
 मित्ति मे सब्बभूएसु, वेरं मज्जा न केणइ ॥ ४९ ॥
 एवमहं आलोइअ, निंदिय गरहिय दुगंच्छिअं सम्म ।
 तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥

(किर दो खमासमण देने)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए
 अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं
 खमाणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताण वहुसुभेण भे दिवसो वइ-
 कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं
 वइक्रमं धावसिआए पडिक्रमामि खमासमणाण देवसिआए
 आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए भणदुकडाए
 वयदुकडाए कायदुकडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए
 सब्बकालिआए सब्बमिच्छोवशाराए सब्बधम्माइक्रमणाए
 आसायणाए जोमे अहआरो कडो तस्स खमासमणो पडिक्रमा-
 मि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणु-
 जाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमाणिज्जो
 भे किलामो अप्पकिलंताण वहुसुभेण भे दिवसो वइकंतो

जन्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्रमं पडिक्रमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्रडाए वयदुक्रडाए कायदुक्रडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयराए सव्वधमाइक्रमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्रमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥२॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अध्युष्टिओमि अधिभन्तर देवसिअं खामेडं इच्छुं खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावचे भालावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्ज्व विणय परिहीणं सुहुमं वा धायरं वा तुम्हे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्रडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकार्यं कायसफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइकंतो जन्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्रमं आवसिथाए पडिक्रमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्रडाए वयदुक्रडाए कायदुक्रडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयराए सव्वधमाइक्रमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्रमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहोकार्यं कायसफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइकंतो जन्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्रमं पडिक्रमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्रडाए वयदुक्रडाए

कायदुकडाए कौहाए माणाए मायाए लोभाए सब्बकालिआए
सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो
मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निदामि
गरिहामि अप्पाण घोसिरामि ॥

आयरिय उवज्ञाए, सीसे साहम्मिए कुल गणअ,
जे मे केइ कसाया, सब्बे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सब्बस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिकारिय सीसे ।
सब्ब खमावइत्ता, खमामि सब्बस्स अहर्यंपि ॥ २ ॥
सब्बस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहीथ नियाचित्तो ।
सब्ब खमावइत्ता, खमामि सब्बस्स अहर्यंपि ॥ ३ ॥

करोमि भेते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव-
नियमं पञ्चुवासामि दुविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न
करोमि न कारवेमि तस्स भेते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि
अप्पाण घोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सगं जो मे देवसिथो अइआरो कओ
काइओ वाइओ माणसिथो उस्सुत्तो उम्मगो अकप्पो अकर-
णिल्लो दुज्ज्ञाओ दुविचितिओ अणायारो अणिच्छयवो
असावगपाउगो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइय
तिष्ठं गुत्तीणं चउण्ठं कसायाणं पंचष्टमणुद्वयाणं तिष्ठं
मुणव्वयाणं चउण्ठं सिवखावयाणं वारसविहस्स सावग-
धम्मरस जं खंडिअं जं विराहिअं तरस मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेण पायच्छुत्तकरणेण विसोहीकरणेण
विस्तीकरणेण पावाणं कम्माणं निग्धायणटाए ठामि
काउस्सगं ।

अन्नत्य उससिएणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
एणं उहुएणं वायनिसगेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहिसंचा-
लेहिं एवमाइएहिं औंगारेहिं अभग्गो अविराहिथो हुज्ज मे

काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्तारेण न पारेमि
ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्सका काउस्सग्ग करना. न आव तो आठ नवकाठ गिनने.
फिर प्रगट लोगस्स कहना. वह नीचे मुजब.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥
उसभमजिथं च वंदे, संभवमभिणदणं च सुमईं च ।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥
सुविहिं च पुष्फदंतं, सीअल सिंजंस वासुपुज्जं च ।
विमलमण्ट च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥
कुंथुं अरं च माल्हि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिडुनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरो मे पसीयंतु ॥
कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिंद्धा ।
आरुग्ग-वोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिन्तु ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेषु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिंद्धा सिंद्धि मम दिसंतु ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, चंदणवच्चिआए
पूअणवच्चिआए सक्कारवच्चिआए सम्माणवच्चिआए वोहिला-
भवच्चिआए निरुवस्सग्गवच्चिआए सद्धाए मेहाए धीइए
धारणाए अणुप्पेहाए वद्धमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ उससियणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं
उडुएणं वायनेसागेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेर्हि
अंगसंचालेहिं सुहुमेर्हि खेलसंचालेहिं सुहुमेर्हि दिड्हिसंचालेहिं
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्तारेण न पारेमि ताव कायं
ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउसग्ग करना, न आवे तो चार नवकार गिन
फिर पुक्खरगरदीवहु कहना.)

पुक्खरवरदीवहु धायइस्संडे अ जंदुदीवे अ ।

भरहेरवयविदेहे धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥

तमतिभिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स ।

सीमाधरस्स वंदे पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥

जाइजरामरणसोगपणासणस्स

कह्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स ।

को देवदाणवनरिंदगणच्छियस्स

धम्मस्स सारमुवलब्ध करे पमाय ॥ ३ ॥

सिद्धे भो पयओ णमो जिणमये नंदी सया संजमे
देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सधूधभावच्छिए ।

लोगो जथ्य पढ़िहुओ जगमिणं तेलुकमच्छासुरं

धम्मो घट्ट सासओ विजयओ धम्मुत्तरं नहूउ ॥ ४ ॥

सुखस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए
यूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहि-
लाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सञ्चाए मेहाए धिइए
धारणाए अणुपेहाए वहुमाणीए डामि काउस्सग्गं ।

अन्नतथ उसासिएणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
षणं उहुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुव्वाए सुहुमेर्हि
अंगसंचालेहिं सुहुमेर्हि खेलसंचालेहिं सुहुमेर्हि दिहिसंचालेहिं
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्स-
ग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न परेमि ताव-
कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं बोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आवे तो चार नवकार गिनने.
फिर सिद्धाणं बुद्धाणं काउस्सग्ग पारकर कहना.)

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ।

लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ ५ ॥

जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।

तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
 इक्षो वि नमुक्तारो, जिणवरवसहरस वद्धमाणस्स।
 संसारसागराओ, तरेह नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥
 उज्जितसेलसिहरे, दिवखा नाणं निसीहिआ जस्स।
 तं धमचक्कवर्द्धि, अरिहुनेमि नमंसामि ॥ ४ ॥
 चक्षारि अहु दस दो व, धंदिया जिणवरा चउवीसं +
 परमहुनिहिअहु, सिद्धा सिर्द्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥
 सुअदेवआए करोमि काउसगं ।

अन्नथ उसासिएणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं,
 उहुएणं वायनिसग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं
 अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिहिसं-
 चालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे
 काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्तारेणं न पारोमि
 ताव कार्य ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं घोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके नमोऽहन्त्सिद्धात्मायोपात्माय
 सर्वसाधुभ्यः ऐसा कहकर नीचेकी स्तुति बोलनी)

सुयदेवया भगवइ, नाणावरणीय कम्मसंघायं ।

तेर्सि खवेउ सथयं, जेसि सुयसायरे भन्ती ॥ १ ॥

(स्त्रियोको कमलदलकी स्तुति कहनी चाहिए वह नीचे मुताविक.)

कमलदलविषुलनयना, कमलमुखी कमलसमगौरी ।

कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेव ता सिर्द्धि ॥ १ ॥

खित्तदेवताए करोमि काउस्सग्गं ।

अन्नथ उसासिएणं निसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
 एणं उहुएणं वायनिसग्गेण भमलिए पित्तमुच्छाए सुहु-
 मेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहि-
 संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ
 हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्तारेणं न
 पारोमि तावकार्य ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं घोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग करना काउस्सग पारके नमोऽर्हत्
सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति बोलनी)

जीसे खित्ते साहू, दंसणनाणेहि चरणसहिष्ठिं ।

साहंति मुक्त्वमग्म, सा देवी हरउ दुरिआइ ॥ ५ ॥

(लियोंको भुवनदेवताकी स्तुति कहनी वह नीचे मुताविकः)

यस्या क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ।

सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयाच्चः सुखदायिनी ॥ ६ ॥

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आग्यरिथाणं नमो उव-
ज्ञायाणं नमो लोए सब्बसाहूणं । एसो पंचमुक्तारो सब्बपाव-
प्पणासणो भंगलाणं च सब्बोर्सि पढमं हवहू मंगलं ॥

(फिर छटा आवश्यककी मुहपत्ति पडिलेहनी फिर दो खमासमण देने)

इच्छामि खमासमणो वंदिदं जावणिज्जाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउग्गहै निसीहि अहोकायं कायसंफासं
खमाणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो
वइकंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देव-
सिअं वइकम्मं आवसिआए पडिकमामि खमासमणाणं देव-
सिआए आसायणाए तिर्त्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मण-
दुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए
लोभाए सब्बकालिआए सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधम्माइक-
मणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो
पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिदं जावणिज्जाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउग्गहै निसीहि अहोकायं कायसंकासं खम-
णिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइ-
कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं
वइकम्मं पडिकमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए
तिर्त्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए
कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सब्बकालिआए
सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधम्माइकमणाए आसायणाए जो

मे अहआरो क्रओ तस्स खमासमणो पडिकमामि निदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ २ ॥

सामायिक, चउवीसत्थो, वांदणां, पडिकमणुं, काउस्सभा,
पचनखाण किया है जी ।

इच्छामो अणुसाहिं नमो खमासमणाणं

नमोऽहंत् सिद्धावायेषाभ्यायसर्वसाधुम्यः

(पुरुषोंको नमोऽस्तुवर्द्धमानाय कहना चाहिए, सो नीचे मुजव.)
नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ।

तज्जयावासमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥

येपां विकचारविंदराज्या,

जायःक्रम कमलावलि दधत्या:

सदृशौरिति संगतं प्रशस्यं,

कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥

कपायतापार्दितजंतुनिवृत्तिं,

करोति यो जैन मुखांबुदोद्गतः स शुक्रमासोदभववृष्टिसन्निभो,
दधातु तुष्टि मयि । विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥

(क्लियोंको संसारदावाकी तीन सुति कहनी चाहिए.)

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहध्यलीहरणे समीरं ।

मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥

भावावनामसुरदानवम/नवेन,

चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ।

संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि,

कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥

वोथागार्थं सुपदपद्वीनीरपुराभिरामं,

जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहं ।

चूलावेलं मुरुगममणीसंकुलं दूरपारं,

सारं वीरागमजलनिधि सादरं साधुसेवे ॥ ३ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥

आहगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥

पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुँडरियाणं,
 पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
 लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं,
 लोगपृष्ठवाणं, लोगपञ्जोअगराणं ॥ ४ ॥
 अभयदयाणं, चकखुदयाणं, मग्गदयाणं,
 सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
 धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
 धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्खटीणं ॥ ६ ॥
 अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअहृष्टउमाणं ॥ ७ ॥
 जिणाणं, जावयाणं, तिक्काणं तारयाणं,
 बुद्धाणं बोहिआणं, मुक्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
 सब्बन्नूणं, सब्बदरिसीणं, सिवमयलमरुयमणंत-
 मक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ।
 ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥
 जे अ अर्द्धआ सिद्धा, जे अ भविस्सांति णागए काले ॥
 संपइ अ बट्टमाणा, सब्बे तिचिहेण बंदामि ॥ १० ॥
 इच्छामि खमासमणो बंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए
 मरथएण बंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् स्तवन भणुं
 “इच्छुं” नमोऽर्हतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(स्तवन)

मारुं मन मोहाशुरे सिद्धाच्छ्लेरे,
 मारुं मन मोहाशुरे श्री विमला चल्लेरे,
 देखीने हरखीत होय ।
 विधिसुं कीजेरे यावा एहनीरे,
 भव भवना दुःख जाव मारुं० ॥ १ ॥
 पंचम आरेरे पावन कारणेरे,
 ए समो तीरथ न कोय ।
 मोटो ते महिमारे जगम एहनोरे ।
 आ भरते अहिआं जोय । मारुं० ॥ २ ॥

ए गिरि आव्यारे जिनवर गणधरारे,
सिद्ध्या साधु अनंत ।
कठण करम पण ए गिरि फरसतारे,
हैवे करमनी सांत । मारुं० ॥ ३ ॥
जैन धर्म ते साचो जाणीनेरे,
मानवंतीरथए स्तंभ । सुरनरकिन्नरनृपविद्याधरारे,
करता हो नाटारंभ । मारुं० ॥ ४ ॥
धनधन दहाडेरे धन वेळाघडेरे,
धरिये हृदय मोङ्गार ।
ज्ञानविमलं गुणएहना घणारे,
कहंता न आवेरे पार । मारुं० ॥ ५ ॥
वरकनक शंख विहृम, मरकत घन सज्जिभं विगतमोहं ।
सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं धंदे ॥ ६ ॥
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवान्‌हं ।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्यहं ।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाख्यायहं ।
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुहं ।

(फिर आसनपर दाहिणाहाथ रखके अङ्गाङ्गेषु कहना वह नीचे मुजव.)
अहृदजेषु दीवसमुद्देषु, पञ्चरससु कम्भूमीषु, जावंत-
केवि साहृ रयहरणमुच्छपडिगहधरा पंचमहव्यधरा अहृ-
रससहस्र सीलांगधरा, अक्षयायारचरित्ता, ते सब्बे
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिभ पायच्छित्त विशो-
धनार्थं करोमि काउस्सगं “इच्छं” देवसिभ पायच्छित्त
विशोधनार्थं करोमि काउस्सगं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ
एणं उहुडुएणं वायनिसगरेण भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेर्हि
अंगसंचालेहि सुहुमेर्हि खेलसंचालेहि सुहुमेर्हि दिहिसंचा-
लेहि एवमाइएहि आगरोहि अभगगो अविराहिओ हुज मे
काउस्सगो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि
तावकार्य ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

चार लोगस्सका काउस्सग करना न आवे तो सोले नवकार गिनना,
फिर प्रगट लोगस्स कहना. वह नीचे मुतांविक.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्ययरे जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥

उसभमजिभं च वंदे, संभवमभिण्डणं च सुमद्दं च ।

पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥

सुविहिं च पुष्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।

विमलमणंतं च जिणं, धम्मं साँतं च वंदामि ॥

कुथुं अरं च मर्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।

वंदामि रिङ्गेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥

एवं मए अभियुआ, विहुयरयमला पहोणजरमरणा ।

चउवीसंपि जिणवरा, तित्ययरा मे पसीयंतु ॥

किचिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।

आरुग-वोहिलाभं समाहिवरमुक्तमं दिंतु ॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासंवरा ।

सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिर्द्धि मम दिसंतु ॥

इच्छामि खमाणमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय संदिसाहुं “इच्छं”

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय करुं ? “इच्छं”

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो झायरिभाणं, नमो

उवज्ज्ञायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्तारो,
सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं॥

॥ सज्ज्ञाय ॥

पवयण देवी चित्त धरीजी, विनय वखाणीश सार ।
जंयूने पूछे कहोजी, श्रीसोहम गणधार ॥ १ ॥
भविकजन विनय वहो सुखकार ॥ ए आंकणी ।
पहिले अध्ययने कहोजी, उत्तराध्ययन मक्षार ।
सघला गुणमां मूलगोजी, जे जिनशासनसार । भविकजन २
नाण विनयथी पामीयेजी, नाणे दरिसण शुद्ध ।
चारित्र दरिसणथी हुवेजी, चारित्रथी पुण सिद्धि ॥ भविं० ३
मुरुनी आण सदा धरेजी, जाणे मुरुनोरे भाव ।
विनयवंत गुणरागियोजी, ते मुनि सरलस्वभाव ॥ भविं० ४॥
कणनुं कुंहुं परिहरीजी, विष्णुशुं मनराग ।
गुरुद्रोही ते जाणवाजी, सूधर ओपमा लाग ॥ भविं० ॥५॥
कोह्या काननी कूतरीजी, ठाम न पामीरे जेम ।
श्रीलहीण अकहागराजी, आदर न लहे तेम ॥ भविं० ॥६ ॥
चंद्र तणी परे उजलीजी, कीर्ति तेह लहंत ।
विषय कपाय जीती करीजी, जे नर विनय वहंत ॥ भविं० ॥७॥
विजयदेव मुरु पाटवीजी, श्रीविजयसिंह सूरिद ।
शिष्य उदयवाचक भणंजी, विनय सयल सुखकंद ॥ भविं० ॥८॥

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो
उवज्ज्ञायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं एसो पंच नमुक्तारो सव्व
पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसि पढमं हवइ मंगलं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिं जापणिज्जाए निर्साहिआए
अत्थएण चंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् दुषखव्य
क्रमव्यय निमित्तं काउरसग्ग करुं ? “इच्छं” दुषखव्य
क्रमव्यय निमित्तं करेमि काउरसग्गं ।

अन्नत्य उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
एणं उड्हुपणं वायनिसग्गेणं भमालिए पित्तमुच्छाए सुहुमेर्हि-

अंगसंचालेहि सुहुमेर्हि खेलसंचालेहि सुहुमेर्हि दिष्टिसंचाले-
हि एवमाइपर्हि आगरेर्हि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे का-
उसग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव
कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(चार संपूर्ण लोगस्सका क उसग्स करना न आवे तो सोलइ तवक्षर
गिनने. फिर एकजन खड़ होकर प्रगट नमोर्हंतसिद्धाचार्योपाध्या-
यसर्वसाधुभ्यः ऐसा कहकर शांति बोले वह नीचे मुताविक.)

शान्तिं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्तशिवं नमस्कृत्य ।

स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥

ओमितिनिश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेर्हते पूजाम् ।

शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥

सकलातिशेषकमहा-सम्पत्तिसमन्विताय शस्याय ।

ब्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥

सर्वामरसुसमूह,-स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ।

भुवन जनपालनोद्यत,-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥

सर्वदुरितौधनाशन,-कराय सर्वाद्विवप्रशमनाय ।

दुष्टप्रहमूतपिशाच,-शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥

यस्येतिनाममन्त्र -प्रधानवाच्योपयोगकृततोषा ।

विजया कुरुते जनहित,-मिति च तुता नमत तं शान्तिं ॥ ६ ॥

भवतु नमस्ते भगवति ! विजये ! सुजये ! परापरैरजिते ! ।

अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति जयावहे ! भवति ! ॥ ७ ॥

सर्वस्यापि च सङ्घस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे ।

साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीवाः ॥ ८ ॥

भव्यानां कृतसिद्धे ! निर्वृत्तिनिर्वाणजननि ! सत्वानाम् ।

अमयप्रशाननिरते ! नमोस्तु स्वास्तिप्रदे ! तुभ्यम् ॥ ९ ॥

भक्तानां जन्मूनां शुभावहे नित्यमुद्यते ! देवि ! ।

सम्यग्दृष्टिनां धृति,-रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥

जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जगतानाम् ।

श्रीसम्पत्कीर्तियशो, -वर्जनि ! जय देवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर, - दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः ।

राक्षसारिपुगणमारी, - चौरेति श्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥

अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति ॥

तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम् ॥ १३ ॥

भगवति ! मुणवांति ! शिवशान्ति,

तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ।

ओमिति नमो नमो न्हौं न्हीं न्हूँ न्हः यः क्षः न्हीं,

कुद्दु कुद्दु स्वाहा ॥ १४ ॥

एवं यन्नामाक्षर, - पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी ।

कुरुते शान्तिं नमन्तां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥

इति पूर्वसूरिदशीति, - मन्त्रपदविदर्भितः स्तवः शान्तेः ।

सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥

यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम् ।

स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्युयः ।

मनः प्रसन्नतामेति, पुज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यम्, सर्वं कल्याणकारणम् ।

प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥

(फिर सर्वलोक काउसगा पारे बाद एक मनुष्य प्रगट लोगस्स कहे.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्ययेर जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिण्दणं च सुमहं ॥ २ ॥

पउमण्हं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

सुविहिं च पुण्डदंतं, सीयलसिंजंसवासुपुज्जं च ।

विमलमण्तं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥

कुंथुं अरं च मर्लि, वंदे मुणिसुब्बयं नमिजिणं च ।

वंदामि रिहनेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।

चउवीसंपि जिणवरा, तित्ययरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

कित्तिवंदियमहिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।

आरुगगवोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ ६ ॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।

सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिर्द्धं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

॥ इच्छामि खमास्मणे वंदिं जावणिज्ञाए निर्सीहिआए
मृत्यएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भवगन् इरियावहियं पडिक्कमामि,
झुच्छं इच्छामि पडिक्कमिं, इरियावहियाए विराहणाए गम-
गागमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उर्त्तिग-
यणगदग मट्टी मकडा संताणा संक्कमणे जे मे जीवा विरा-
हिआ पर्गिदिया वेइंदिया तेइंदिया चउर्तिर्दिया पंचिदिया
अभिहया वन्निया लेसिया संघाइया संवहिया परियाविया
किलामिया उहविया ठाणाओठाणं संकामिया जीवियाओ
बवरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेण पायच्छित्तकरणेण विसोही करणेण
त्विसल्लीकरणेण पावाणं कम्माणं निगधायणद्वाए ठामिः
काउस्सगं ।

अन्नत्थ उसासिएणं नीसासिपणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
ष्टुणं उहुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेर्हि
जङ्गसंचालेहि सुहुमेर्हि खेलसंचालेहि सुहुमेर्हि दिहिसंचा-
लेहि एवमाइर्हि आगारोहि अभग्गो अविराहिओ हुज मे
काउस्सगो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारोमि
लावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक लोगस्स वा चार नवकारका काउस्सग करना, फिर प्रगट ले-
गास्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे

आरिहंते कित्तइस्सं, चउर्वीसं पि केवली ॥ १ ॥

उसंभमेजिअं च वंदे, संभवमभिणदणं च सुमहं च ।

पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

सुविहिं च पुण्यदंतं, सीयलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
 विमलमणंतं च जिणं, धर्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥
 कुंथुं अरं च महिं, वंदे मुणिसुव्ययं नमिजिणं च ।
 वंदामि रिद्वनोर्मि, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥
 एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ॥
 चउवीसंपि जिणवरा, तिथयरा मे पर्सायंतु ॥ ५ ॥
 कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगसस उत्तमा सिद्धा
 आरुगगवोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ ६ ॥
 चंदेसु निम्मलयरा, आइच्छेसु अहियं पयासयरा ।
 सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि भम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए
 मत्थएण वंदामि ॥

चउक्षसायपडिमलुलूरणु, दुज्जयमयणवाणसुसुमूरणु ।
 सरसपियंगुवन्तु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥

जसु तणुकंतिकडप्प सिणिद्धउ,
 सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ ।
 नं नघजलहरतविल्लयलंछिउ,
 सो जिणु पासु पयच्छिउ वंछिउ ॥ २ ॥
 नमुत्थुणं आरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
 आइगराणं तिथयराणं, सयंसंबुद्धाणं, ॥ २ ॥
 पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरियाणं ॥
 पुरिसवरगंधहृथीणं ॥ ३ ॥
 लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥
 लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
 अभयद्याणं, चक्रलुद्याणं, भगद्याणं, ॥
 सरणद्याणं, वोहिद्याणं ॥ ५ ॥
 धर्मद्याणं, धर्मदेसिआणं, धर्मनायगाणं ॥
 धर्मसारहीणं, धर्मवरचाउरंतचक्रवद्धीणं ॥ ६ ॥
 अपडिहयवरनाणदंसणधराणं विअद्वृष्टमाणं ॥ ७ ॥

जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं ॥
 बुद्धाणं वोहियाणं, मुत्ताणं, मोथगाणं ॥ ८ ॥
 सब्बन्तुणं, सब्बदरिस्तिणं, सिवमयलमरुअमणंत-
 मव्वखयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
 संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जियभयाणं ॥ ९ ॥
 जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भाविस्संति णागए काले ॥ १
 संपइअ वहुमाणा, सब्बे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥
 जावंति चेइआइ उहौअ अहे अ तिरिय लोए अ ।
 सब्बाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥
 इच्छामि खमासमणो वंदिङं, जावाणिज्जाए निसीहिभाए-
 अत्यएण वंदामि.

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ ।
 सब्बेति तेसि पणओ, तिविहेण तिदंडविरथाणं ॥ १ ॥
 नमोऽर्हत् सिद्धाचार्ये पाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
 उवसग्गहरंपासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्तं ।
 विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्पाणावासं ॥ २ ॥
 विसहरफुल्लिंगमंतं, कंठे धारेह जो सया मणुओ ।
 तस्स गहरोगमारी, ढुजरा जंति उवसामं ॥ ३ ॥
 चिहुउ दूरे मंतो, तुज्ज्ञ पणामो वि वहुफलो होइ ।
 नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न ढुकखदोगज्जं ॥ ४ ॥
 तुह सम्मते लज्जे, चितामणिकण्पायवध्महिए ।
 पावति अविघेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ५ ॥
 इअ संशुओ महायस, भत्तिभरानिभरेण हिअएण ।
 ता देव दिज वोहिं, भवेभवे पासजिणचंद ॥ ६ ॥
 जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
 भवनिव्वेओ मगगा,-एन्सारिआ इहुफलसिद्धी ॥ ७ ॥
 लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ।
 सुहगुरुजोगो तब्बय,-एन्सेवणा आभवमखंडा ॥ ८ ॥
 वारिज्जइ जंइवि निआ,-एन्बंधणं वीयराय तुह समए ।

तहवि मम हुज्ज सेवा भवे भवे तुरह चलणां ॥ ३ ॥
 दुषखखखओ करमधखओ, समाहिमरणं च बोहिलभो अ
 संपज्जउ मह पर्य, तुह नाह पणामकरणेण ॥ ४ ॥
 सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
 प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥
 इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए
 मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिले
 हुं ? “ इच्छुं ”

(ऐसा कहके मुहपत्ती पडिलेहनी ।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए-
 मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक
 यारुं ? ‘ यथाशक्ति ’

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए
 मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक
 यान्युं ? “ तहत्ति. ” ।

(फिर आसनपर दाहिना हात रखके एक नवकार गिनकर सामायिक
 धारनेकी गाथा कहनी वह निचे मुजब ।)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उ-
 वज्ज्ञान्याणं नमो लोप सद्वसाहृणं । एसो पंचनमुक्तारो सद्व
 यावप्पणासमणो भंगलाणं च सद्वेसि पढमं हवइ भंगलं ॥

सामाइयवयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंकुच्चो ।

छिन्नइ असुहं कम्म, सामाइय जात्तिया वारा ॥ १ ॥

सामाइयमिउ कए, समणो इव सावओ हवइ जग्हा ।

एपण कारणेण, घुसो सामाइयं कुज्जा ॥ २ ॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते
 जो कोई आविधि हुआ हो वो सब मन मचन कायाकर
 इमिच्छा मि दुष्कडं । दश मनके दश वचनके घारह कायाके

यह वर्तीस दोपमें जो कोइ दोप हुआ हो वह सब मन चक्षन कायाकर मिच्छा मि दुक्कड़ ॥

समाप्तम्.

॥ अथ पाद्धिक प्रतिक्रमण विधिसहित ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्ञाए निसीहिआप
मथएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहिर्ब
पडिक्कमामि “इच्छं” इच्छामि पडिक्कमिडं इरियावहिआप्
विराहणाए, गमणागमणे पाणक्कमणे व्यायक्कमणे हरियक्कमणे
ओसाउर्तिंग पणगगद् मट्टीमक्कडा संताणा संकमणे जे भे
जीवा विराहिआ, पर्गिदिया वेइंदिया तेइंदिया चउर्तिंदिया
यंचिदिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया
परियाविया किलामिया उद्विया, ठाणाओ ठाणं संकामिया
जीवियाओ वन्दरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कड़ ॥

तस्स उत्तराकरणेण, पायच्छितकरणेण, विस्तुर्करणेण
विस्तुर्करणेण, पावाणं कम्माणं निरधायणहाए ठामि काउ-
स्तगं ।

अन्नथ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभा-
इयणं, उहुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सहु-
मेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि-
संचालेहिं, एवमाइपहिं, आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ,
हुज मे काउस्तगोजाव आरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न
पारोमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोत्सिरामि ॥

(एक लोगस्तका काउस्तग करना, न आवे तो चार नवकार गिनन्न
फिर प्रगट लोगस्त कहना,)

लोगस्त उज्जोअगर, धम्मतित्थयरे जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवर्ली ॥ १ ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवममिणंदणं च सुमद्दं च ।

पउम्मप्पहं सुपांस, जिणं च चदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

सुवीहं च पुफ्फदंत, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।

विमलमणंत च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥

कुंथुं अरं च मर्लि, चंदे मुणिसुब्बवं नमिजिणं च ।
 चंदामि रिङ्गुनेमि, पासं तह चञ्चमाणं च ॥ ४ ॥
 एवं मए अभिशुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
 चउच्चीसिंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसायिंतु ॥ ५ ॥
 कित्तियवंदियमहिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
 आरुग्गवोहिलाभं, समाहिचरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
 चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु आहियं पयासयरा ।
 सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्ञाए निसीहिआए
 मत्थएण चंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक
 मुहपत्ती पडिलेहु ? “इच्छं”

(ऐसा कहके मुहपत्ति पडिलेहनी अंगकी पडिलेहना पशास बोलके
 साथ करना।)

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्ञाए निसीहिआए
 मत्थएण चंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं? “इच्छं”

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्ञाए निसीहिआए
 मत्थएण चंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक
 ठाऊं ? “इच्छं”

नमो आरिःताणं नमो सिद्धाणं नमो आयस्याणं ।
 नमो उच्चज्ञायाणं नमो लोए सब्बसाहूणं एसो पंच
 नमुक्तारो सब्बपावप्पणासणो मंगलाणं च सब्बेत्सि
 पठमं हवइ मंगलं ॥

इच्छाकारी भगवन् पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावोलीं
 (ऐसा फहकर दोनो हाथ जोडकर फरेमिभंते उचरना (कहना) बह
 नीचे मुजव)

करेमि भंते सामाइयं, सावजं जोगं पच्चक्खामि, जावनि-
 यमं पञ्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नह
 करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्खमामि निंदामि गरिद्वामि
 अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे संदिसाहुं ? “इच्छं”
इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए नीसीहिआए
मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे ठाउं ? “इच्छं” ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय
संदिसाहुं ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणि-
ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसहः
भगवन्, सज्जाय करुं ? “इच्छं”

(फिर दो हाथ जोड़के तिन नवकार गिनना ।)

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उब-
ज्ज्ञायाणं नमो लोए सब्बसाहुणं । एसो पंचनमुक्तारो सब्ब-
आवध्यणासणो मंगलाणं च सब्बेसि पढमं हवइ मंगलं ॥

(यह नवकार तीन दफे गिनना)

(फिर पानी पिया होतो मुहपाति पाड़िलेहनी, और आहार किया हो-
बेतो दो खमासमण देना ।

इच्छामि खमासमणो वंदितं आवणिज्जाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संकासं
खमाणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो
बइकंतो जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो देव-
सियं बद्धकमं आवस्सिआए पद्धिकमामि खमासमणाणं देव-
सिआए आसायणाए तिर्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मण-
दुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए
लोमाए सब्बकालिआए सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधम्माद्क-
मणाए आसायणाए जो मे अहीआरो कओ तस्स खमासमणो
थिद्धिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए अणु-

जाणह मे मिरग्गहं निसीहि अहो कायं काय सुपासं हम-
णिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो
बइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं
बइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए
इत्तीसन्नयराए जांकिचि मिच्छाए मणदुक्कडाए धयदुक्कडाए
कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सब्बकालि-
आए सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधरमाक्कमणाए आसायणाए
जो मे अद्वांरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं घोसिरामि ॥ २ ॥

(इच्छकारी भगवन् पसायकरी ध्यवखानका आदेश दीजियेजी)

तिविहार उपवास, अवेल निवी एकासन, वेआसन किया हो तो
पाणहार का पच्चक्खान लेना.

१ पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ अन्नतथणाभोगेण
सहस्सागारेण महत्तरागारेण सब्बसमाहिवत्तिआगरेण
घोसिरे.

बिलकूल पानी न पीना होतो उत्तिविहारका पच्चक्खान लेना ॥

२ दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउविहंपिहारं असणं पाणं खाइमं
साइमं अन्नतथणाभोगेण सहस्सागारेण महत्तरागारेण सब्ब-
समाहिवत्तिआगारेण घोसिरे ॥

फक्त पानी पीना हो तो तिविहारका ॥

३ दिवसचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं
अन्नतथणाभोगेण सहस्सागारेण महत्तरागारेण सब्ब-
समाहिवत्तिआगारेण घोसिरे ॥

पानी और मुखवास खुला रखना हो तो दुविहारका पच्चक्खान लेना.

४ दिवसचरिमं पच्चक्खाइ दुविहंपि आहारं असणं खाइमं
अन्नतथणाभोगेण सहस्सागारेण महत्तरागारेण सब्ब-
समाहिवत्तिआगारेण घोसिरे।

इच्छामि खमासमणो वादिं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थणेण वंदामि. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन-
करुं १ “ इच्छं ”

ऐसा कहके सकलार्द्धत् कहना.

चैत्यवंदनः

-सकलार्हं प्रतिष्ठान,-मधिष्ठानं शिवाश्रियः ।
 भूर्भुवः स्वस्यायीशान्,-मार्हत्यं प्राणिदध्महे ॥ १ ॥
 -नामाकृतिद्रव्यभावैः, पुनतास्त्रिजगज्जनं ।
 क्षेत्रे काले च सर्वस्मि,-व्रह्मतः समुपास्महे ॥ २ ॥
 आदिमं पृथिवीनाथ,-मादिमं तिःपरिग्रहं ।
 आदिमं तीर्थनाथं च, ब्रह्मभस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥
 अर्हन्तमजितं विश्व,-कमलाकर भास्करम् ।
 अम्लान केवलादर्शा,-संक्रान्त जगतं स्तुवे ॥ ४ ॥
 विश्वभव्यजनाराम,-कुल्यातुल्या जयनित ताः ।
 देवानासमये वाचः, श्रीसम्भवजगत्पते ॥ ५ ॥
 अनेकान्तमताम्भोधि,-समुद्धासनचन्द्रमाः ।
 दद्यादमन्दमानन्दं, भगवानभिनन्दनः ॥ ६ ॥
 द्युसत्किरीटशाणाग्रो,-त्तेजिताद्यन्दिनखावलिः ।
 भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वमिमतानि वः ॥ ७ ॥
 पंचप्रभप्रभोदैह-, भासः पुण्णन्तु वः श्रियम् ।
 अन्तरङ्गरिमथने कोपाटोपादिवारुणः ॥ ८ ॥
 श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय, महेन्द्रमहिताद्यन्तये ।
 नमश्चतुर्वर्णसङ्घं, गगनाभोगभास्वते ॥ ९ ॥
 चन्द्रग्रभप्रभोश्वन्द्र, मरीचिनिचयोज्जवला ।
 मूर्तिमूर्तसितध्यान,-निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥ १० ॥
 करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवलश्रिया ।
 अचिन्त्यमाहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥
 सत्त्वानां परमानन्द,-कन्दोदभेदनवाम्बुदः ।
 स्याद्वादमृतनिस्थन्दी, शीतलः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥
 भवरोगार्तजन्तुना,-मगदङ्गारदर्शनः ।
 निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥
 विश्वोपकारकीभूत,-तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ।

सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥
 विमलस्वामिनो वाचः, कतकक्षोदसोदराः ।
 जयन्ति विजगच्छेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥
 स्वयम्भूरमणस्पर्द्धि,-करुणारसवारिणा ।
 अनन्तजिदनन्तां वः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥ १६ ॥
 कल्पद्रुमसधर्माण,-मिष्ठासौ शरीरिणाम् ।
 चतुर्धार्धमदेष्टरं धर्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥
 सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना,-निर्मलाकृतदिङ्गमुखः ।
 मृगलक्ष्मा तमश्शान्त्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः ॥ १८ ॥
 श्रीकुन्त्युनाथो भगवान्,-सनाथोऽतिशयद्विभिः ।
 सुरासुरनृनाथाना,-मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥ १९ ॥
 अरनाथस्तु भगवां,-श्वतुर्थारनभोरविः ।
 चतुर्थपुरुषार्थश्री,-विलासं द्वितनोतु वः ॥ २० ॥
 सुरासुरनराधीशा,-मधूरनववारिदम् ।
 कर्मद्रून्मूलनेहस्ति,-मल्लं मल्लामभिष्टुमः ॥ २१ ॥
 जगन्महामोहनिद्रा,-प्रत्यूपसमयोपमम् ।
 मुनिसुवतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥ २२ ॥
 लुठन्तो नमतां मुर्धि, निर्मलीकारकारणम् ।
 वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पादनखांशवः ॥ २३ ॥
 यदुवंशसमुद्रेन्दुः, कर्मकक्षहुताशनः ।
 आरिष्टनोमिभंगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥
 कमठे धरणेन्द्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ।
 ग्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽरतु वः ॥ २५ ॥
 श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ।
 महानन्दस्तरोराज,-मरालायाहते नमः ॥ २६ ॥
 कृतापराधेऽपि जने, कृपामन्थरतारयोः ।
 ईषद्वाष्पाद्र्घ्योर्भद्रं, श्रीवर्चाराजिननेत्रयोः ॥ २७ ॥
 जयति विजितान्यंतेजाः सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ।
 विमलखांसंविराहितः,-स्त्रिभुवननूडामाणिर्भगवान् ॥ २८ ॥

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः ।
 वीरेणाभिहृतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ।
 वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो ।
 वीरे श्रीधृतिकीर्तिकान्तिनिचयः, श्रीवीर । भद्रं दिश ॥ २९ ॥
 अवनितंलगतानां, कृत्रिमाकृतिमानाम् ।
 वरभवनगतानां, दिव्यवैमानिकानाम् ।
 इह मनुजकृतानां, देवराजार्चितानाम् ।
 जिनवरभवनानां, भावतोऽहं नमामि ॥ ३० ॥
 सर्वेषां वेधसामाद्य,-मादिमं परमेष्ठिनाम् ।
 देवाधिदेवं सर्वशं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३१ ॥
 देवोऽनेकभवार्जितेर्जितमहाप्रदीपानलो ।
 देवः सिद्धिवृद्धविशालहृदयालङ्घारहारोपमः ।
 देवोऽष्टादशदोषसिन्धुरघटानिर्भेदं पञ्चाननो ।
 भव्यानां विदधातु वाञ्छितफलं, श्रीवीतरागो जिनः ॥ ३२ ॥
 ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेत शैलाभिधः ।
 श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुजयो मण्डपः ।
 वैभारः कनकाचलोऽर्दुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय- ।
 स्तत्र श्रीकृष्णमादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलस् ॥ ३३ ॥
 जं किंवि नाम तित्थं सम्मो पायालि माणुसे लोण ।
 जाइं जिण विवाइं, ताइं सब्बाइं वंदामि ।
 नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
 आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
 पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर्षुडरीयाणं,
 पुरिसवरगंधृत्थर्णिं ॥ ३ ॥
 लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं,
 लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥
 अभयदयाणं, चक्रबुदयाणं मग्नदयाणं,
 सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥
 धम्पदयाणं, धम्पदेसि आणं, धम्मनायगाणं,

धर्मसारहिणं, धर्मवरचाउरंतचक्षवद्गीणं ॥ ६ ॥
 अपपडिहयवरनाणदंसणधारणं, विअद्वृछउमाणं ॥ ७ ॥
 जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,
 चुद्धाणं वोहिआणं मुत्ताणं मोथगाणं ॥ ८ ॥
 सुववन्नूणं, सववद्वरिसीणं, सिवमयलमरुयमण्ठत
 मवकयमव्वावाहमपुणरावित्ति ॥ सिद्धिग्रहनामधेयं ॥
 ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिथभयाणं ॥ ९ ॥
 जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले ।
 संपइ अ चहुमाणा, सव्वे तिचिहेण चंदामि ॥ १० ॥
 (फिर चरवलावाले खडे होकर अरिहंत चेहाणं कहे ।)

अरिहंतचेहाणं करेमि काउस्सगं । चंदणवाच्चिअष्ट-
 पूअणधत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहि-
 लाभवत्तिआए निरुवसगवाच्चिशाए सद्धाए मेहाए धिझष्ट-
 धारणाए अणुपेहाए चहुमाणीए ठामि काउस्सगं ।

अन्नथ उससिपणं नीससिसिएणं खासिएणं छीषणं जंभाइ-
 एणं उहुएणं वायनिसगेणं भमलिए पिचमुच्छाए सुहुमेर्हि-
 अंगसंचालेहिं सुहुमेर्हि खेलसंचालेहिं सुहुमेर्हि दिहुसंचाले-
 हिं एवमाइयहिं आगारेहिं अभग्गो आविराहिओ हुज्ज मे-
 काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि
 तावकायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग कर नमोऽहृत् सिद्धाचायोंपाद्याय-
 सर्वसाधुभ्यः कहकर स्तुति कहना ।)

स्नातस्यप्रतिमस्य भेषशिखरे, शान्त्या विमोः शैशवे ।
 रूपालोकनविसमयाहृतरस,-भान्त्या भ्रमच्छुषा ॥
 उन्मृग्रं नयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशङ्क्या ।
 घब्बं यस्य पुनः एनः स जयति, श्रीवर्धमानो जिनः ॥ १ ॥
 लोगस्स उज्जोग्गरे, धर्मपतित्यये जिणे ।
 अरिहंते किन्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ २ ॥

उसभमजिथं च वंदे, संभवमभिण्दणं च सुसहं च
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ ३ ॥
सुविर्हिं च पुष्टदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ४ ॥
कुंथु अरं च मर्लि, वंदे सुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
वंदामि रिहुनोर्मि, पासं तहं वद्धमाणं च ॥ ५ ॥
एवं मए अभिथुआ, विहुयरथमला पहीणजरमरणा ।
चउर्वासंपि जेणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ६ ॥
कित्तियवंदियमाहिआ, जे ए लोगसस उत्तमा सिङ्गा ।
आरुग वोहिलामं समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ ७ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरणंभीरा, सिङ्गा सिर्द्धं मम दिसंतु ॥ ८ ॥

स्वब्लोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सगं वंदणवत्ति-
आए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए
बोहिलाभवत्तिआए निरुवसगवत्तिआए सद्ग्राए मेहाए धि-
ङ्गए धारणार अणुयेहाए वडुमाणीए ठामि काउस्सगं ।

अश्वत्य उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाद-
श्येणं उडुएणं वायनिसगेणं भमालिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहिसंचाले-
हिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउ-
स्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव-
क्कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग करके फिर स्तुति कहनी.)

हंसांसाहंतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवास्मौभृतैः ।

कुम्भैरप्सरसां पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः काञ्चनैः ।

येषां मन्दररनशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ।

सर्वं सुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥ २ ॥

एकयरवरदीवेष्टु, धायहस्तंडे अ जंगुदीवे अ ।

भरहेरवयविदेहे, धम्माहगरे नमंसामि ॥ १ ॥

तमतिमिरपडलविद्धं,-सणस्स सुरगणनरिदमहिअस्स ।

सीमाभरस्स वंदे, पण्ठोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥

जाइजरामरणसोगपणासणस्स,

कहुणपुक्खलविसालसुहावहस्स ।

को देवदाणवनरिदगणाच्छियस्स,

धम्मस्स सारमुवलभ करे पमायं ॥ ३ ॥

सिद्धे भो पयओ णमो जिणमण नंदि सया संजमे

देवनागरुवन्नकिन्नरगणस्सध्यु अभावच्छिए ।

लोगो जत्थ पद्धटिओ जगमिण तेलुकमव्यासुरं ।

धम्मो वहृउ सासओ विजयउ धंम्मुत्तरं वहृउ ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवथो करेमि काउस्सगं । घंदणवत्तिआण
पूथणवत्तिआण सकारवत्तिआण सम्माणवत्तिआण वोहिला-
भवत्तिआण निस्वसगगवत्तिआण सद्धाप मेहाए धीइए
धारणाए धणुप्पेहाए वहृउमाणीए टामि काउस्सगं ।

अन्नत्थ उससिएण नासलिएण ग्वासिएण छीएण जंभाइ-
एण उदुएण वायनिसगोण भमलिय पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिष्टिसंचालेहिं
एवमाइएहिं आगारेहिं अभगगो अविराहिओ हुज मे काउस्सगो
जाव अरिहंताण भगवंताण नमुक्कारेण न पारेमि तावकार्य
टाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग करके तीसरी लुति कहनी)

अहंदकप्रसूतं गणधररचितं छादशांगं विशालं, चिंधं वहृ-
र्थयुक्तं मुनिगणबृपभैर्धारितं बुद्धिमाद्धिः। मोदाग्रद्वारभूतं वत-
चरणफलं द्वेयभावप्रदीपं, भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं
सर्वलोकिकसारं ॥ ३ ॥

सिद्धाण बुद्धाण, पारगयाण परंपरगयोण ।

लोअग्गमुवगयाण, नमो सया सव्वसिद्धाण ॥ ४ ॥

जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
 तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
 इक्षो वि नमुक्तारो, जिणवरवसहस्रस वद्धमाणस्स ।
 संसारसागराओ, तारेऽन नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥
 उज्जितसेलसिहरे, दिक्ख्वा नाणं निसीहिआ जस्स ।
 तं धम्मचक्रवर्द्धि, अरिङ्गोर्म नमंसामि ॥ ४ ॥
 चत्तारि अष्टु दस दो य, वंदिया जिणवरा चउवीसं ।
 परमष्टानिहिभष्टा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥
 वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिहिसमाहिगराणं करेमि
 काउस्सरगं ।

अन्नत्य उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं,
 उहुएणं वायनिसगरेणं, भमलिप पित्तमुच्छाप, सुहुमेर्हि
 अंगसंचालेहि, सुहुमेर्हि खेलसंचालेहि, सुहुमेर्हि दिहिसं-
 चालेहि, एवमाइएहि, आगारेहि, अभग्गो अविराहिआ, हुज्ज मे
 काउस्सरगो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्तारेणं न पारेमि
 तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सरग पारके “नमोऽर्हत सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-
 साधुभ्यः” कहके किर स्तुति कहनी।)

निष्पंकज्योमनीलद्युतिमलसदशं वालचंद्रामदंश् ।
 मत्तं घंटारवेण प्रसूतमद्जलं पूर्यंतं समंतात् ।
 आस्ढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी ।
 यक्षः सर्वानुभूतिं दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥६॥
 (किर बैठके)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥
 आइगराणं तित्थयराणं, सर्वसंबुद्धाणं ॥ २ ॥
 पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरिआणं,
 पुरिसवरगंघहथीणं ॥ ३ ॥
 लोमुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं,
 लोगपइवाणं, लोगपञ्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अभयदयाणं, चक्रखुदयाणं, मगगदयाणं,
सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥ ५ ॥

धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहणं, धम्मवरचाउरंतचक्रवट्टीणं ॥ ६ ॥

अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियहृछउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,

बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥ ८ ॥

सव्वबन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयलमरुअमणं-
मक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सांति णागण काले ।
संपहुअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । भगवान् हूँ ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । आचार्यहूँ ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहूँ ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । सर्वसांघुहूँ ।

(फिर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिथ पडिक्कमणे ठाउं ?
“इच्छुं”

(दाहिणा हाथ चरवला वा आसनपर रखके)

सव्वस्सवि देवसिथ दुच्चितिथ दुध्मासिथ दुच्चिष्टिथ इच्छुं
तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

(फिर खडा होके वां बैठके करेमिभंते कहे वह नीचे मुतांविक)

करेमिभंते सामाइयं सावज्जं जोगं पञ्चक्खामि जाव
(नियमं पञ्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न

करोमि न कारवेमि तस्सभेते पंडिकमामि निंदामि गरिहामि
अप्याणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउसगं जो मे देवसिंओ अइयारो कओ
काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उस्मग्गो अकपो अकर-
णिज्जो दुज्ज्ञाओ दुविचितिओ अणायारो अणिच्छथव्वो
असावगपाउग्गो नाणे देसणे चरित्ताचरिते सुप सामाइए
तिष्ठं शुतीणं चउण्हं कसायाणं पंचणहमणुव्ययाणं तिष्ठं
शुणव्ययाणं चउण्हं सिक्खाव्ययाणं वारसविहस्स सावग-
धम्मस्स जं खंडिथं जं विराहिथं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेण पायच्छत्तकरणेण विसोहीकरणेण
विसल्लीकरणेण पावाणं कम्माणं निग्धायणट्टाए ठामि
काउस्सगं ।

अन्नतथ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
एणं उहुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहु-
मेर्हि अंगसंचालेहि सुहुमेर्हि खेलसंचालेहि सुहुमेर्हि दिङ्गि-
संचालेहि एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ
हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न
पारोमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्याणं वोसिरामि ॥

(फिर अतिचारकी आठ गाथाका काउस्सगं करना, न आवे तो
आठ नवकार गिनने फिर

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

उसभमाजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमईं च ।

पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

सुविहिं च घुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च ।

विमलमणंतं च जिणे, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥

कुंथुं अरं च मर्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।

वंदामि रिद्धनोमि, पासं तहं वद्धमार्णं च ॥ ४ ॥

एवं मए अभिथुआ, विहुयरथमला पहीणजरमरणा ।

चउवीसांपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
 कित्तिय वंदिय महिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
 आरुगग-वोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
 चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
 सागरवरगंभीरा, सिद्धा.सिद्धि भम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर तीने आवश्यकी मुहूरपति पड़िलेहनी और दो खमासमण देने)

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्ञाए निसीहिआए
 अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहो कायं काय संफासं
 खमाणिज्ञो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वहं
 क्षंतो जत्ता भे जवणिज्ञं च भे खामेमि खमासमणो देवसियं
 घइकम्मं आवस्सआए पडिकमामि खमासमणाणं देवसिआए
 आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए भणदुकडाए
 वयदुकडाए कायदुकडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए
 सच्चकालिआए सच्चमिच्छोवयाराए सच्चधम्माइकमणाए
 आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिकमा-
 मि निंदामि गरिहामि अप्पाणं चोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्ञाए निसीहिआए अणु-
 जाणह मे मिउगगहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमाणिज्ञो
 भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वहंक्षंतो
 जत्ता भे जवणिज्ञं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वहइकम्मं
 पडिकमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्न-
 यराए जंकिंचि मिच्छाए भणदुकडाए वयदुकडाए कायदुक-
 डाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सच्चकालिआए
 सच्चमिच्छोवयाराए सच्चधम्माइकमणाए आसायणाए जो
 मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिकमामि निंदामि
 गरिहामि अप्पाणं चोसिरामि ॥२॥

(फिर खड़ा होकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवभिअं आलोउ ? “इच्छं”
 आलोपमि जो मे देवसिओ जइआरो कओ काइओ

वाहओ माणसिओ उस्सुतो उमग्गो अकप्पो अकर-
णिजो दुज्ज्ञाओ दुव्विचितिओ अणायारो अणिच्छुअव्यो
असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचारित्ते सुए सामाइए
तिणहं मुन्तीणं चउणहं कसायाणं पंचणहमणुव्ययाणं तिणहं मुण-
व्ययाणं चउणहं सिक्खाव्ययाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स
जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं

(फिर हाथ जोडके)

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख
तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति-
काय, चउदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दोइंद्रिय,
दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार
लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पचैंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य
एवंकारे चौरासी लाख जीवायोनीमेंसे मेरे जीवने जो कोई
जीव हनन किया हो, कराया हो, करनेवाले को भला जाना
हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

एहले प्राणातिपात, दूजे मृषावाद, तीजे अदत्तादान, चौथे
मैथुन, पांचमे परिग्रह, छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया,
नवमे लोभ, दसमे राग, इग्यारमे द्वेष, वारमे कलह, तेरमे
अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पञ्चममे रति अरति, सोलमे पर
परिवाद, सत्तरमे मायामृषावाद, अठारमे मिथ्यात्वशल्य इन
अठारह पापस्थानोंमेंसे मेरे जीवने जो कोई पापस्थान सेवन
किया हो, कराया हो, करतेको भला जाना हो वह सब मन,
वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

संववस्सवि देवसिअ दुचितिअ दुव्यभासिअ दुचिहिअ
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर दाहिणा ढींचण खडा करके नीचे मुजब कहना.)

नमो आरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्ज्ञायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच

नमुक्तारो । सब्वपावण्णासणो । मंगलाणं च सव्वेंसि ।
पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमिभंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पञ्चक्खामि, जावनि-
यमं पञ्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए कापणं न क-
रेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिडं जो मे देवसिंओ अइआरो कओ
काइओ वाइओ माणसिओ उसुत्तो उम्मगो अकप्पो अकर-
णिज्जो दुज्ज्ञाओ दुविचितिओ अणायारो अणिच्छअव्वो
असावगपाउगगो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए
तिणहं गुत्तीणं चउणहं कसायाणं पचण्हमणुव्वयाण तिणहं
गुणव्वयाणं चउणहं सिक्खाचयाणं वारसविहस्स सावग-
धम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्षडं ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहु अ ।

इच्छामि पडिक्कमिडं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥

जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।

सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥

दुविहे परिगगहांमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।

कराचणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥

जं बद्धमिदिपाहं, चउहिं कसापाहं अप्पसत्थेर्हि ।

रागेण च दोसेण च, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥

आगमणे निगमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।

आभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥

संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथंघो कुलिंगीसु ।

सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ६ ॥

छक्कायसमारंभे, पयणे अ प्रयाचणे अ जे दोसा ।

अत्तड्हा य परड्हा, उभयड्हा चेच तं निंदे ॥ ७ ॥

पचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिणहंमइआरे ।

सिक्खाणं च चउणहं, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ८ ॥

पढमे अणुव्ययंमि, शूलगपाणाद्वायादिरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ९ ॥
 वह वंध छवि छ्लेए, अहभारे भन्तपाणबुच्छ्लेए ।
 पढमव्ययस्स इयारे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १० ॥
 वीए अणुव्ययंमि, परिथूलगअलियव्यष्टिरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ११ ॥
 सहसा रहस्स दारे, मोलुघएसे अ कुडलेहे अ ।
 वीयव्ययस्स अइयारे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १२ ॥
 तडए अणुव्ययंमि, थूलगपरदव्वहरणचिरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १३ ॥
 तोनाहडप्पओरो, तप्पडिरुवे विरुद्धगमणे अ ।
 कुडतुल कुडमाणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १४ ॥
 चउथे अणुव्ययंमि, निच्चं परदारगमणचिरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १५ ॥
 अपरिगंगहिअा इत्तर, अणंग विचाहं तिव्व अणुरागे
 चउथव्ययस्स अइयारे, पाडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १६ ॥
 इत्तो अणुव्यए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।
 परिमाणपरिच्छ्लेए, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १७ ॥
 धण धन्न खित्तव्यत्यु, रुप्प सुचन्ने अ कुविअपरिमाणे ।
 दुपए चउप्ययंमि, पाडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ १८ ॥
 गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उद्धां अहे अ तिरियं च ।
 उद्धादि सइ अंतरज्जा, प्रढमामि गुणव्यए निदे ॥ १९ ॥
 मज्जांमि अ मंसंमि अ, पुर्फे अ फले अ गंधमले अ ।
 उवभोगे परिमोगे, वीअंमि गुणव्यए निदे ॥ २० ॥
 साच्चित्ते पडिबज्जे, आपोल दुर्पोलअंच आहारे ।
 तुच्छोसहि भक्तव्यापा, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ २१ ॥
 इंगाळी वण-साडी भाडी, फोडी सुवज्जाए कसमं ।
 वाणिज्जं चेव दंत, लुक्खरसकेसवीस वीसिअं ॥ २ ॥
 एवं खु जंतपिल्लण, कममि निलुच्छणं च दवदाणं ।

सरदह तलायसोसं, असइ पोसं च वज्जिज्ञा ॥ २३ ॥
 सत्थग्नि मुसल जंतग, तण कहु मंत सूल भेसज्जे ।
 दिज्जे दवा विष्वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २४ ॥
 न्हाणुवट्टण वञ्चग, चिले-घणे सद्गुव रस गंधे ।
 वत्थासण भरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २५ ॥
 कंदप्पे कुक्कहए, मोहरि अहिगरण भोगअझित्ते ।
 दंडमि अणहुए, तइअंमि मुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥
 तिविहे दुष्पणिहाणे, थणवट्टाणे तहासज्जविहुणे ।
 सामाझथ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥
 आणवणे पेसवणे, सदे रुचे अ पुग्गलक्खेचे ।
 देसावगासिअंमि, वीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥
 संथारुचारविही, पमाय तह चेच भोयणा भोए ।
 पोसहविहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥
 साच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे चवप्पस मच्छरे चेच ।
 कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥
 सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे असंजएसु अणुकंपा ।
 रागेण व दोसेण व, त निंदे तं च रिगहामि ॥ ३१ ॥
 साहुसु संविभागो, न कओ तवचरण करण जुत्तेसु ।
 संते फासुयदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥
 इहलोए परलोए, जीविअ भरणे अ आसंसप्पओगे ।
 पंचविहो अहआरो, मा मज्ज हुज्ज मरण्ते ॥ ३३ ॥
 काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
 मणसा माणसिअस्स, सव्वस वयाइयारस्स ॥ ३४ ॥
 चंदणवयसिक्खागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ।
 गुच्चीसु अ समीहसु अ, जो अहआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥
 समादिडीजीवो, जइवि हु पावं समायरे किचि ।
 अपोसि होई वंधो, जेण निढंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
 तंपि हु सपडिकमण, सप्परिथावं सउत्तरगृणं च ।
 खिप्पं उवसामेह, वाहिव्व सुसिक्खओ विज्जो ॥ ३७ ॥

जहा विसं कुड्डांयं, मंतमूलविसारया ।
विज्ञा हण्ठंति मंतोहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥

एत्रं अद्विहं कम्मं, रागदोस समज्जिथं ।
आलोअंतो अ निंदंतो, खिष्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥
कथपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिथ गुरुसगासे ।
होइ अहरेग लहुओ, ओहरिअ भरुव भारवहो ॥ ४० ॥
आवस्सपण पपण, सावओ जइवि बहुरओ होइ ॥
दुक्खाणमंतकिरिथं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥
आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले ।
मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥
तस्स धम्मस्स केवाले पन्नत्तस्स ॥
अवमुहुओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥
जावंति चेइआइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू ॥ ४५ ॥
चिर संचिय पाव पणासणीए, भवसय सहस्स महणीए ।
चउव्वीस जिण विणिगगय कहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥
मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुथं च धम्मो अ ।
सम्महिड्डीदेवा, दिंतु समाहिं च वोहिं च ॥ ४७ ॥
पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ।
असहणे अ तहा, विवरीयपरुबणाए अ ॥ ४८ ॥
खामेमि सब्ब जीवि, सब्बे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ति मे सब्बभूएसु, वेरं मज्ज्ञ न केणइ ॥ ४९ ॥
एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंच्छिअं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिडं, जावणिज्जाए निसीहिआए,
मत्थएण वंदामि. देवसिथं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण
संदिसह भगवन् पक्षिल मुहपत्ति पडिलेहुंजी ? “इच्छु”

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहुंजी, फिर दो खमासमण देने वह नीचे
सुताविक)

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्ञाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं
खमणिज्ञो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो
वद्दकंतो जन्ता भे जवणिज्ञं च भे खामेमि खमासमणो पक्खि-
अं वद्दकमं आवसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खि-
आए असायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मण-
दुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए
लोभाए सब्बकालिआए सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधम्माइक्क-
मणाए आसायणाए जो मे अइकारो कओ तस्स खमासमणो
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्ञाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं
खमणिज्ञो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो-
वद्दकंतो जन्ता भे जवणिज्ञं च भे खामेमि खमासमणो पक्खि-
अं वद्दकमं पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसाय-
णाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्क-
डाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सब्ब-
कालिआए सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधम्माइक्कमणाए आसा-
यणाए जो मे अइकारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं आलोउ ? “इच्छं”
आलोपमि जो मे पक्खिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ
माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्ञो दुज्ज्ञाओ
दुविचिंतिओ ब्रणायारो अणिच्छिअच्चो असावगपाउग्गो
नाणे दंसणे चरित्तोचरित्ते सुए समाइए तिणहं गुत्तीणं चउणहं
कसायाणं पंचणहमणुवयाणं तिणहं गुणवययाणं चउणहं
सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं
विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(इच्छाकारेण संदिसंह भगवन् पवित्रं अतिचार आलोड़ ? “इच्छ” ऐसा कहके पाक्षिक अतिचार कहना वह नीचे मुताविक)

पाक्षिक अतिचार

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि । आय-
रणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ ज्ञानाचार, दर्श-
नाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांचों आचा-
रोंमें जो कोइ अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते,
अजानते, लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि
दुक्षडं.

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार “ काले विणए वहुमाणे,
उवहाणे तह य निन्हवणे । वंजण अथय तदुभए, अष्टविहो
नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान नियमित वक्तमें पढा नहीं, अकाल
वक्तमें पढा । विनयरहित, वहुमानरहित, योगोपधानरहित,
पढा । ज्ञानजिससे पढा उससे अतिरिक्तको गुरु माना, या
कहा । देववंदन, मुरुवंदन, करते हुए, तथा प्रतिक्रमण स-
ज्ञाय पढते, शुणते, अशुद्ध अक्षर कहा, लगमात्रं न्यूना-
धिक कहा, अथवा सूत्र अर्थ दोनों असत्य कहे, पढकर
भूला, असज्ञाईके समयमें थविराचलि, प्रतिक्रमण, उपदेश-
मालाओंदिसिद्धांत पढा । अपवित्र स्थानमें पढा, विना साफ
किये घृणित भूमिपर रखा । ज्ञानके उपकरण तखती, पोथी,
ठवणी, कवली, माला, पुस्तक रखनेकी रील, कागज, कलम,
द्वात आदिके पैर लगा, थूक लगा, अथवा थूकसे अक्षर
मिटाया । ज्ञानके उपकरणको मस्तकके नीचे रखा, अथवा
पासमें लिए हुए आहार निहार किया । ज्ञान द्रव्य भक्षण
करनेवालेकी उपेक्षा की, ज्ञानद्रव्यकी सारसंभालन की, उलटा
तुकसान किया । ज्ञानवंतके उपर द्वेष किया, ईर्षा की, तथा
अवज्ञा आशातना की । किसीको पढने शुननेमें विघ्न डाला,
अपने जानपनेका मान किया, मतिज्ञान, क्षुतज्ञान, अवधिज्ञान,
मनःपर्यवज्ञान, और केवलज्ञान इन पांचों ज्ञानोंमें श्रद्धा न

की. गुंगे तोतलेकी हाँसी की इत्यादि शानाचार संवंधी जो कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छाओंमि दुक्कड़ ॥

दर्शनाचारके आठ अतिचारः— “निस्संकित निक्षियथ, निवितिगिच्छां अमूढांदिष्टि अ । उच्चवृह थिरीकरणे, वच्छल-प्पभावणे अहृ ॥ ३ ॥ देवगुरु धर्ममें निःशंक न हुआ, एकांत निश्चय न किया. धर्मसंवंधी फलमें संदेह किया, साधु साध्वीकी जुगुप्सा निंदा की, मिथ्यात्वियोंकी पूजा प्रभावना देख-कर सूढदृष्टिपना किया. कुचारित्वाको देखकर चारित्रिवाले परभी अभाव हुआ, संघमें गुणवानकी प्रशंसा न की. धर्मसे पतित होते हुए जीवको स्थिर न किया. साधर्मीका हित न चाहा, भक्ति न की, अपमान किया. देवद्रव्य, शानद्रव्य, साधारणद्रव्यकी हानि होते हुए उपेक्षा की, शक्तिके होते हुए भली प्रकार सारसंभाल न की, साधर्मीसे कलह, क्लेश करके कर्मवंधन किया, मुखकोश वांधेविना भगवत् देवकी पूजा की, धूपदानी, खसकुची, कलशआदिकसे प्रतिमाजी को ठपका लगाया, जिनविव हाथसे छूटा, श्वासोश्वास लेते आशातना हुई. मंदिर और पौपथशालामें शूका, तथा मल श्लेष्म कियां, हाँसी की, कुतु-हल किया. जिनमंदिरसंवंधी चौरासी आशातनामेंसे और गुरुमहाराज संवंधी तेतीस आशातनामेंसे कोइ आशातना हुइ हो, स्थापनाचार्य हाथसे गिरे हो, या उनकी पड़िलेहण न हुइ हो, गुरुके वचनको मान न दिया हो इत्यादि दर्शनाचार संवंधी जो कोइ अतिचार, पक्षदिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छाओंमि दुक्कड़ ॥

चारित्राचारके आठ अतिचारः— “पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं संमिद्धाहि तिहिं गुर्त्तीहिं । एस चरित्तायारो, अहृविहों होइ नायः व्वो ॥४॥ इर्यासमिति, भापासमिति, एषणासमिति आदानभंडम-

क्षनिक्षेपणासमिति, पारिष्ठापनिका समिति, मनोगुसि, बचन-
गुसि, कायगुसि यह आठ प्रवचनमाता-सामायिक, पौषधा-
दिकमें अच्छीतरह पाली नहीं। चारित्वाचार संबंधी जो
कोइ अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते
लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुःखड़ ॥

विशेषतः आवकधर्मसंबंधी श्रीसम्यक्त्वमूल वारहमत
सम्यक्त्वके पांच अतिचार—“संका कंख विगिच्छा,” शंकाः—
श्री अरिहंत प्रभुके बल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्य-
दिग्मुण, शाश्वतीप्रतिमा, चारित्रावानके चारित्रमें तथा जिने-
श्वर देवके वचनमें संदेह किया। आकांक्षाः—ब्रह्मा, विष्णु,
महेश, क्षेत्रपाल, गरुड, गूगा, दिक्पाल, गोत्रदेवता, नव-
अहपूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, वाली, माता, मसानी-
आदिक तथा देश, नगर, ग्राम, गोत्रके जुदे जुदे देवादिकों
का प्रभाव देखकर शरीरमें रोगांतक कष्टादिके आनेपर इस-
लोक, परलोकके लिए पूजा मानता की। वौद्ध, सांख्यादिक
सन्न्यासी, भगत, लिंगिये, योगी, फकीर, पीर इत्यादि अन्य-
दर्शनियोंके मंत्र तंत्र चमत्कारको देखकर, विना परमार्थ
जाने मोहित हुआ, कुशास्त्र पढा, सुना। आद्य, संबत्सरी,
होली, राखडीपुनम, राखी, अजाएकम, प्रेतदूज, गौरीतीज,
गणेशाचौथ, नागपंचमी, स्कंदपष्ठी, झीलणपष्ठी सील सप्तमी
दुर्गाष्टमी, रामनवमी, विजया दशमी, ब्रत एकादशी, वामन
द्वादशी, वत्सद्वादशी, धन तेरस, अनंत चौदश, शिवरात्री,
काली चौदस, अमावस्या, आदित्यवार, उत्तरायण, याग,
भोगादिकिये कराये, करते को भला माना। पीपलमें पानी
डाला, डलावया। कुचा, तलाव, नदी, द्रह, बावडी, समुद्र,
कुंडउपर पुण्यनिभित्त स्नान और दान किया, कराया;
अनुमोदन किया, शनिश्वर, माघमास, नवरात्रिका स्नान
किया। नवरात्रिव्रत किया, अज्ञानियोंके माने हुए ब्रतादि
किये, कराये। वितिगिच्छाः—धर्मसंबंधी संदेह किया, जिन

चीतराग आरहिंत भगवान् धर्मके आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्ष मार्गदातार, इत्यादि गुणयुक्त जानकर पूजा नहीं, इसलोक, परलोकसंबंधी भोगवांच्छाके लिये पूजा की, रोगआंतक कष्टके आनेपर क्षीण चबन बोला, मानता मानी, महात्मा महासतीके आहार, पानीआदिकी निंदा की, मिथ्यादांष्ट्रिकी पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की, प्रतीति की, दाक्षिण्यतासे उसका धर्म माना, मिथ्यात्वको धर्म कहा इत्यादि श्रीसम्यकत्व व्रतसंबंधी जो कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमें सूखम या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, घचन, कायाकर मिच्छामि दुक्षं ॥

पहले स्थूल प्राणातिपात विरमणव्रतके पांच अतिचारः—
 “ वह वंध छविच्छेए ” द्विपद, चतुर्पदआदि जीवको क्रोध-चश ताडन किया, घाष लगाया, जकड़कर बांधा, अधिक घोश लादा. निर्द्विन कर्मः— नासिका विधवाई, कर्णछेदन करवाया, खसी किया, दाना, घास, पानीके समयसार वार न की. लेणदेणमें किसीके घदले किसीको भूखा रखा, पासे खड़ा होकर मरवाया, कैद करवाया. सडे हुए धानको विना शोधे काममें लिया, अनाज शोधे दिना पिसवाया, धूपमें सुकाया. पानी यतनासे न छाना; ईंधन. लकड़ी, उपले, गोहेआदि विना देखे वाले, उसमें सर्प, विच्छू, कानखूजरा, किडी, मकौड़ीभादि जीवका नाश हुआ. किसी जीवको दवाया, दुःख दिया, दुःखी होते जीवको अच्छी जगहपर न रखा. चिल्ह, काग, कथूतरआदिके रहनेकी जगहका नाश किया. धौंसले तोड़े, चलते, फिरते या अन्य कुछ काम करते. निर्दयपना किया, भली प्रकार जीवरक्षा न की. विना छाने पानीसे स्नानादि कामकाज किया, कपडे धोये, यतनापूर्वक कामकाज न किया, चारपाई, खटोला, पीढ़ा, पीढ़ी आदि धूपमें रख, डंडेआदिसे झटकाये. जीव संसक्त जमीनको लौपी; दलते, कूटते, लिपते या अन्य कुछ कामकाज करते

यतना की अष्टमी, चौदसआदि तिथिका नियम तोड़ा, धूनों करवाई इत्यादि पहले स्थूल प्रणातिपात विरमणब्रत-संवंधी जो कोइ अतिचार, पश्चाद्विवसमें सक्षम या वादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्षर्द्दं ॥

दूसरे स्थूल सृपावाद विरमणब्रतके पांच अतिचार, “स-स्सा रहस्स दरे” सहसात्कारे विना विचारे एकदम कि-सीको अयोग्य आल, कलंक दिया. स्वर्णीसंवंधी गुत्तवात प्रगट की, अथवा अन्य किसीका मंत्रभेद मर्म प्रगट किया. किसीको दुखी करनेके लिए खोटी सलाह दी. ज्ञाटा लख लिखा, झूटी साक्षी दी, अमानतमें ख्यानत की, किसीकी घरोड वस्तू पीछी न दी. कन्या, गौ, भूमिसंवंधी लैन दैनमें, लंडते, ज्ञगडते वादविवादमें मोटा झट बोला. हाथ पैर आदिकी गाली दी. इत्यादि स्थूल सृपावाद विरमणब्रतसं-वंधी जो कोइ अतिचार, पश्चाद्विवसमें सक्षम या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्षर्द्दं ॥

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमणब्रतके पांच अतिचार “तेनाहृष्टप्ययोगे” घर, वाहिर, खेत, खलामें विना मालि-कके भेजे वस्तु ग्रहण की, अथवा विना आज्ञा अपने काममें ली चोरीकी वस्तु ली, चोरको सहायता दी, राज्यविरुद्ध कर्म किया, अच्छी, बुरी, सजीव, निर्जीव, नई, पुरानी वस्तुका भेल-संभेल किया जकातकी चोरी की, लेते देते तराजूकी दंडी चढाई, अथवा देते हुए कमती दिया, लेते हुए अधिक लिया रिश-वत खाई, विश्वासघात किया, ठगी की, हिसाब किताबमें किसीको धोखा दिया. माता, पिता, पुत्र, मित्र, खीआदिके साथ ठगी कर किसीको दिया, अथवा पुंजी अलाहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तुसे इन्कार किया. किसीको हिसाब, किताबमें ठगा, पड़ीहुई चीज उठाई इत्यादि स्थूल अदत्ता-

दान विरमण व्रतसंवंधी जो कोइ अतिचार, पक्षादिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

चौथे स्वदारासंतोष परखीगमन विरमणव्रतके पांच अतिचार “अप्परिगहियाइत्तर” परखी गमन किया, अधिवाहिता, कुमारी, विधवा, वेश्यादिकसे गमन किया, अनंगकीड़ा की कामआदिकी विशेष जाग्रति की. अभिलाषासे सरागवचन कहा. अष्टमी, चौदशाआदि पर्वतिथिका नियम तोडा. खीके अंगोपांग देखे, तीव्र अभिलाषा की, कुविकल्प चिंतवन किया, पराये नाते जोड़े, मुहे मुहियोंका विवाह किया, वा कराया. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, स्वम, स्वप्रांतर हुआ, कुस्वप्र आया, खी, नट, विट, भाँड़, वेश्यादिकसे हास्य किया, स्वखीमें संतोष न किया. इत्यादि स्वदारासंतोष परखीगमन विरमण व्रतसंवंधी जो कोई आतिचार, पक्षादिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

पांचमे स्थूल परिग्रहपरिमाणके पांच अतिचार “धन धन्न खित्त घत्थ” धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, सोना चांदी, वर्तनआदि. द्विपदः-दास, दासी, नौकर, चतुर्पद-गौ, बैल, घोड़ादि नव प्रकारके परिग्रहका नियम न लिया, लेकर बढ़ाया, अथवा अधिक देखकर, मूर्च्छावश माता, पिता, पुत्र, खीके नाम किया; परिग्रहका प्रमाण किया नहीं, करके भूलाया, याद न किया इत्यादि स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत-संवंधी जो कोई अतिचार, पक्षादिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

छठे दिक् परिमाणव्रतके पांच अतिचार “गमणस्सउ परिमाणे” उर्ध्वदिशि, अश्रोदिशि, तिर्यगदिशि जाने, आनेके नियमीत प्रमाण उपरांत भूलसे गया, नियम तोडा प्रमाण

उपरांत सांसारिक कार्यके लिये अन्य देशसें वस्तु मंगवाई अपने पाससें वहाँ भेजी, नौका, जहाजादि द्वारा व्यापार किया, वर्षकालमें एक ग्रामसे दूसरे ग्राममें गया, एकदिशा-के प्रमाणको कम करके, दूसरी दिशाके प्रमाणको अधिक किया, इत्यादि छड़े दिक्षपरिमाण ब्रतसंवंधी जो कोइ अतिचार, पक्षदिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्षडं ॥

सातमें भोगोपभोगब्रतके भोजनआश्री पांच, और कर्म-आश्री पंद्रह अतिचार, “सचित्तेपडीवद्वे” सचित्त खान पानकी वस्तु नियमसे अधिक अंगीकार की, सचित्तसें मिली हुई वस्तु खाई, तुच्छओपथिका भक्षण किया. अपक्व आहार, दुपक्वआहार किया. कोमल इमली, वूट, भुंडे फलियाँ आदि वस्तु खाई. सचित्त १ द्वव २ विगई ३, वाहण ४ तंबोल ५ वत्थ ६ कुसुमेसु ७। वाहण ८ सयण ९ विलेवण १०, चंभ ११ दिसि १२-न्हाण १३ भन्तेसु १४ ॥१॥ यह चौदह नियम लिये नहीं, लेकर भुलाये, चड़, पीपल, पिलंखण, कठुंबर, गूलर, यह पांचफल, मंदिरा, मांस, शहद, मक्खन, यह चार महाविर्गई, वरफ, ओले, कच्छी मिट्ठी, रातिभोजन, वहुवीजाफल, अचार, घोलवडे, द्विदल, वैगण, तुच्छफल, अजानाफल, चलितरस, अनंतकाय, यह वावीस अमृत, सूरन, जिमीकंद, कच्ची हलदी, सतावरी, कच्चा नरकचूर, अदरक, कुवारपाठ, थोर, गिलोय, लसन, गाजर, गटा, प्याज, गोंगलु, कोमलफल, फूल, पान, थेगी, हरामोत्था, अमृतवेल, सूली, पदवहेड़ा, आलु, कचालु, रतालु, पिंडालुवादि अनंतकायका भक्षण किया. सूर्योदयसें पहेले भोजन किया. तथा कर्मतः पंद्रह कर्मदान इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडिकम्मे, भाडिकम्मे, फोडीकम्मे यह पांच कर्म, दंतवाणिज्ज, लञ्जवाणिज्ज, रसवाणिज्ज, केसचाणिज्ज विसवाणिज्ज यह पांच वाणिज्ज, जंतपिलु-

णकर्म, निष्ठुर्छन्तकर्म, दद्वग्निदावणया, सरदहतलायसो सणया, असद्वप्नोसणया यह पांच सामान्य, एवं कुल पंद्रह कर्मादान, महा आरंभ किये, कराये, करते को अच्छा समझा. श्वान, विहीनादि पोषे, पाले, मंहासावद्य पापकारी कठोर काम किया. इत्यादि सातमे भोगोपभोग ब्रतसंबंधी जो कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या धादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्षडं ॥

आठमें अनर्थदंडके पांच अतिचार, “कंदप्पे कुकडप्” कंदप्पः—कामाधीन होकर नट, विट, वेश्यादिकसें हास्य, खेल, क्रीडा, कुत्रुहल किया; पुरुषके हावभाव, रूप, श्रुंगार संबंधी वार्ता की, विपर्यरसपोषक कथा की. खीकथा, देश कथा, राजकथा, भक्तकथा, यह चार विकथा की. पराई भाँजगढ़ की. किसीकी चुगलखोरी की. आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान. खांडा, कटार, कशि, कुहाड़ी, रथ, उखल, मुसल, अग्नि, चक्रीआदिक वस्तु दाक्षिण्यता वशसे किसी-को मांगी दी. पापोपदेश किया. अष्टमी, चतुर्दशीके दिन दलने पीसनेका नियम तोडा. मूर्खतासे असंबद्ध थाक्य बोला, ग्रमादाचरण सेवन किया. धी, तैल, दूध, दही, गुड, छाछ आदिका भाजन खुला रखा, उसमें जीवादिका नाश हुआ-घासी मक्खन रखा, और तपाया, न्हाते, धोते, दातण करते जीव अकुलित मोरीमें पानी डाला. झुलेमें झूला, जुआ खेला, नाटकआदि देखा, ढोर डंगर खरीदवाये, कर्कशवचन कहा, किंचकिंची ली, ताडना, तर्जना की, मत्सरता धारण की, श्राप दिया; भैसा, मैंदा, मुरगा, कुत्तेआदिक लडवाये, या इनकी लडाई देखी, क्राद्धिमानकी क्राद्धि देख ईर्षा की. मिठ्ठी नमक, धान, विनेले, विनाकारण मसले. हरीबनस्पति खुदी, शखादिक बनवाये; रागद्वेषके वशसे एकका भला चाहा, एकका धुरा चाहा, मृत्युकी वांछा की. मैना, तोते, कबुतर बटेर, चकोरादि पक्षियोंको पींजरेमें डाला. इत्यादि आठमें

अनर्थदंड विरमणवत् संवंधी जो कोइ अतिचार, पक्षे दिवसमें सूहम या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

नवमे सामायिक व्रतके पांच अतिचार “ तिविहे दुप्पणि हाणे ” सामायिकमें संकल्प, विकल्प किया, चित्त स्थिर न रखा, सावध वचन बोला, प्रमार्जन किये बिना शरीर हलाया, इधर उधर किया, शक्तिके होते हुए सामायिक न किया, सामायिकमें खुले मुह बोला, नींद ली, विकथा की, घर संवंधी विचार किया, दीपक या विजलीका प्रकाश शरीर पर पड़ा, सचित्त वस्तुका संघटा हुआ, ली, तिर्यंचआदिका निरंतर परस्पर संघटा हुआ, मुहपत्ति संघटी, सामायिक अघुरा पारा, बिना पारे उठा इत्यादि नवमे सामायिक व्रत संवंधी जो कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमें सूहम या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

दसमे देशावगासिंक व्रतके पांच अतिचार “ आणवणे पेसवणे ” आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सदाणुवाई, रुवाणुवाई, वहियापुगलपक्षेवे. नियमित भूमिमें वाहिरसे वस्तु मंगवाई, अपने पाससे अन्यत्र भिजवाई, खुंखारादि शब्द करके, रूप दिखाके वा कंकरादि फेंककर, अपना होना मालूम किया इत्यादि दसमे देशावगासिंक व्रत संवंधी जो कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमें सूहम या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

न्यारहवे पौपधोपवासवतके पांच अतिचार “ संथारुच्चारविहि ” अप्पडिलेहिअ दुप्पडिलेहिअ सिज्जासंथारप, अप्पडिलेहिअ दुप्पडिलेहिअ उच्चारपासवण भुमि, पौपधलेकर सोनेकी जगह बिना पुंजे, प्रमार्ज सोया, स्थंडिलादि की भूमि भली प्रकार शोधी नहीं, लघुनीति, वर्डीनीति करने

या परठने समय “अणुजाणहजस्सुग्गह” न कहा, परठे चाद तीन बार घोसिरे घोसिरे न कहा.. जिन मंदिर और उपाश्रम में प्रवेश करते हुए निसीहि, और बाहिर निकलते आवस्सही तीनबार न कही। बख्तादि उपधिकी पड़िले-हणा न की। पृथवीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, बनस्पतिकाय, लसकायका संघटा। हुआ, संथारा पोरिसी पढ़नी भुलाई। विना संथारे जमीनपर सोया, पोरिसीमें नौदली, पारनादिकी चिंता की, समयसर देववंदन न किया, प्रतिक्रमण न किया, पौष्ठ देरीसे लिया और जलदीसे पारा, पर्वतिथिको पौष्ठ न लिया इत्यादि ग्यारहवें पौष्ठब्रत संबंधी जोकोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह संव मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

बारहवे अतिथिसंविभाग ब्रतके पांच अतिचार “संच्च-त्तेनिकिखवणे” सञ्चित्तवस्तुके सघडेवाला अकल्पनीय आहा-रुपाणी साधु, साध्वीको दिया। देनेकी इच्छासे सदोष वस्तु-को निर्दोष कही, देनेकी इच्छासे पराई वस्तुको अपनी कही, न देनेकी इच्छासे निर्दोष वस्तुको सदोष कही, न देनेकी इच्छासे अपनी वस्तुको पराई कही। गोचरीके बक्त इधर उधर हो गया, गोचरीका समय टाला, वेवक्त साधुमहाराजकी प्रर्थना की। आये हुए गुणवानकी भक्ति न की। शक्तिके होते हुए स्वामीवात्सल्य न किया। अन्य किसी धर्म-क्षेत्रको पड़ता देख भद्र न की, दीन दुःखीकी अनुकंपा न की। इत्यादि बारहवे अतिथिसंविभागब्रतसंबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजनते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

संलेषणके पांच अतिचार “इहलोए परलोए” इह लोगासंसप्तओगे, परलोगासंसप्तओगे, जिविआसंसप्तओगे भरणासंसप्तओगे, कामभोगासंसप्तओगे, धर्मके प्रभावसे

इसलोक संवंधी राजक्रद्धि भोगादिकी वांछा की, परलोकमें देवदेवेंद्र, चक्रवर्तीआदि पदबीकी इच्छा की, सुखी अवस्थामें जीनेकी इच्छा की, दुःख आनेपर मरनेकी वांछा की. काम-भोग की वांछा की इत्यादि संलेषणा वत संवंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सुख्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

तपाचरके वारह भेद, छ बाह्य, छ अभ्यंतर “अणसव मुणोयरिया” अनशनः—शक्तिके होते हुए पर्वतिथिको उपवासादि तप न किया. उनोदरीः—दो चार ग्रास कम न खाये. वृत्तिसंक्षेपः—द्रव्य खानेकी वस्तुओंका संक्षेप न किया, रस विग्रह त्याग न किया. कायक्षेशः—लोचादि कष्ट सहन न किया. संलीनता:-अंगोपांगका संकोच न किया, पञ्चक्खाण तोड़ा, भोजन करने समय एकासणा, आंविल प्रमुखमें चौकी, पटडा, अखलादि हिलता ठीक न किया, पञ्चक्खाण पारना भूलाया, वैठते नवकार न पढ़ा, डठते पञ्चक्खान न किया; निवि, आंविल, उपवासादि तपमें कच्चा पानी पिया, वमन हुआ इत्यादि बाह्य तपसंवंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सुख्म या वादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

अभ्यंतर तप “पायच्छित्तं विणओ” शुद्धांतःकरणपूर्वक शुरुमहाराजसे आलोचना न ली, गुरुकी दी हुई आलोचना संपूर्ण न की, देव, गुरु, संघ, साधर्मिका, विनय न किया बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वीआदिकी वेयावच्च न की, वांचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुग्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पांच प्रकारका स्वाध्याय न किया, धर्मध्यान, शुद्धध्यान ध्याया नहीं, आर्तध्यान, रौद्रध्यान, ध्याया. दुःखक्षय, कर्मक्षय निमित्त दस, बीस लोगस्सका काउस्सग न किया इत्यादि अभ्यंतरतपसंवंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिव-

समें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्षडं ॥

वीर्याचारके तीन अतिचार पढ़ते, मुणते, वीनय, वैयावृच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावना दिक्क धर्मकृत्यमें मन, वचन, कायाका बलवीर्य, पराक्रम फोरा नहीं। विधिपूर्वक पंचांग खमासमण न किया, द्वादशा वर्त्त वंदनका विधी भली प्रकार न किया, अन्यचित्त निरोदरसे वैठा। देववंदन, प्रतिक्रमणमें जलदी की। इत्यादि वीर्याचार संवंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्षडं ॥

नाणाह अट्टपद्वय, समसंलेहण पञ्चर कम्मेसु ।

‘वारस तव विरिआतिगं, चउच्चसिं सय अइआरा ॥ १ ॥

“ पडिसिद्धाणं करणे ” प्रतिषेधः—अभक्ष, अनंत काय, बहुवीजभक्षण, भहारंभ, परिग्रहादि किया, देवपूजनादि पंद्रकर्म, सामायिकादि छ आवश्यक, विनयादिक आरहिंतकी भक्तिप्रमुख करणीय कार्य किये नहीं। जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचारकी सद्दृष्टि न की। अपनी कुमतिसे उत्सुत्र प्रहृष्टणा की। तथा प्राणातिपात, मृष्पावाद, अदत्तादान, मैथून परिग्रह, कोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, राति, अराति, परपरिवाद, मायामृष्पावाद, मिथ्यात्वशाल्य यह अहारह पापस्थान किये, कराये, अनुमोदे। दिन कृत्य, प्रतिक्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया औरभी जो कुछ वितरागकी आश्वासे विरुद्ध किया, कराया, करतेको भला जाना हन चार प्रकारके अतिचारमें जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकार मिच्छामि दुक्षडं ॥ एवंकारे श्रावकधर्म सम्यक्त्वमूल वारहव्रतसंबंधी एकसो चोरीस अतिचारामेसे जो कोई अतिचार, पक्ष दिवसमें

सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लंगा हो, वह सब मन, चंचन कायाकर मिच्छामि दुक्कड़ ॥

सब्बससवि पक्षिखय दुर्बृतिथ, दुधभासिथ, दुच्चिच्छिथ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥
इच्छकारि भगवन् पसायकरी पक्षिख तपप्रसाद करावोजी।
गुरुहोवेतो वो कहे जहाँ तो आपही नंचे मुजव कहे।

चउथेण एक उपवास, दो आंविल, तीन नीवि घार एका सना, आठ वेआसना, दो हजार सज्जाय यथाशक्ति तप करके पहोंचानाजी। प्रवेश किया हो तो “पद्महिंओ.” कहे और करनेका हो तो “तहन्ति.” कहे और न करनेका हो तो मात्र मौनदी रहना।

(किर दो खमासण देना)

इच्छामि खमासमणो चंदिडं जावणिज्ञाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहो कायं काय संफासं
खमाणिज्ञो भे किलामो अप्पाकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइ-
कंतो जन्ता भे जवणिज्ञं च भे खामेमि खमासमणो पक्षिखअं
वइकम्मं आवस्सिआए पडिकमामि खमासमणाणं पक्षिखआए
आसायणाए तित्तीसन्नयराए जांकिचि मिच्छाए मणदुक्कडाए
वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए
सब्बकालिआए सब्बमिच्छेवयाराए सब्बधम्माइकमणाए
आसायणाए जो मे अइथारो कओ तस्स खमासमणो पडिकमा-
मि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो चंदिडं जावणिज्ञाए निसीहिआए अणु-
जाणह मे मिउगगहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमाणिज्ञो
भे किलामो अप्पाकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो वइकंतो
जन्ता भे जवणिज्ञं च भे खामेमि खमासमणो पक्षिखअं वइकम्मं
पडिकमामि खमासमणाणं पक्षिखआए आसायणाए तित्तीसन्न-
यराए जांकिचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्क-
डाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सब्बकालिआए

सव्वमिच्छोवयाराप सव्वधम्माइक्षमणाप् आसायणाए जो
मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिकमामि निंदामि
गरिहामि अण्णाणं वोसिरामि ॥२॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पत्तेअं खामणेण अवमुहुँ
ओहं अविभतर पक्षिखअं खामेउँ ? “इच्छुँ” खामेमि पक्षिखअं
पञ्चरसादिवसाणं, पञ्चरसराइआणं, जंकिंचि अपन्तियं, परप-
त्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चां-
सणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्ज्ञ
विणय परिहिणं सुहुमो वा बायरो वा तुव्वे जाणह अहं न
याणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआप
अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं
खमणिज्जो भें किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भें पक्ष्वो
वइकंतो जन्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्षिख-
अं वइकम्मं आवस्सआए पडिकमामि खमासमणाणं पक्षिख-
आए असायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मण-
दुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए
लोभाए सव्वकालिआप सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्ष-
मणाए आसायणाए जो मे अइकारो कओ तस्स खमासमणो
पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निसीहिआप
अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं
खमणिज्जो भें किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भें पक्ष्वो-
वइकंतो जन्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्षिख-
अं वइकम्मं पडिकमामि खमासमणाणं पक्षिखआए आसाय-
णाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्क-
डाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-
कालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्षमणाए आसा-

यणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्षिखअं पडिक्कमुं, सम्मं पडिक्कमामि “इच्छं”
(ऐसा कहके फिर).

करोसिभंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पञ्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करोमि न कारवेमि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्षिखओ अइआरो कओ काइओ, घाइओ, माणसिओ उस्सुतो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्ज्ञाओ दुविचिंतिओ अणायारो अणिच्छाव्वो असावगपालग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिणहं मुत्तीणं चउणहं कसायाणं पंचणहमणुव्वयाणं तिणहं मुण व्वयाण चउणहं सिक्खावयाणं चारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जायणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्षिख सूत्र पङ्कु? “इच्छं”

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआणं, नमो उवज्ञायाणं, नमो लोए सव्वसाहुणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मं-क्षालं ॥

(यह नवकार तीन दफे गिनना, फिर साधु हो तो वह पक्षिखसूत्र कहे और न होवे तो श्रावक वंदितासुत्र कहे, वह नीचे मुजब)

वंदित्त सव्वसिज्जे, धम्मायरिए अ सव्वसाहु अ ।

इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥

जो मे व्याइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।

सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥

दुविहे परिगगहांमि, सावजो वहुविहे अ आरंभे ।
 कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पवित्रिअं सव्वं ॥ ३ ॥
 जं वद्धमिदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
 रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥
 आगमणे निगमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
 अभियोगे अ नियोगे, पडिक्कमे पवित्रिअं सव्वं ॥ ५ ॥
 संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।
 सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे पवित्रिअं सव्वं ॥ ६ ॥
 छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे य जे दोसा ।
 अच्छाय परडा, उभयट्टा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
 पंचपहमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिणहमइआरे ।
 सिवक्षाणं च चउणहं, पडिक्कमे पवित्रिअं सव्वं ॥ ८ ॥
 पढमे अणुव्वयंमि, शूलगपाणाइचायविरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ९ ॥
 वह वंध छविच्छेष, अहभारे भत्तपाणबुच्छेष ।
 पढमवयस्सइयारे, पडिक्कमे पवित्रिअं सव्वं ॥ १० ॥
 धीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलियवयणविरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ११ ॥
 सहसा रहस्सदारे, मोसुवपसे अ कूडलेहे अ ।
 धीयवयस्स अहयारे, पडिक्कमे पवित्रिअं सव्वं ॥ १२ ॥
 तहप अणुव्वयंमि, शूलगपरदव्वहरणविरईओ ॥
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १३ ॥
 तोनाहडप्पओगे, तप्पडिरुवे विरुद्धगमणे अ ।
 कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे पवित्रिअं सव्वं ॥ १४ ॥
 चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्छं परदारगमणविरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ १५ ॥
 अपरिगगहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे ।
 चउत्थवयस्स अहयारे, पाडिक्कमे पवित्रिअं सव्वं ॥ १६ ॥
 इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।

परिमाणयरिच्छेण, इत्थं पमायप्पसंगोणं ॥ १७ ॥
 धण धन्न खित्तवत्यु, रूप्प सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे ।
 दुपद चउपयंमि, पडिक्कमे पक्षिखअं सव्वं ॥ १८ ॥
 गमणस्सउ परिमाणे, दिसासु उहृढँ अहे अ तिरिङ्गं च
 बुहृढँ सइ अंतरद्वा, पढमांमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥
 मज्जांमि अ मंसंमि अ, पुष्टे अ फले अ गंधमले अ ।
 उचभोगे परिभोगे, वीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥
 सचित्ते पडिवद्वे, आपोल दुपोलिअंच आहारे ।
 तुच्छोसहि भक्तव्याया, पडिक्कमे पक्षिखअं सव्वं ॥ २१ ॥
 इंगाली वण-साडी भाडी, फोडी सुवज्जाए कम्मं ।
 चाणिज्जं चेव दंत, लक्खरसकेसर्वास वीसयं ॥ २ ॥
 एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निलुंछणं च दवदाणं ।
 सरदह तलायसोसं, असइ पोसं च वजिज्जा ॥ २३ ॥
 सत्यगिग मुसलं जंतग, तण कहे मंत मूल भेसज्जे ।
 दिवे दवा विएवा, पडिक्कमे पक्षिखअं सव्वं ॥ २४ ॥
 बहाणुवट्टण चन्नगं, वलेवणे सद्गुव रस गंधे ।
 वत्यासग आभरणे, पडिक्कमे पक्षिखअं सव्वं ॥ २५ ॥
 कंदप्पे कुक्कड्य, मोहरि अहिगरण भोगअद्विरिते ।
 दंडांमि अणव्वाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥
 तिविहे दुपाणिहाणे, अणव्वाणे तहासद्विहुणे ।
 सामाइअ वितह कप, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥
 आणवणे पेसवणे, सहे रुवे अ पुंगलक्खेवे ।
 देसावगासिअभिं, चोए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥
 संथारुद्वारविही, पमाय तह चेव भोयणा भोए ।
 पोसहविहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥
 सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छेरे चेव ।
 कालइकमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥
 सुहिपसु अ हुहिपसु अ, जामे असंजपसु अणुकंपा ।
 रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥

साहुसु संविभागो, न कथो तंवचरणं करण जुत्तेसु ।
 संते फासुयदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥

इहलोप परलोप, जीविअं मरणे अ आसंसप्पओगे ।
 पंचविहो अइआरो, मा मज्जं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥

कापण काइअस्सं, पडिक्कमे वाइअस्स वायाएं ।
 मणसा माणसिअस्स, सब्बरस सव्याइयारस्स ॥३४॥

बंदणवयस्तिक्खागा, रवेसु सन्ना कसायं दंडेसु ।
 गुत्तीसु अ समीइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥

सममदिङ्गीजिवो, जझवि हु पावं समायरे किंचि ।
 अप्पोसि होई बंधो, जेण न निदंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥

तंपि हु सपडिकमणं, सप्परिआवं सउत्तरमुणं च ।
 खिप्पं उवसामेइ, घाहिव्व सुसिक्खिथो विज्ञो ॥३७॥

जहा विसं कुट्टगयं, भंतमूलविसारया ।
 विज्ञा हणांति भंतोहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥

एवं अद्विहं कमं, रागदोस समज्जिअं ।
 आलोअंतो अ निदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥

कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निदिअ गुरुसगासे ।
 होई अइरेगे लहुओ, ओहरिअ भरुव भारवहो ॥४०॥

आवस्सएण एण, सावओ जझवि बहुरओ होई ॥
 दुक्खाणमंतकिरिअं, काहा अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥

आलोअणा वहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले ।
 मूलमुण उत्तरमुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥

तस्स धम्मस्स केवलि पञ्चत्तस्स ।
 अभुङ्गिथोमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए ।

तिविहेण पडिकंतो, बंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥

जावति चेइआई, ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू, ॥ ४५ ॥

चिर संचिय पाव पणासणीए, भवसंय सहस्स महणीए ।
 चउवीस जिण विणिगगय कहाई, बोलतुं मे दिअहा ४६ ॥

मम मंगलमरहिंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।

सम्मादिष्टिवेवा, दितु समाहिं च वोर्हि च ॥४७॥
 पडिसिद्धाणं करणे, किञ्चाणमकरणे पडिक्कमणी ।
 असद्वहणे अ तहा, विवरीयपस्वचणाए अ ॥ ४८ ॥
 खमेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
 भिन्ति मे सव्वभूपसु, वेरं मज्ज न केणइ ॥ ४९ ॥
 एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुर्गच्छुअं सम्म ।
 तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउचीसं ॥ ५० ॥
 (फिर सुअदेवयाकी स्तुति नीचे सुजब कहनी.)

सुअदेवया भगवइ, नाणावरणीय कम्म संधार्य ॥ तेसि
 खवेउ सयर्यं जेर्सि सुयसायरे भत्ती ॥१॥

(फिर नीचे वैठे दाहिणा ढीचण खडा कर नीचे सुताविक कहना.)
 नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो
 उवज्ज्ञायाणं, नमो लोप सव्वसाहुणं, एसो पंच नमुक्कारो,
 सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सेव्वेर्सि, पढमं हवइ मंगलं ॥
 करेमि भंते सामाइयं, सावजजोगं यच्चक्खामि, जावनियमं
 पञ्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न
 करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
 अप्पाणं चोसिरामि ॥

इच्छामि ठमि पडिक्कमिउं जो मे पक्किखओ अइआरो कओ
 काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अक्षप्पो अक-
 रणिज्जो दुज्ज्ञाओ दुविर्चितिओ अणायारो अणिच्छअव्वो
 असावगपाउग्गो नाणेदंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए
 तिष्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिष्हं
 गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावग
 धम्मरस जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ।
 इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥
 जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
 सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥

दुविहे परिगगहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ।
 कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्षिखअं सब्बं ॥ ३ ॥
 जं वद्धर्मिदिपहिं, चउहिं कसार्षहिं अप्पसत्थेहिं ।
 रांगेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥
 आगमणे निगमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
 अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्षिखअं सब्बं ॥ ५ ॥
 संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।
 सम्मत्स्स इआरे, पडिक्कमे पक्षिखअं सब्बं ॥ ६ ॥
 छक्षायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
 अत्तष्टा य परष्टा, उभयष्टा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
 पंचण्हमणुव्याणं, गुणव्याणं च तिण्हमइआरे ।
 सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्षिखर्थं सब्बं ॥ ८ ॥
 पढमे अणुव्यर्थंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥
 वह वंध छविच्छेष, अइभारे भत्तपाणाबुच्छेष ।
 पढमवयस्स इयारे, पडिक्कमे पक्षिखअं सब्बं ॥ १० ॥
 चीए अणुव्यर्थंमि, परिथूलगअलियवयणविरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
 सहसा रहस्स दारे, मोसुवप्से अ कूडलेहे अ ।
 धीयवयस्स अइयारे, पडिक्कमे पक्षिखअं सब्बं ॥ १२ ॥
 तद्धए अणुव्यर्थंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥
 तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरुवे विरुद्धगमणे अ ।
 कडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे पक्षिखअं सब्बं ॥ १४ ॥
 चउत्थे अणुव्यर्थंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ ।
 आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥
 अपरिगगहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे ।
 चउत्थवयस्स अइयारे, पडिक्कमे पक्षिखअं सब्बं ॥ १६ ॥
 इत्तो अणुव्यप, पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ।

परिमाणपरिच्छेष, इत्थं पमायप्पसंगोणं ॥ १७ ॥

धग धन्न खित्तवत्यु, रूप्प सुवन्ने अ कुविंथपरिमाणे ।

दुपए चउपयंभि, पडिकमे पंक्षिखअं सब्बं ॥ १८ ॥

गमणस्सउ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च ।

बुड्डि सइ अंतरद्वा, पढमंभि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥

मज्जंभि अ मंसंभि अ, पुष्के अ फले अ गंधमल्ले अ ।

उवभोगे परिभोगे, वीअंभि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥

संचित्ते पडिंवद्दे, आपोल दुप्पोलिअंच आहारे ।

तुच्छोसहि भक्खणया, पडिकमे पंक्षिखअं सब्बं ॥ २१ ॥

झंगाली वण-साडी भाडी, फोडी सुवज्जए कम्मं ।

वाणिजं चेव दंत, लक्खरसकेसवीस वीसयं ॥ २२ ॥

पवं खु जंतपिलुण, कम्मं निलंछणं च दवदाणं ।

सरदह तलायसोसं, असइ पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥

सत्थगिं मुसल जंतग, तण कहे भंत मूल भेसज्जे ।

दिन्ने दवा विएवा, पडिकमे पंक्षिखअं सब्बं ॥ २४ ॥

न्हाणुवद्दुण वन्नग, विले-वणे सद्दूव रस गंधे ।

वर्थासण आभरणे, पडिकमे पंक्षिखअं सब्बं ॥ २५ ॥

कंदप्पे कुक्कइए, मोहरि अहिगरण भोगअद्वित्ते ।

दंडंभि अणद्वाए, तहअंभि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥

तिविहे दुपपणिहाणे, अणवद्वाणे तहासहविहुणे ।

सामाइअ वितह कण, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥

आणवणे पेसवणे, सहे रुवे अ पुगलक्खेवे ।

देसावगासिअंभि, वीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥

संथारुच्चारविहीं, पमायं तह चेव भोयणा भोये ।

पोसहविहीं विघरीए, तहए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥

संचित्ते निक्षिखवणे, पिहिणे ववंएस मच्छरे चेव ।

कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥

सुहिपसु अ दुहिपसु अ, जामे असंजपसु अणुकंपा ॥

रागेण वं दोसेण व, तं निंदे तं च गहिरामि ॥ ३१ ॥

साहुसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुस्तेसु ।
 संते फासुयदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥
 इहलोप परलोप, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे ।
 पंचनिहो अहआरो, मा मज्ज्ञ हुज मरणंते ॥ ३३ ॥
 काशण काहअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ।
 मणसा माणसिअस्स, सब्बस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥
 वंदणवयसिक्खागा,- रवेसु सञ्चाकसायदंडेसु ।
 शुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अहआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥
 सम्महिडीजीवो, जइ वि हु पावं समायरह किंचि ।
 अप्पो सि होई वंधो, जेण न निद्वंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥
 तं पि हु सपडिक्कमण, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ।
 खिप्पं उवसामैइ, वाहि व्व सुसिक्खिखओ विज्ञो ॥ ३७ ॥
 जहा विसं कुडगायं, मंतमूलविसारथा ।
 विज्ञा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥
 एवं अडुविहं कम्म, रागदोससमाजिअ ।
 आलोअंतो अ निदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥
 कयपावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिथ य गुरुसगासे ।
 होइ अइरेगलहुओ, ओहरिआभरु व्व भारवहो ॥ ४० ॥
 आवस्सएण एषण, सावओ जइ वि वहुरओ होइ ।
 दुक्खाणमंतकिरिअ, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥
 आलोअणा वहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले ।
 मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥
 तस्स धम्मस्स केवलि पञ्चत्स्स ॥
 अच्छुडिथोमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए ।
 तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥
 जावंति चेहआइ०॥४४॥ जावंत के वि साह० ॥ ४५ ॥
 चिर संचिय पाव पणासणीइ, भवस्यसहस्समहणीए ।
 चउव्वीसज्जिणविणिगगय,-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥
 मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।

सरमदिही देवा, दिनु समाहिं च घोहिं च ॥ ४७ ॥

पडिसिद्धाणं करणे, किञ्चाणयकरणे पडिक्रमणं ।

असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरुचणाए अ ॥ ४८ ॥

खामेमि सद्वज्जीवे, सद्वे जीवा खमंतु मे ॥

मित्ति मे सद्वभूएसु, वेरं मज्जन न केणहि ॥ ४९ ॥

एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुर्गंलिउं सरमं ।

तिविहेण पडिक्रंतो, वंदामि जिणे चउच्चासं ॥ ५० ॥

करेमि भंते सामह्यं सावज्जं जोगं पञ्चखामि जावनियमं
पञ्जुवासामि, दुधिहं तिविहेणं सोणां दायाए काएणं न करे-
मि न कारवेमि तस्स. भंते पडिक्रमामि निदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि टामि काउसगगं जो मे पविखंओ अःआरो
कओ काइओ वाइओ माणसिओ उखुतो उरमगो अकप्पो
अकरणिज्जो दुज्जाओ दुविच्छितियो आणायारो अणि चृ-
अव्वो थसावगपाउगो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सा-
माइए तिष्ठं शुचीणं चउण्हं कसायाणं एच्छहमणुवयाणं
तिष्ठं गुणवयाणं चउण्हं सिवखादयाणं वारसविहस
सावगथमस्स जं खंडिङं जं विराहिअ तरस मिच्छा मि
दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेण पायच्छित्तकरणेण दिसोही करणेण
विस्त्रीकरणेण पावाणं कमाणं निःघादणदटाए टामि काउ-
सगगं ।

अन्नस्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं दीएणं जंभाइ-
एणं उहुएणं वायनिसगगेणं भमलिए पित्तमुच्छ्लाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहिसंचालेहिं
एवमाइएहिं आगरेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज मे काउस-
गगो जाव अरहूताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव-
कायं टाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर बारह लोगस्सका चैदेसुनिम्मलयरातक कोउस्सग करना न आवे तो अटेतार्लासि नवकार गिनने।)

लोगास्स उज्जोअगरे, धर्मतित्थयरे जिणे।

आरिहंते कित्तच्छस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

उसभमजिथं च वंदे, संभवमभिणदणं च सुमइं च।

पडमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

खुविहिं च पुणकदंतं, सीअलसिङ्गंसवाखुपुङ्गं च।

विमलमणंतं च जिणं, धर्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥

कुञ्चुं अरं च मर्लि, दंदे मुणिखुच्चवयं नमिजिणं च

वंदामि रिट्टनेमि, पासं तह वद्वगणं च ॥४॥

एवं मण अभिशुआ, चिहुयरयमला पहीणजरमरण।

चउवीसंपि जिणदरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

कित्तियवंदियमहिआ, जे ए लोगास्स उत्तमा सिद्धा।

आरुगवेहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ ६ ॥

चंदेखु निम्मलयरा, आइच्छेसु आहियं पथासयरा।

सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिर्द्धं मग दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर मुहूर्ति पडिलेहकर दो खमासमण देना।)

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहो कायं काय संफासं
खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे पक्खो
वद्वक्तो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्खि-
अं वद्वक्तमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खि-
आए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए मणदु-
क्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए
लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्क-
मणाए आसायणाए जो मे अहकारो कओ तस्स खमासमणो
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं घोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए
अणुजाणह मे मिउगगहं निसीहि अहो कायं काय संफासं

खमणिज्जो मे किलामो अप्पाकिलंताणं वहुसुभेण भे पविखओ
वइकंतो जन्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पविख-
अं वइकमं पडिकमामि खमासमणाणं पविखआए आसाय-
णाए तिच्चीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्क-
डाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वका-
लिआए सव्वमिच्छोवयराए सव्वधम्माइकमणाए आसाय-
णाए जो मे अइकारो कओ तस्स खमासमणो पडिकमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् समत्ताखामणेण अध्युष्टि-
ओमि अविभतर पविखअं खामेडं ? “इच्छं” खामेमि पविख-
अं एक पविखाणं परनसदिवसाणं, पनरसराइआणं, जंकिंचि
अपत्तियं, परपत्तियं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे,
संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए,
जंकिंचि मज्ज्ञ विणयपरिहिणं सुहुमो वा वायरो वा तुव्वभे
जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पविख
खामणा खासुं ? “इच्छं”

(ऐसा कहके प्रत्येक खामणाके पहेले एक खमासमण देकर दाहिना हाथ
चखला वा आसनपर रख शिर छुकाकर साधु न होवे तो नीचे मुताबिक
चार खामणा देना.)

॥१॥ इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पविख खा-
मणा खासुं ? “इच्छं.”

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं
नमो उवज्ज्ञायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, ऐसो पंचनमुक्कारो,
सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं;
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

॥ २ ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पवित्र
खामणा खासुं ? “ इच्छं. ”

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो
उवज्ञायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्तारो,
सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेर्सि, पढमं हवइ मंगलं,
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

॥ ३ ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्जाए निसी-
हि-आए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पवित्र
खामणा खासुं ? “ इच्छं. ”

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो
उवज्ञायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्तारो,
सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेर्सि, पढमं हवइ मंगलं,
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

॥ ४ ॥ इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पवित्र
खामणा खासुं ? “ इच्छं. ”

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो
उवज्ञायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्तारो,
सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेर्सि, पढमं हवइ मंगलं,
सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छामो अणुसर्हि पवित्रअं सम्पत्तं देवसिं भणामि.

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिज्जाए निसीहि-आए
अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं
खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो
वइकंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देव-
सिं वइकमं आवस्सिआए पडिक्रमामि खमासमणाणं देव-
सिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिचि मिच्छाए
मणदुक्डाए वयदुक्डाए कायदुक्डाए कोहाए मायाए

लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधर्माइक्क मणाए आसायणाए जो मे अह्यारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण बोलिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासै खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वहुकंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देव-सिअं वहुक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसव्वयराए जांकिचि मिच्छाए मणहुक्कडाए वयडुक्कडाए कायहुक्कडाए कोहाए मणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयराए सव्वधर्माइक्कमणाए आसायणाए जो रो अह्यारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वेसिरामि ॥

इच्छाकारेण संविसह भयवत् अभुहिओमि अर्थमतर देवसिअं खामेउ ? “ इच्छे ” खामेमि देवसिअं जांकिचि अप-सिअं, परपसिअं, भन्ते, पाणे, विणएं, वैयावचि, यालत्वे संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उचरिसासाए, जांकिचि भज्ज विणयपरिहिणं सुहुमो वा यायरो वा तुव्वमे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छा मि हुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासै खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वहुकंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देव-सिअं वहुक्कमं आवरिसिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देव-सिआए आसायणाए तित्तीसव्वयराए जांकिचि मिच्छाए मण-हुक्कडाए वयहुक्कडाए कायहुक्कडाए कोहाए मणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयराए सव्वधर्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अह्यारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण बोलिरामि ॥

इच्छामि खगासमणो वंदिं जाचेणिज्ञाए निसीहिआए
अणुजाग्रह मे मिउगगहं निसीहि अहो कायं काय संफासं
खमणिज्ञो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो
बहकंतो जन्ता भे जवाणिज्ञं च भे खामेमि खगासमणो देवसिअं
बहकमं पडिक्कमामि खगासमणाणं देवसिआए आसा-
यणाए तित्तीसन्नयराए जंकिनि मिच्छाए मणदुक्कडाए वय-
दुक्कडाए काथदुक्कडाए कोहाए मायाए मायाए लोभाए सव्वका-
लिआए सव्वभिच्छोवयाराए सव्वभ्रस्मा क्षमणाए आसायणाए
जो मे अहआते कओ तस्स खगासमणो पडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

आयरियउवज्ञाए, सीसे साहामिए कुलगणे थ ।

जे मे केह फसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥

सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करिथ सीसे ।

सव्व खगाद्वित्ता, खगामि लव्वरस अहयं पि ॥ २ ॥

सव्वस्स जीवरासिरस, भावओ धमनिहिअनिअचिंतो ।

सव्व खगाद्वित्ता, खगामि लव्वरस अहयं पि ॥ ३ ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पञ्चक्खामि जावानियमं
पञ्जुवासामि दुविहं तंविहेण मणेण वायाए कायेण न करेमि
न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काडस्सग्गं जो भे देवसिओ अहआरो कओ
काइओ चाहओ माणसिओ उस्सुत्तो उस्सग्गो अकप्पो अकर-
णिज्ञो दुज्जाथो दुविहितिज्ञो अणायारो अणिच्छाव्वो
असावगपाउणो नागे दंसणे वरित्ताचरिते लुए सामाइय
तिष्ठं गुर्तीणं चउष्ठं कसायाणं पंचणहमणुवयाणं तिष्ठं गुण-
वयाणं चउष्ठं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधमस्स
जं खंडिथं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेण पायछित्तकरणेण चिसोहीकरणे पं
विस्लीकरणेण पावणं कस्माणं निग्धायणडाए ठामि का-
उस्सग्गं ।

अन्नस्थ उससिएणं नीससिएणं' खासिएणं छीएणं जंभाइ-
एणं उडुएणं वायनिसगेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहिसंचा-
लेहिं एवमाइरहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहियो हुज्ज मे
काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आवे तो! आठ नवकार गिनने.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थये जिणे ।

अरिहंते कित्तद्दर्सनं, चउवीसं पि केवर्दी ॥ १ ॥

उसभमजिथं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमईं च ।

पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं दंदे ॥ २ ॥

सुविहिं च पुण्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च ।

विमलमणंतं च जिणं, धम्मं सांति च वंदामि ॥ ३ ॥

कुंथुं अरं च माहिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिज्जिणं च ।

वंदामि रिहनेसि, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

इवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।

चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

कित्तियवंदियमाहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा

आरुग्गवोहिलामं, समाहिवरमुत्तमं दिन्तु ॥ ६ ॥

चंदेसु निमलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।

सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सच्चलोए अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्ग वंदणवत्ति-
आए पूथणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए
चोहिलाभषत्तिआए निरुवसगगवत्तिआए सद्वाए मेहाए
धीईए धारणाए अणुप्पेहाए वडूमाणीए ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नस्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभा-
इएणं उडुएणं वायनिसगेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहिसंचा-

लेहि एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे
काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नसुक्कारेणं न पारेमि
तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका न आवे तो चार नवकारका काउस्सग्ग करना
फिर)

पुक्खरवरदीवहै, धायइसंडे अ जंघुदीवे अ ।

भरहेरवयचिदेहै, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥

तमतिमिरपडलविञ्च्छ-, सणस्स सुरगणनर्दिमहियस्स ।

सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥

जाइजरामरणसोगपणासणस्स,

कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स ।

को देवदाणवनर्दिगणच्चियस्स,

धम्मस्स सारमुवलब्म करे पमायं ॥ ३ ॥

सिद्धे भो पयओ णमो जिणमये नंदी सथा संजमे ।

देवंनागसुवज्ञकिन्नरगणस्सभूअभावच्चिप ॥

लोगो जस्थ पइहिओ जगामिणं तेजुक्कमच्चासुरं ।

धम्मो बहुउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं बहुउ ॥ ४ ॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए

पूथणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए वोहि-

लाभवत्तिआए निरुवस्सग्गवत्तिआए सद्गाए मेहाए धीईए

धारणाए अणुप्पेहाए बहुमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नतथ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
एणं उहुएणं वायनिस्सगेणं भमलिय पित्तमुच्छाए सुहुमेहि
अंगसंचालेहि सुहुमेहि खेलसंचालेहि सुहुमेहि दिहिसंचा-
लेहि एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे
काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नसुक्कारेणं न पारेमि
तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका न आवे तो चार नवकारका काउस्सग्ग करना, फिर)

सिद्धराणं बुद्धराणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ।
लोअगगसुवयायाणं, नमो सद्या सच्चसिद्धराणं ॥ २ ॥

जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसांते ।
तं देवदेवमहिमं, सिरस्त वैदे महावीरं ॥ २ ॥

इकोवि नमुक्तरो, जिणवरवरलहस्त वज्रमणस्त ।
संसारसागरभो, तरेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥

उजिंतसेलसिद्धरे, शिक्कार जाणं निरुद्धिभ्या जास्त ।
तं थग्मचक्कद्विं, अस्तित्वेभिं नमंसामि ॥ ४ ॥

चत्तारि अठ दस दो य, वंदियः जिणवरद चउव्वीरं ।
परमठुनीडिअडा, सिद्धा सिद्धि लम दिस्तु ॥ ५ ॥

सुब्रणदेवयाए करेमि काउस्तर्ण । अन्नथ उससिद्धणं
बीससिद्धणं खासिद्धणं छीएण जंभाइएण उहुएणं वायनिस-
गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए लुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं
खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहिसंचालेहिं एवमाइहि आगरेहिं
अभग्गो अविराहिओ हुज्ज से काउसग्गो जाव अरिहंताणं
भगवंताणं नमुक्तरेणं न पारेरि तावकायं ठाणेणं मोणेणं
झाणेणं अप्याणं वौसिरामि ॥

(एक नवकारका काउसग्ग करे तदेव वौसिरामि ॥ हृष्टव्येष्याप्या-
यसर्वसाधुर्यः कहकर किर स्तुति कहनी)

क्षानादिगुणयुक्तानाम्, भिर्व्य रवाध्यायसंवमरतानाम् ।

विदधातु मुक्तनदेवी, शिवं सदा सर्वं सद्गुभाम् ॥ १ ॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्तर्ण । अन्नथ उससिद्धणं बीस-
सिद्धणं खासिद्धणं छीएण जंभाइएण उहुएणं वायनिसगेणं
भमलिए पित्तमुच्छाए लुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेल-
संचालेहिं लुहुमेहिं दिहिसंचालेहिं एवमाइहि आगरेहिं
अभग्गो अविराहिओ हुज्ज से काउसग्गो जाव अस्तित्वेभिं
भगवंताणं नमुक्तरेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं
झाणेणं अप्याणं वौसिरामि ॥

(एक नवकारका वाउस्सग करके नमोऽर्हतस्तिद्वाचायीयाध्याय
सर्वसाधुभ्यः कहकर फिर स्तुति कहनी)

यस्याः क्षेत्रं समाधित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ॥

सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयाज्ञः सुखदायिनी ॥ १ ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो
उवलक्ष्याणं, नमो लोष सद्वसाहृणं, एसो पंचनसुकारो,
सद्वपावप्पणास्त्रणो, मंगलाणं च सद्वेस्ति, पढ़मं हवह
मंगलं ॥

(फिर छहे आवश्यककी सुहृपति पड़िलेहके दो खमास-
मण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहियाए
अणुजाणह मे मिउगहवं निसीहि अहो कायं काय संफासं
खमणिज्ञो मे किलासो अप्पक्लिंताणं वहुसुभेण मे दिवसो
वद्धकंतो जन्ता मे जवणिज्ञं च मे खायेमि खमासमणो देव-
सिअं वद्धकमं आवसिअए पद्धिक्षमामि खमासमणाणं देव-
सिअए आसायणाए तित्तीसद्वयराए जंकिंचि मिच्छाए मण-
दुक्षडाए वयदुक्षडाए कायदुक्षडाए कोहाए माणाए मायाए
लोभाए सद्वकालिअए सद्वमिच्छोवयाराए सद्वधरमाइक्ष-
मणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स समासमणो
पाविक्षमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहियाए
अणुजाणह मे मिउगहवं निसीहि अहो कायं काय संफासं
खमणिज्ञो मे किलासो अप्पक्लिंताणं वहुसुभेण मे दिवसो
वद्धकंतो जन्ता मे जवणिज्ञं च मे खायेमि खमासमणो देव-
सिअं वद्धकमं पद्धिक्षमामि खमासमणाणं देवसिअए
आसायणाए तित्तीसद्वयराए जंकिंचि मिच्छाए मण-
दुक्षडाए वयदुक्षडाए कायदुक्षडाए कोहाए माणाए मायाए
लोभाए सद्वकालिअए सद्वमिच्छोवयाराए सद्वधरमाइक्ष-

मणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्त खमासमणो
पडिकमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण बोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक चउविस्तया ।
बंदनक पडिकमण, काउरसग, पञ्चक्षवाण किया है जी

(ऐसा कहकर फिर)

इच्छामो अणुसर्दि नमोखमासमणाण, नमोऽर्हतसिद्धा-
चायांपाद्यायसर्वसाधुभ्यः

(पुरुषवर्ग नमोस्तु वर्द्धमानाय और लियां संसारदावाको तीन त्तुति कहेवे)

नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्मणा ।

तज्जयवात्मोक्षाय, परोक्षाय कुर्तीर्थिनाम् ॥ २ ॥

येपां विकचारविदराज्या, ज्यायःक्रमक्रमलावर्लिद्धत्याः ।
सद्वशैरातिसंगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिन्द्राः॥३॥
कपायतापादितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जेन मुखांयुद्दोद्धतः ।
स श्रुकमासोऽङ्गवृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टि मयि विस्तरो
गिराम् ॥४॥

नमुत्त्युणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ ५ ॥ आइगराणं तित्थ-
यराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ ६ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
पुरिसवर्गपुंडरीआणं, पुरिसवर्गंधहृथीणं ॥ ७ ॥ लोमुत्तमाणं
लोगनाहाणं लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं॥८॥
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, भगदयाणं, सरणदयाणं, वोहि-
दयाणं ॥ ९ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवटीणं ॥ १० ॥ अप्पडि-
हयवरनाणद्सणधराणं, विअहुछउमाणं ॥ ११ ॥ जिणाणं,
जावयाणं, तिज्ञाणं तारयाणं, बुद्धाणं वोहियाणं, मुत्ताणं
मोअगाणं ॥ १२ ॥ सव्वच्छूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरु-
अमणतंमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं
संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ १३ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ।
 संपह अ वद्माणा, सब्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावणिजाए निसीहिआय
 मथएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् स्तवन भणुः ।
 “ इच्छुः ”

(नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ऐसा कहे अजित
 शातिका स्तवन बोलना ।)

(स्तवन)

अजिञ्चं जिअसव्वभयं, संति च पर्संतसव्वगयपाचं ।
 जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा)

वव्वगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे ।
 निरुवयमहप्पभावे, थासामि सुदिङ्गुसव्वभावे ॥ २ ॥ (गाहा)

सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं ।
 सया आजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो)

आजिआजिण सुहप्पवत्तणं, तव एुरिसुत्तम नामकित्तणं ।
 तह य धिद्महप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥

(मागहिआ)

किरिआविहिसंचिअकम्माकिलेसाविमुकखयरं ।
 अजिञ्चं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं ।
 अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं ।
 सयर्यं भम निव्वद्वाकारण्यं च नमंसण्यं ॥ ५ ॥ (आलिंगण्य)

पुरिसा जद्व दुक्खवारणं, जद्व य विमगगह सुखखकारणं ।
 अजिञ्चं सर्ति च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जह ॥ ६ ॥

(मागहिआ)

अरद्वरद्विमिरविरहिअमुवरयजरमरणं,
 सुरअसुरगरुलभुयगवद्वप्ययपणिवद्वयं ।
 अजिअमहमवि अ, सुनयनयनिउणमभयकरं,

सरणमुवसारेऽ सुविदिविजमहिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥
 (संगययं)

तं च जिषुत्तम मुत्तमनित्तमसत्तधरं,
 अज्जवमद्वलंतिविसुन्तिसमाहिनिहि,
 संतिकरं पणमामि दमुत्तमतिथयरं,
 संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ (सोवाणयं)
 सावत्थिपुवपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थवित्थिज्ञसं-
 थियं, थिरसारित्थवच्छं यथग ललीकायमणवरगंधहत्थिपत्था-
 णपत्थियं संथवारिहं । हत्थिहत्थवाहुं धंतकणगरुअगनिरुवह-
 यर्पिजरं पवरलक्षणोवियस्तोमवारुज्जवं, चुइसुहमणाभिरा-
 मपरमरमागिज्ञवरदेवदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥ ९ ॥
 (वेद्हओ)

अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं ।

पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥

(रासालुद्धओ)

कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पठमं तओ. महाचक्कवद्धि-
 भोए महप्पभाधो, जो यावत्तरिपुरवरसहस्रवरनगरनिगमजण-
 वयवई वत्तीसारायवरसहस्राणुयायमग्गो । चउदसवररय-
 णनवमहानिहिचउसहिसहरसपवरजुन्वर्द्दण सुंदरवई, चुलसी-
 हयगयरहसयसहस्रसामीं छन्नवइगामकोडीसामी आसिजो.
 भरहंमि भयवं ॥ ११ ॥ (वेद्हओ)

तं संति संतिकरं, संतिणं सव्वभया ।

संति थुणामि जिणं, संति विहेउ मे ॥ १२ ॥ (रासानंदियं)

इक्खागं विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा,

नवसारयसासिसकलाणण विगयतमा विहुअरया ।

अजि उत्तम तेअमुणेहि महामुणिअमिअवला विउलकुला,
 पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं ॥ १३ ॥

(चित्तलहा)

देवदाणविद चंदखुरवंद हृष्टुहृजिह्वपरम-
लहृरूप धंतरूपपट्टसेथसुद्धनिद्धधवल-
दंतयंति सांति सत्तिकात्तिमुत्तिज्ञातिशुगुत्तिपवर ।
दित्ततेऽवंद धेअ सत्त्वलोअभावियप्पमाव ऐअ पद्म मे
समाहि ॥१४॥ (लारायओ)

विमलससिकलहरेअसोमं, वित्तिमिरसूरकराइरेअतेअं ।
तिअसव्वगणादरेअस्वं, धरणिधरपवराइरेअसारं ॥ १५ ॥
(कुसुमलया)

सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ वले अजिअं ।
तवसंजमे अ अजिअं, एस शुणागि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥
(भु श्रगपरिरिंगिअं)

सोमगुणेहि पावइ न तं शब्दसरयससी,
तेऽग्नेहि पावइ न तं नवसरयरवी ।
खदगुणेहि पावइ न तं तिअसव्वगणवर्ज,
सारगुणेहि पावइ न तं धरणिधरवर्ज ॥ १७ ॥ (खिजिअं)
तित्थवरपवत्तयं तम रयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकालि-
कलुसं । संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयओ, संतिसहं महामुणि
सरणरमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअं)

विणओणयसिरहृअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं,
विवुहाहिवधणवहृनरवहृथुअमहिअच्चिअं वहुसो ।
अहृसगग्यसरयादिवायरसमहिअसप्पमं तवसा ।
गयणंगणवियरणसमुहृअवारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥
(किसलयमाला)

असुरगहलपरिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं ।
देवकोडिसयसंथुअं, समणसंघपरि वंदिअं ॥२०॥ (सुमहं)
अभयं अणहं, अरयं अरयं ।
अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्ञुविलसिअं)

आगया वरविमाणदिव्यकणग,-रहतुरथपहकरसपर्हि
हुलिअं । ससंभमोअरणखुभिअलुलिअचल,-कुँडलंगयतिरी-
डसोहंत मउलिमाला ॥ २२ ॥ (वेहूओ)

जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ताभन्तिसुजुत्ता,
आयरभूसिअसंभंमपिंडिअसुद्धुभुविहिअसव्ववलोधा ।

उत्तमकंचणरथणपल्लविअभासुरभूसणभासुरिअंगा,
गायसमोणय भन्तिवसागय, पंजलिपेसियसीसपणामा ॥ २३ ॥
(रथणमाला)

वंदिऊण थोऊण तो जिण, तिगुणमेव य पुणो पयाहिण ।
पणमिऊण य जिण सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया
॥ २४ ॥ (खित्तयं)

तं महामुणिमहं पि पंजली, रागदोसभयमोहवंजिअं ।
देवदाणवनरिदवंदिअं, संतिमुत्तममहातवं नमे ॥ २५ ॥

(खित्तयं ।)

अंगरतरविआरिणिआहिं, ललिअहंसवहूगामिणिआहिं ।
पीणसोणिथणसालिणिआहिं, सकलेकमलदललोअणिआहिं
॥ २६ ॥ (दीवयं)

पीणनिरंतरथणभरविणमियगायलआहिं,
मणिकंचणपासिठिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं ।

वररिंखिणिनेउरसतिलयवलयविभूसणिआहिं,
रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥ २७ ॥ (चित्तक्खरा)

देवसुदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा
कमा,अणणो निडालणहिं मंडणोङ्गणपगारपहिं केरिंह केरिंह वि
अवंगतिलयपन्तलेहनामयहिं चिल्लपर्हि संगयंगयाहिं, भन्तिसं-
न्निविहंवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥

(नारायओ ।)

तमहं जिणचंदं, आजिअं जिअमोहं ।

ध्युयसव्वकिलेसं, पयओ पणमाणि ॥ २९ ॥ (नंदिअयं ।)

शुअवंदिअस्सा रिसिगणदेवगणोहिं,

तो देववहृहिं पयथो पणमिअस्सा ।

जस्सजमुन्तमसासणअस्सा भन्तिवसागयर्पिडिअयाहिं ।

देववरच्छरसावहुआहिं सुरवररइगुणपांडियआहिं ॥ ३० ॥

(भासुरत्य)

वंससहतंतितालमोलिए तिउक्खराभिरामसहमीसए कए-
अ, सुइसंमाणणे अ सुद्धसज्जगीयपायजालंधंटिआहिं । वलय-
मेहलांकलावनेउराभिरामसहमीसए कए अ, देवनटिआहिं
हावभावविब्भमंपपगारणहिं नच्चिऊण अंगंहारंपहिं । वंदिआ
य जस्स ते सुविक्षमा कमा तयं तिलोयसव्वसत्संतिकारयं,
पसंतसव्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुन्तमं जिणं ॥ ३१ ॥

(नारायओ)

छत्त वामरपडागज्ज्ञअजवर्मांडिआ,
झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा ।

दीवसमुद्भमंदरदिसागयसोंहिआ,
सत्यिअवसहसीहरहचक्खवरंकिया ॥ ३२ ॥ (ललिथयं)

सहावलहुा समप्पइहुा, अदोसदुहुा गुणेहिं जिहुा ।

पसायसिहुा तवेण पुहुा, सिरीहिं इहुा, रिसीहिं जुहुा ॥ ३३ ॥

(वाणवासिआ)

ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया ।

संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया ॥ ३४ ॥

(अपरांतिका)

एवं तवबलविउलं, शुअं मए अजिअसंतिजिणजुअलं ।

ववगयकमरयमलं, गां गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥

(गाहा)

तं वहुगुणपसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं ।

नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसा वि अ प्पसायं ॥ ३६ ॥

(गाहा)

तं मोण्ड अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं ।

परिसा वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥
(गाहा ।)

पक्षिखय चाउमासिथ, संचच्छारिष अवस्स भणिअव्वो ।
सोअव्वो सब्बेहिं, उवसगगनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ (गाहा)
जो पढ़इ जो अ निसुणइ, उभथोकालं पि अजिअसंतिथर्थाँ
न उ हुंति तस्स रोगा, पुब्बुप्पन्ना वि नासंति ॥ ३९ ॥

(गाहा ।)

जइ इच्छाह परमययं, अहवा किर्ति सुवित्थडं भुवणे ।
ता तेलुक्कुञ्चरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ (गाहा)
वरकनकशंखविद्रुम,—मरकतघनसन्निभं विगतमोहम् ।

सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं बन्दे ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । भगवान हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । आचार्य हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । उपाध्याय हं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । सर्वसाधु हं ।

(फिर दाहिना हाथ चखला अथवा आसनपर रखके बडील हो
वह अहूआइजेसु कहे ।)

अहूआइजेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमिसु, जावंत
केवि साहू रथहरणगुच्छपडिगहधारा, पंचमहव्यव्यधारा
अहूरससहस्रसीलंगधारा, अवख(क्खु) यायारचरित्ता, ते
सब्बे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिथ-
पायचिछत्तिविसोहणत्थं करमि काउस्सगं ।

अन्नतथ्य उससिएणं नीसासिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
एणं उहुएणं वायनिसगोणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेर्हि
अंगसंचालेहिं सुहुमेर्हि खेलसंचालेहिं सुहुमेर्हि दिट्ठिसंचालेहिं
एवमाइएहिं आगारेहिं अभगगो अविराहिओ हुज्ज मे काउ-
स्सगो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव-
कार्य ठाणेणं भोणेणं झाणेणं अप्पाणं बोसिरामि ॥

(चार लोगस्स न आवे तो सोलह नवकारका काउसग करके प्रगट
लोगस्स करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ॥

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिण्दणं च सुमईं च ।

पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

खुविहिं च पुण्फदंतं, सीअलसिज्जंसधासुपुज्जं च ।

विमलमणंतं च जिणं, धम्मं सांति च वंदामि ॥ ३ ॥

कुंथुं अरं च माल्हि, वंदे मुणिसुब्बयं नमिजिणं च ।

वंदामि रिण्नेमिं, पास तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

एवं मए अभिथुआ, विहुयरथमला पहीणजरमरणा ।

चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

कित्तिय वंदिय महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा
आरुग-बोहिलाभं समाहिवरमुक्तमं दिंतु ॥ ६ ॥

चंदेसु निमलयरा, आइच्चेसु आहियं पयासयरा ।

सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय
संदिसाहुं ? “ इच्छं ”

इच्छामि खमासमणो वंदिडं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय
यदुः ? “ इच्छं ”

“ नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयस्तियाणं नमो उव-

ज्ञायाणं नमो लोए सब्बसाहूणं । एसो पंचनसुक्तारो सन्व-
पावप्पणासणो मंगलाणं च सब्बेत्सि पढमं हवइ मँगलं ॥
उबसगगहरं-पासं, पासं वंदामि कम्मधणसुकं ।
विसहरविसनिज्ञासं; मंगलकल्पाणआवासं ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गहरोगमारी, दुड्जरा जांति उवसामं ॥ २ ॥
चिड्डु दूरे मंतो, तुज्ज पणामो वि वहुफलो होइ ।
नरतिरिष्टसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगचं ॥ ३ ॥
तुहं सम्मते लछे, चिंतामणिकग्यपायवभाहिए ।
पावंति अविगद्येण, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इथ संयुओ महायस; भतिभरनिभरेण हिथएण ।
ता देव दिज्ज बोहैं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥
संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणेसमीरं ।
मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारथीरं ॥ ६ ॥

भावावनामसुरदानवमानवेन,
चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ।
संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि,
कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥
वोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं ।
जीवाहिंसाऽविरललहरीसंगमागाहदेहं ।
चूलावेलं मुरुगममणीसंकुलं दूरपारं ।
सारं वीरागमजंलनिर्धि सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥
आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीदलोलालिमाला,
झंकारारावसारामलदलकमलगारभूमिनिवासे ।
छायासंभार सारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे,
वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारं ॥ ४ ॥
नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो
उवज्ञायाणं, नमो लोए सब्बसाहूणं, एसो पंचनसुक्तारो,
सब्बपावप्पणासणो, मंगलाणं च सब्बेत्सि, पढमं हवइ मँगलं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहिआष
मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् दुक्खक्षय
कम्मक्षय निमित्तं करेमि काउस्सगं ।

अन्नत्थ उससिएण नीससिएण खासिएण छीएण जंभास्त-
एण उहुएण वायनिसगेण भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिहिसंचालेहिं
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुजा मे काउस्स-
ग्गो जाव आरिहंताणं भगवंताणं नसुक्षारेणं न पारेमि ताव-
कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं चोसिरामि ॥

(चार लोगस्स वा सोलह नवकारका काउसगग करना गुरु अथवा
बड़ीलकी आज्ञा जिसको भिली हो वह नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यों-
पाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहकर बड़ी शांति कहे ।)

भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्,
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ।
तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा,-
दारोऽग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविघ्वंसहेतुः ॥ १॥

भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां, सम-
स्ततीर्थकृतां जन्मन्यासंनयकम्पानन्तरंमवधिनां विज्ञाय, सौध-
र्माधिपतिः सुधोषाधण्टाचालनानन्तरं सकलं सुरासुरेन्द्रैः सह
संमागत्य, सविनयमर्हद्वारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिं-
शृंगे, विहितजल्माभिषेकः शान्तिमुद्घोपयति यथा ततोऽहं-
कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः इति
भव्यजनैः सह समेत्यसात्रपीठे स्वाशं विधाय [अधुना]
शान्तिमुद्घोपयामि तत्पूजायात्रास्त्रात्रादिमहोत्सवानन्तरमिति-
कृत्वा कण द्रत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्व-

क्वा: सर्वदर्शीनविलोकनाथाविलोकमहिताविलोकपूज्याखि-
लोकेश्वराखिलोकोद्योतकरः ॥

[ॐ]ऋषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन-सुमति-पश्चप्रभ-सुपाश्व-
चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म-
शान्ति-कुन्त्य-अर-महि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पाश्व-वर्जमाना-
न्ताः जिनाः शान्ताः शान्तिकराः भवन्तु स्वाहा ।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु
रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ॐ [श्री न्ही] न्हीं श्रीं धृति-मति कीर्ति-कान्ति-वृद्धि-ल-
हमी-मेधा-विद्या-साधन-प्रवेशन-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो
जयन्तु ते जिनेद्राः ।

ॐ रोहिणी-प्रश्नसि-बज्रस्त्रुखला-वज्रांकुशी-भप्रतिचक्रा-पुरु-
षदत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गान्धारी-सर्वाख्या-महाज्वाला-
मानवी-वैरुष्ण्या-अच्छुप्ता-मानसी-महामानसी पोडश विद्या-
देव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्य स्य श्रीश्रमणसंघस्य
शान्तिर्भवतु, तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।

ॐ ग्रहाश्वन्द-सूर्योगारक-वुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-
राहु-केतुसहिताः सलोकपालाः सोम-यम वरुण-कुवेर-वास-
वादित्य-स्कन्द विनायकोपेताः ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षे-
लदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीणकोष्ठागारा-
नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ।

ॐ षुत्र-मित्र-ध्रातृ-कलत-सुहृद-स्वजन-संवन्धि-बन्धुवर्ग-
सहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः अस्मिंश्च भूमण्डला-
यतननिवासिसाधु-साधी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्ग-

व्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाथ शान्तिर्भवतु ।

ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्वि-चृद्वि-मांगल्योत्सवाः संदा प्रादुर्भूतानि पापानि [दुरितानि] शाम्यन्तु दुरितानि [पापानि] शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने ।

तैलोक्यस्यामराधीश,-मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥

शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ।

शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥

उन्मृष्टिरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःखप्रदुर्भिर्मित्तादि ।

संपादितहितसंप,-नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥

श्रीसंघजगजनपद, राजाधिपराजसन्निवेशानाम् ।

गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैव्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥

श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, [श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु]

श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भ-

वतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, श्रीपौरमुख्यानां शान्तिर्भ-

वतु, श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भ-

वतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपाश्वेनाथाय स्वाहा ।

एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्राक्षात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा, कुंकुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवासकुसुमाज्जलिसमेतः स्नान्त्रचतुष्किककार्यां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुण्यवस्त्रचन्दनाभरणाऽलंकृतः पुण्यमालां कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा, शान्तिपानीर्यं मस्तके दातव्यमिति ।

नृत्यन्ति नित्यं मणिपुण्यवर्धं,

सूजन्ति गायन्ति च मंगलानि ।

स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्,

कल्याणभाजो हि जिंगाभिषेके ॥ ५ ॥

शिवमस्तु सर्वजगतः, पराहितनिरता भवन्तु भूतगणाः
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत सुखीभवेन्तु लोकाः ॥ २ ॥
अहं तित्थयरमाया, शिवादेवी तुम्हनयरनिवासिनी ।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोक्तसमं सिवं भवेन्तु स्वाहाऽ ॥
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विद्यद्वल्यः ।
मनः प्रसन्नतामेति, गौड्यमाने जिनेश्वरं ॥ ४ ॥
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयोति शासनम् ॥ ५ ॥
(फिर शेष सर्व काउसगं पारे और एक जन प्रगट लोगस्स कहे)

लोगस्स उज्जोअगरे, धर्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तिइस्तं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभमजिअं च वंदे, सेभदमभिण्दणं च सुमहं च ।
पउमधंहं सुपासं, जिणं च चैदपपहं वंदे ॥ २ ॥
सुविहिं च पुण्डदंतं, सीअलसिङ्गं सवासुपुङ्गं च ।
विमलमण्टं च जिणं, धर्मं संति च दंदाभि ॥ ३ ॥
कुंथु अरं च माल्हि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥
वंदाभि रिहुनेर्मि, पासं तह चद्माणं च ॥ ४ ॥
एवं मण अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
कित्तियवेदियमहिआ, जे प लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुगवोहिलार्म, समाहिवरमुक्तमं दितु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइब्बेसु आहियं पयासयरा ।
सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥
॥ इति श्री पाष्ठिक प्रतिक्रमणका विधि संपूर्ण ॥
अब चउमासी प्रतिक्रमणका विधि नीचे मुताविक
फेरफारसे समझना ॥

(१) पाष्ठिक प्रतिक्रमणमें खमासमणमें जिस जिस जगह “एकलो बहकंतो, पक्षिलं वशकम्मं” और “परिक्षिलआए आसायणाए” ऐसा कहते उस जगह “चउ-

^१ भवतु लोकः इति पाठान्तरम्

मासो वशकंतो ” “ चउमासिअं वशकममं ” ओर “ चउमा-
सिअए आसायणाए ” ऐसा कहना.

(२) वंदित्तासूत्रमें “ पाडिकमे पवित्रिअं सव्वं ” की
जगह “ पाडिकमे चउमासिअं सव्वं ” ऐसा कहना.

(३) अतिचारमें “ पाक्षिक अतिचार पढुं ? पक्ष
दिवसमें जो कोई अतिचार लगा हो ” उस जगह “ चउमा-
सिअ अतिचार पढुं ? ” और ” चउमासी दिवसमें जो कोई
अतिचार लगा हो ” ऐसा कहना.

(४) पाक्षिक प्रतिकमणमें “ पत्तेय खामणेण, संबु-
द्धा खामणेण, सम्मन्ता खामणेण ” वह प्रत्येकमें “ एक-
पक्षखाण, पञ्चरस दिवसाण, पञ्चरस राइआण ” कि जगह ”
चार मासाण, आठ पक्षखाण, एकसो वीस राइदिवसाण ”
ऐसा कहना और ” पवित्रिअं खासुं ? ” कि जगह “ चउ-
मासिअं खासुं ? ” ऐसा कहना.

(५) पाक्षिक प्रतिकमणमें “ पवित्रिअं तपप्रसाद करोजी ”
वहाँ “ चउत्थेण एक उपवास, दो आयंविल, तीन निवि, चार
एकासना, आठ वेआसना, दो हजार सज्जाय, यथाशक्ति
तप करके पहोंचाना ” कि जगह “ छट्टेण, दो उपवास, चार
आयंविल, ” छह निवि, आठ एकासना, सोलह विआसना
चार हजार सज्जाय यथाशक्ति तप करके पहोंचाना ऐसा
कहना.

(६) “ पवित्रिसूत्र पढुं ? ” कि जगह “ चउमासी सुत्र
पढुं ? ” ऐसा कहना.

(७) पाक्षिक प्रतिकमणमें बारह लोगस्सके काउस्स-
गकी जगह यहाँपर वीस लोगस्सका काउस्सग
करना.

(८) फिर “ इच्छामि ठामि ” वगैरह सूत्रोमै जहाँ
जहाँ ” पवित्रिअं शाष्ट्र आतो है वहाँ वहाँ चउमासिअं ”
शाष्ट्र बोलना.

(९) जब चउमासीक प्रतिक्रमण पुरा होकर, देवसिक प्रतिक्रमणके प्रारंभमें उसकी संधिके बीचमें जो जो चउमासीक प्रतिक्रमण हो जैसा कि कार्तिक, फाल्गुन और आसाढ वह चार मासमें जो जो काल पानी, कंबल, सुखडी, भाजीपाला और मेवामिठाई वगैरहका हो वह शाखामें कहे मुताविक साधारण रीतसें सर्व लोगोंको जाननेके लिये दिखेलाते हैं।

१ कार्तिकचौमासा-

१ गरम जलका काल—चार प्रहरका

२ कंबल काल—सूर्योदयके बाद और सूर्यास्तके पहेले चार घड़ी।

३ सुखडी वगैरहका काल—एक मास तक,

४ मेवामिठाई, भाजीपालेका काल फाल्गुनचौमासेतक
२ फाल्गुनचौमासा-

१ उष्ण जलका काल—पांच प्रहरका,

२ कंबलकाल—सूर्योदयके बाद और सूर्योदयके पहेले दो घड़ी।

३ सुखडी वगैरहका काल—२० दिन तक,

४ मेवामिठाई, भाजीपालेका काल—८ मास तक
३ आषाढचौमासा-

१ उष्ण जलका काल—तीन प्रहरका,

२ कंबलका काल—सूर्योदयके बाद और सूर्यास्तके पहेले छह घड़ी।

३ सुखडी वगैरहका काल—१५ पंद्रह दिन तक,

४ मेवामिठाई, भाजीपालेका काल—चार मास तक
न कल्पे।

अथ संवत्सरी प्रतिक्रमणका विधि



१ चउमासी प्रतिक्रमणसें नीचे मुताबिक फेरफार समझना १ जिस जगह “चउमासिअं” है उस जगह “संवच्छरिअं” कहना।

२ चउमासी प्रतिक्रमणमें “पत्तेअखामणेण, संबुद्धा खामणेण, समन्ता खामणेण” कहते हैं वहाँ संवच्छरी प्रतिक्रमणमें “वारह मासाण चौवीस पक्खाण तिनसो साठ राइदिवसाण” ऐसा पठ कहना।

३ “चउमासी तप प्रसाद करोजी” की जगह “संवच्छरी तपप्रसाद करोजी” ऐसा कहके फिर अट्ठभत्त, तीन उपधास, छह आर्यविल, नउ निवि, वारह एकासना, चौवीस वेआसना और छह हजार सज्जाय यथाशक्ति तप करके पहाँचाना,” ऐसा कहना।

४ चउमासी प्रतिक्रमणके बीस लोगस्सके काउस्सग्गकी जगह यहाँपर चालीस लोगस्स और एक नवकारका काउस्सग्ग करना लोगस्स न आवे तो एकसो साठ नवकार गिनने।

५ दरेक सूत्रमें जहाँ जहाँ “चउमासिअं” बोलनेका हो वहाँ वहाँ “संवच्छरिअं” बोलना।

इति श्री पाक्षिक, चाउमासिक और सांचत्सारिक प्रतिक्रमणका विधि संपूर्ण ॥

(कोई जगह प्रतिक्रमणके बाद संतिकरं स्तवन बोलते हैं वहनीचे मुताबिक है, जिसको बोलना हो वह बोले)

॥ अथ संतिकर ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीङ दायारं ॥

समरामि भत्तपालग,-निवाणी गरुडकयसेवं ॥ १ ॥

ॐ सनमो विष्पोसाहि,-पत्ताणं संतिसामिपायाणं ॥
 श्वैँस्वाहामतेण, सब्बासेवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥
 ॐ संतिनमुक्खारो, खेलोसाहिमाइलद्विपत्ताणं ॥
 सैँहीनमो सब्बोसाहि, पत्ताणं च देइ सिरं ॥ ३ ॥
 चाणीतिहुअणसामिणि, सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा ॥
 गहंदिसिपालसुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥ ४ ॥
 रक्खंतु मम रोहिणी, पञ्चती वज्जसिखला य सया ॥
 चंज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥
 गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुद्धा ॥
 अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीओ ॥ ६ ॥
 जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरु कुसुमो ॥
 मायंगविजयअजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥ ७ ॥
 छमुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधब्ब तह य जार्किखदो ॥
 कूवर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥
 देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि कालि महाकाली ॥
 अच्छुअ संता जाला, सुतारयासोअ सिरिवच्छा ॥ ९ ॥
 चंडा विजयंकुसि, पंचद्वात्ति निव्वाणि अच्छुआ धरणी ॥
 वइरुद्ध छुंत गंधारि, अंव पउमगवई सिद्धा ॥ १० ॥
 इअ तित्थरक्खणरया, अन्ने वि सुरासुरी य चउहां वि ॥
 वंतरजोद्वाणिपमुहा, कुण्ठंतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥
 एवं सुदिहिसुरगण,-साहिओ संघस्स संतिजिणचंदो ॥
 मज्ज वि करेड रक्खं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥
 इअ संतिनाहसम्म, हिडी रक्खं सरइ तिकालं जो ॥
 सब्बोवद्वरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥
 तवगच्छगयणादिणयर,-जुगवरसिरिसोमसुंदरमुहणं ।
 सुपसायलच्छगणहर,-विजासिद्धी भणइ सीसो ॥ १४ ॥

१ “ वइरुद्ध दत्त गंधारि ” इत्यमि ॥

(इसके बाद सामायिक पारनेका विधि है वह नीचे मुताबिक)

इच्छामि खमासमणो वंदिं जावेणीज्ञाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि इच्छाकरेण संदिसह भगवन् इरियावहिर्य
पदिकमामि “ इच्छं ” इच्छामि पदिकमिंड इरियावहियाए,
विराहणाए गमणागमणे पाणक्रमणे वीयक्रमणे हरियक्रमणे,
ओसाऊत्तिंगपणगदगम्हीमकडासंताणासंकमणे, जे मे
जीवा विराहिआ एर्गिदिया वेइंदिया तेइंदिया चउर्दिया
पंचिदिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया
परियाविया किलामिया उद्विया ठाणाओ ठाणं संकामिया
जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुकडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेण पायच्छृत्करणेण विसोही करणेण
विसल्लीकरणेण पावाणं कर्माणं निग्धायणदठाए ठामि काउ-
सगं ।

अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभा-
इएणं उड्हुएणं वायनिसगेणं भमलिए पित्तमुच्छ्लाए सुहुमेहि
अंगसंचालेहि सुहुमेहि खेलसंचालेहि सुहुमेहि दिढ्हि संचा-
लेहि एवमाइयहि आगरेहि अभग्गो अविराहिओ हुज मे
काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि
तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं चोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आवे तो चार नवकार गिनने ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।

अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥

उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणदणं च सुमइं च ।

पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

सुविर्हिं च पुष्पदंतं, सीअलसिज्जंसचासुपुज्जं च ।

विमलमणंतं च जिणं, धस्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥

कुंथु अरं च माल्हि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।

वंदामि रिढ्हनोर्मि, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

एवं मद अभिशुआ, विहुयरथमला पहीणजरमरणा ।
 चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
 कित्तियवंदियमहिया; जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
 आरुग्गवोहिलामं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥६॥
 चंदेसु निमलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
 सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धं मम दिसंतु ॥७॥

चउक्कसायपडिमल्लुल्लरणु, दुज्यमयणवाणमुसुभूरणू ॥
 सरसपिअंमुवणु गयगामिड, जयउ पासु भुवणत्तयसामिड ॥१॥
 जसु तणुकंतिकडप्प सिणिद्डउ,
 सोहइ फणिमणिकिरणालिद्डउ ।
 नं नव जलहरतडिल्लयलंछिउ,
 सो जिणु पासु पयच्छउ वंच्छउ ॥२॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं तित्थ-
 यराणं सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
 पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं
 लोगनाहाणं लोगहिआणं, लोगपैवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥
 अभयद्याणं, चक्षुद्याणं, मगगद्याणं, सरणद्याणं, बोहि-
 द्याणं ॥५॥ धम्मद्याणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं,
 धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवटीणं ॥६॥ अप्पडि,
 हयवरनाणदंसणधराणं, विअइछउमाणं ॥७॥ जिणाणं,
 जावयाणं, तिद्वाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं
 मोअगाणं ॥८॥ सब्बन्नूणं, सब्बदरिसीणं, सिवमयलमरु-
 अमणतंमक्षयमव्वावाहमयुणरावित्ति सिद्धिराइनामधेयं ठाणं
 संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥ जे अं अइआ
 सिद्धा जे अभविसंतिणागएकाले संपइ अ वडमाणा
 सब्बे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइ, उइहेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
 सब्बाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥
 जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविद्वेहे अ ।

सध्वोसिं तंसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ २ ॥
 नमोऽहैत्सिद्धाचार्योपाद्यायसर्वसाधुभ्यः ।
 उवसगगहरं पासं, पासं वंदामि कम्मधणमुक्तं ।
 विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
 तस्स गहरोगमारी, दुहुजरा जांति उवसामं ॥ ३ ॥
 चिढउ दूरे मंतो, तुज्ज पणामो वि बहुफलोहोइ ।
 नरतिरिष्यु वि जीवा, पावांति न दुखखदोगच्चं ॥ ३ ॥
 तुह समत्ते लछे, चिंतामणि कप्पपायवभाहिए ।
 पावांति अविग्रेण, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
 इअ संथुओ महायस, भत्तिभरनिभरेण हिअएण ।
 तादेव दिज वोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

(किर दोनो हथ जोडके नीचे का सूत्र बोलना.)

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पमावओ भयचं ।
 भवनिवेओ मग्गा,-णसारिआ इहुफलसिद्धि ॥ १ ॥
 लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ।
 सुहगुरुजोगो तव्यय,-णसेवणा आभववखंडा ॥ २ ॥
 चारिज्जइ जइवि निया,-ण बंधणं वीयराय तुह समए ।
 तहवि मम हुज्ज सेचा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥
 दुखखबओ कम्मखओ, समाहिमरणं च वोहिलाभो अ ।
 संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणामकरणेण ॥ ४ ॥
 सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकेल्याणकारणम् ।
 प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावाणिज्जाए निर्सीहिअप
मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवत् मुहपत्ती पडिलेहुं? “इच्छं”
 (ऐसा कहकर मुहपत्ती पडिलेहना.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावाणिज्जाए निर्सीहिअप
मत्थएण वंदामि ।

‘इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारु? “यथाशक्ति”
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाप निसीहिआए
मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक
पार्यु? “तहन्ति”।

(किर दाहिना हाथ आसन वा चंखलेपर रखके नवकार बोलना।)
नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उव-
ज्ञायाणं नमो लोप संब्वसाहूणं। एसो पंचनमुक्तारो संब्वेपाव-
प्पणासणो मंगलाणं च संब्वेसि पढमं हवइ मंगलं ॥

समाइयवयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो।

छिन्नइ असुहं कम्म, सामाइय जंतिंआ वारा ॥ १ ॥

सामाइअंमि उ कंप, समणो हव सावओ हवइ जम्हा।

एषण कारणेण, वहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥

मैने सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण किया,
विधिमें कोई अविधि हुई हो तो मन वचन कायाकर
मिच्छा मि दुक्कड़ ॥

दस मनके, दस वचनके, वारह कायाके कुल वत्तीस दोषमें
जो कोई दोष लगा हो तो मन वचन कायाकर मिच्छा मि
दुक्कड़ ।

फिर गुरु नहीं होवे और स्थापनाचार्य सन्मुख प्रतिक्रमण किया हो
तो सबला हाथ रखके एक नवकार गिनना, गुरु होवे तो नवकार
गिननेकी जहरियत नहीं है।

प्रतिक्रमणमें छींक आइ हो उसकी आलोचन
करने की विधि:

पाक्षिक चउस्मासी वा संघत्सरी प्रतिक्रमण करते समय
बडे अतिचार कहनेसे पहिले छींक आई हो तो इरियावहिसे
लगाके प्रारंभसेही फिर से सर्व विधि करना। और जो बडे
अतिचारसे लेकर बडी शांतितकमें छींक आई हो तो दुक्ख-
खओ कम्मखओका काउस्सग्ग करते पहले नीचे मुताबिक
विधि कर लेना।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावाहिअं पडिफमामि
 “इच्छं” इच्छामि पडिकमितं श्रियावहिआए विराहणाए,
 गगणगमणे घाणकमणे वीयकमणे दृसियकमणे ओसाउर्तिग
 पणगदग मट्टीमकडा संतरणा संकमणे जे मे जीवा विरा-
 हिआ, पर्गिदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउर्तिदिया, पंचिदिया,
 अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघटिया, परिया-
 विया किलामिया उहविया ठाणाथो ठाणं संकामिया जीवि-
 याथो ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुष्टां ॥

तस्स उत्तरीकरणेण पायछित्तकरणेण विसोहीकरणेण
 विसर्वीकरणेण पावाणं कम्माणं निघायणढाए ठामि का-
 उस्सग्नं ।

अद्वात्य उसन्निष्ठणं नीसासिष्ठणं खासिष्ठणं छीष्ठणं जंभार-
 पणं उडुष्ठणं वायनिसग्नेण भमलिय पित्तमुद्छाए खुहुमेहिं
 अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं श्रेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिडिसंचा-
 लेहिं पवमाइषहि आगारेहिं अभग्नो अविराहियो खुज्ज मे
 काउस्सग्नो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्षारेण न पारेमि
 तायकायं ठाणेण मोणेण द्वाणेण अप्पाणं घोसिरामि ॥

(एक लोगस्स वा चार नवकारका काउस्सग्ग करना फिर प्रगट
 लोगस्स बोलना.)

लोगस्स उज्जोवगरे, धम्मतित्यये जिणे ।
 अरिहंते कित्ताइस्सं, चउघीसं पि केवली ॥ १ ॥
 उसभमजिअं च वंदे, संभवमामिणदणं च खुमइं च ।
 पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥
 सुविहि च पुण्फदंतं, सीबलसिजांसधासुखुर्जं च ।
 यिमलमणंतं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥
 कुंशु अरं च लाल्हि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ।
 वंशाति रिहुनेमि, पासं तह वद्वयाणं च ॥ ४ ॥

सचं मए अभिथुङा, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
 चउवीसं पि जिणवरा; तित्ययरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
 कित्तियवंदियमहिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धो
 आरुगंवोहिलाभं, समाहिवरमुक्तमं दिनु ॥ ६ ॥
 चंदेसु निमलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
 सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धें मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो चंदिउं जाविणज्ञाए निसीहिआ ।
 मत्यरण चंदामि. इच्छाकारेण संदिसह भगवन् क्षुद्रोपद्रवो-
 द्वावणार्थ काउस्सगं करुं ? “इच्छुं” करोमि काउस्सगं
 अन्नत्य उसासिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइ-
 एणं उहुएणं वायनिसग्गोणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
 अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
 एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिभो हुज्ज मे काउ-
 स्सग्गो जाव अरिहंतार्णं भगवंतार्णं नमुक्कारेणं न पारोमि
 तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(सागरवर गंभीरातका चार लोगस्सको काउस्सग करना, न आवे-
 तो सोलह नवकार गिनने, फिर काउस्सग पारकर नीचेकी स्तुति तीन दफे
 बोलना) : ॥ ८ ॥

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने ।

क्षुद्रोपद्रव संघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥ ९ ॥

॥ समाप्तम् ॥

॥ अथ नवस्मरणानि ॥

॥ श्रीपार्वनाथस्तोत्रं उवसग्गहरं ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वेदामि कम्मघणमुकं ।
विसहरयिसानिशासं, मंगलकर्त्त्वाणआवासं ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमर्तं, कंठे धारेह जो सया मणुओ ।
तस्सगह-रोग-मारी,-दुड्जरा जांति उवसामं ॥ २ ॥
चिड्ड दूरे मंतो, तुज्ज्वपणामो वि वहुफलो होह ।
नर-तिरियंसु वि जीवा, पावंति त दुःख दोगञ्जं ॥ ३ ॥
ॐ अमरतह-कामधैषु,-चितामणिकामकुभमाइया ।
सिरिपासनाहसेवा-, गंगाण सव्वे वि दासस्तं ॥ ४ ॥
ॐ न्हीं श्रीं दे अं तुहुदंसणेण सायिय, पणासेह रोग-
-रोग-दोहर्ण ।

कप्पतरुमिव जायह, ॐ तुहुदंसणेण सफल हेउं स्वाहा ॥ ५ ॥
ॐ न्हीं नमिऊण विष्पणासय, मायावीएण धरणनागिंदं ॥
सिरिकामराज ह्रीं (कलियं), पासजिणंदं नमंसामि ॥ ६ ॥
ॐ न्हीं नीं पासविसहर, विज्ञा-मंतेण ज्ञाणज्ञानव्वो ।
धरण-पउमावह देवी, ॐ न्हीं क्षम्लवर्णु स्वाहा ॥ ७ ॥
जयउ धरणदेव, पढमहुती नागिणी विज्ञा ।
विमलज्ञाणसाहिओ, ॐ न्हीं क्षम्लवर्णु स्वाहा ॥ ८ ॥
ॐ शुणामि पासं, ॐ न्हीं पणमामि परमभत्तिए ।
अटुकवरधर्णिदं, पउमावर्द्धपयडियकिर्ति ॥ ९ ॥
जस्स पयकमले सया, घसह-पउमावह धरणिदो ।
तस्स नामेण सयलं, विसहरदिसं नासेह ॥ १० ॥
तुह सम्मते लद्वे, चितामणि-कप्पपायव्वभहिए ।
पावंति अविग्धेण, जीवा अयरामरंटाण ॥ ११ ॥
नहुमयहाण, पणटुकम्मटुनहुसंसारं ।

परमडानिहिअहं, अद्गुणाधीसरं वंदे ॥ १२ ॥
 इअ संथुओ महायस, भक्तिव्यभरनिष्यभरेण हियएण ।
 ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ! ॥ १३ ॥
 स तुहनाम सुख्दे, भंते जो नर जपति सुख्दभावस्स ।
 सो अयरामरं ठाणं, पावंति नयगयसुख्वं ॥ १४ ॥
 पनास गोपीडां, कुरगहदंसणभयंकाये ।
 आपी न हुंति एतह वीं, तस्मीक्षं गुणी जासो ॥ १५ ॥
 पीडजंतं भगंदरं, खास सास सूलतह नीवाह ।
 श्रीसामलपासंमहंत, नाम पउंर पउलेण ॥ १६ ॥
 रोगजलजलणविसहर, चोरारिमइंदगयरणभयाइं ।
 पासजिणनाम संकि-, त्तणेण पसमांति सब्वाइं ॥ १७ ॥
 तं नमह पासनाहं, धरणिंदनमंसियं दुह पणासेइ ।
 तस्स पभावेण सया, नासंति सयलदुरियाइं ॥ १८ ॥
 ए ए समरंताणं मुर्णि, न दुह वाहि नासमाहिदुख्वं ।
 नासं सियमं असमं, पयडो नत्थिथ्य संदेहो ॥ १९ ॥
 जलजलण तहप्पसीहो, मारारी संभवेपि खिप्पं ।
 जो समरेइ पास पहु, पहो वि वकया वि किंचितस्स ॥ २० ॥
 इहलोगहिं परलोगहिं जो समरेइ पासनाहं तु ।
 ततो सिज्जेइ न छोसंइ, नाह सुराभगवंतं ॥ २१ ॥
 इति श्रीपार्वनाथस्तोत्रं उवसगहरं संपूर्णं ॥

अथ तिजयपहुत्त

तिजयपहुत्तपथासय,-अह महापाडिहेरज्जुत्ताणं ।
 समयविलक्ष्महिआणं, सरेमि चक्षं जिणंदाणं ॥ १ ॥
 पणवीसा य असीआ, पनरस पञ्चास जिणवरसमूहो ।
 नासेउ सयलदुरिअं, भविआणं भस्तिज्जुत्ताणं ॥ २ ॥
 वीसा पणयाला वि य, तीसा पञ्चक्षरी जिणवरिंदा ।
 यहमूआरक्षलसाइणि,— घोरुषसागं पणासंतु ॥ ३ ॥

सत्तरि पणतीसा चि य, सट्टी पंचेव जिणगणो एसो ।
 वाहिजलजलणहरि करि,-चोरारिमहाभयं हरउ ॥ ४ ॥
 पणपभा य दसेव य, पन्नटी तह य चेव चार्लसा ।
 रक्खंतु मे सरीरं देषासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥
 ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह चेव सरसुंसः ।
 आलिहियनामगव्मं, चक्षं किर सब्बओभद्दं ॥ ६ ॥
 ॐ रोहिणि पन्नात्ति, घज्जसिखला तहय वज्जाभंकुसिआ ।
 चक्षेसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह शोरी ॥ ७ ॥
 गंधारी महजाला, साणवि वहलहु तहय अच्छुता ।
 माणसि महभाणसिआ, विज्ञादेवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥
 पंचदसकम्भूमिसु, उप्पश्चं सत्तरि जिणाण सर्यं ।
 विविहरयणाङ्गवन्नो - वसोहिअं हरउ दुरिआहं ॥ ९ ॥
 चउतीसंअहसयजुआ, अहुमहापाहिद्देरक्यसोहा ।
 तित्थयरा गयमोहा, शापअद्वा पयत्तेण ॥ १० ॥
 ॐ वरकणयसंखविहुम्,-मरगयघणसञ्चिहंविगयमोहं ।
 सत्तरीसर्यं जिणाणं सव्वामरपूर्वं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥
 ॐ भवणवहवाणवंतर,-जोइसवार्नी विमाणवासी अ ।
 जे के वि दुडु देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥
 चंदणकपूरेण, फलए लिहिझण खालिअं परिअं ।
 एगंतराइगहभूअ, साइमुगंगं पणासेह ॥ १३ ॥
 इअ सत्तरिसयजंतं, सम्भं मंतं दुवारि पदिलिहिअं ।
 दुरिआरीविजयवंतं, निव्वभंतं निच्छमच्छेह ॥ १४ ॥

इति तिजप्रपहुत्त

अथ नमिउण

नमिउण पणयसुरगण,-कूडासणि किरणरंजिअं मुणिणो ।
 चलणज्जुअलं महाभय,-पणासर्ण संथवं दुन्थं ॥ १ ॥
 सडियकरचरणनहमुह, निबुहनासा विवशलायषा ।
 कुहुमहारोगानल,-फुलिग निहृसव्वंगा ॥ २ ॥
 ते तुह चलणाराहण,-सलिलंजलिसेयबुढिय(उ)च्छाया ॥

वर्णदवदहा निरिपा, यव वव पत्ता धुणो लर्ण्छ ॥ ३ ॥
 तुव्वाम्रवुभिय जंलनिहि, उव्वेडकल्लोलभीसणारावे ।
 संभंतभयविसंदुल,-निज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥
 अविदालिअ जाणवत्ता, खणेण पावेति इच्छिअं कूलं ।
 पासजिणचलणजुअलं, निच्चं चिथं जे नमेति नरा ॥ ५ ॥
 खरपणुद्दं अवणदव, जालावालि मलियसंयल दुमगहणो
 डज्जंत मुद्दमयवहु, भीसणरवभीसणंमि वणे ॥ ६ ॥
 जगनुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअसयलतिहुभणोभोअं ।
 जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसि ॥ ७ ॥
 विलसंतभोगभीसणफुरिआरुण, नयणतरलजीहाल ।
 उग्गमुअंगं नवजल य,-संतथहै भसिणायार ॥ ८ ॥
 मधंति कीडसरिसं, दूरपरिळ्डविसमविसवेगा ।
 तुह नामक्खरफुडसि, द्वंभंतगु(ग)रुआ नरा लोए ॥ ९ ॥
 अडवीसु भिष्टतक्कर,- पुलिदसदूलसदभीमासु ।
 भयविहुरबुन्नकायर,-उळ्डरियपहियसत्थासु ॥ १० ॥
 अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाममत्तवावारा ।
 ववगय घिरघा सिगंधं, पत्ता हियइच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥
 एज्जलियानलनवणं, दूरवियारियमुहं महाकाय ।
 नहकुलिसधायविआलिअ,-गइद कुभत्थलभोअं ॥ १२ ॥
 पणयससंभमपत्थिव, नहमणिमाणिकपडिअपडिमस्स ।
 तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्दं पि न गणंति ॥ १३ ॥
 सासिधवलदत्तमुसलं, दीहकरल्लालबुहुउच्छाहं ।
 महुर्पिगनयणजुअलं, ससलिल-नवजलहररावं ॥ १४ ॥
 भीमं महागइंदं, अच्चासणं पि ते न विगणंति ।
 जे तुह चलणजुअलं, मुणिवई तुर्ग समल्लीणा ॥ १५ ॥
 समरस्मि तिच्छखखगा,-भिग्धायपविन्द्रुद्धुयकवेद्य ।
 कुलुविणिमिन्नकरिकलहु,-मुक्कासिक्कारपउरंसि ॥ १६ ॥
 निज्जिहवद्धुद्दररिउ,-नरिदनिवहा भडा जसं धवलं ।

पावांति पावपसभिण, पासजिण ! तुहपश्चावेण ॥ १७ ॥
रोगजलजलपाचिसहर,-चोरारिमदंदगयरणभयाहं ।
पासजिणनामकंकि,-त्तणेण प्रसमांतिसव्वाहं ॥ १८ ॥
एवं महाभयहरं, पासजिणद्सस संथवमुआरं ।
भवियजणाणद्यरं, कल्पाणपरंपरनिहाणं ॥ १९ ॥
रायभयजक्खरक्खस,-कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु ।
संक्षासु दोसु पंथे, उवसग्गे तंहय-रयणीसु ॥ २० ॥
ज्ञो पढद जो अ निसुणइ, ताणं कइणो श.माणतुंगस्स ।
पासो पावं पसमेउ, सयल भुवणच्छियचलणो ॥ २१ ॥
उवसग्गंते कमठा,-सुराम्भिक्षाणाओ जो न संचलिओ ।
सुरनरकिन्वरज्ञुवहिं, संथुओ जयउ पासजिणो ॥ २२ ॥
एथस्स मञ्ज्ञयारे, अट्टारस अक्खरे हिं जो भंतो ।
जो जाणइ सो झायइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥ २३ ॥
पासह समरण जो कुणइ, संतुहे हियप्ण ।
अदुत्तरसयवाहिभय, नासइ तस्स दूरेण ॥ २४ ॥
॥ इति भयहरस्तोत्रं समर्णेत् ॥

अथे श्रीधरस्तोत्रं समर्णेत्

भक्तामरप्रणतमौलिमाणिप्रभाणा;--
मुद्योतकं दलितपापतमो वितानम् ॥
सम्यक्ष प्रणम्य जिनपादयुगं दुगादा,-
वालभ्यनं भवजले पतता जनानाम् ॥ १ ॥
यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्ववोधा,-
दुद्भूतवुद्धिपदुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्ज्ञं त्रितयचित्तहैरुदारैः ॥
स्तोष्यो किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥
वुध्या विनाऽपि विवृधार्चितपादपीठः ।
स्तोतुं समुद्यतमतिर्धिगतदपोऽहम् ॥

वालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुविम्ब,-
 मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥
 वक्तुं सुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
 कस्ते क्षमः सुरगुरोःप्रतिमोऽपि वुद्धथा ॥
 कल्पान्तकालपवनोद्धतनकचक्रं,
 को वा तरीतुमलमसुनिधि भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥
 सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
 कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥
 प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मूर्गो मृगेन्द्रं,
 नाभ्योति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥
 अल्पशुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
 त्वद्भक्तिरेव सुखरी कुरुते वलान्माम् ॥
 यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
 तच्चारुद्घृतकलिकानिकरंकहेतुः ॥ ६ ॥
 त्वत्संस्तवेन यवसंततिसच्चिवद्धं,
 पापं क्षणात्क्षयं मुपैति शरीरभाजाम् ॥
 आक्रान्तलोकमालिनीलमशेषमाशु,
 सूर्योशुभिन्नमिव शार्वरमत्थकारम् ॥ ७ ॥
 मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद,-
 मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ॥
 चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
 मुक्ताकलद्युतिमुपैति ननूदविन्दुः ॥ ८ ॥
 आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त दोष,
 त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ॥
 दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
 पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाजि ॥ ९ ॥
 नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत ! नाथ !,
 भूनैर्गुणभूषिवि भवन्तमभिषुवन्तः ॥
 तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,

भूत्याथितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥

द्वृप्वा भवन्तमनिमेषविलोकनायं,
नान्यत्र तोषपुपयाति जनस्य द्वधुः ॥
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छन्त् ॥ ११ ॥
यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितखिभुवनैकललामभूत ॥

तावन्त एव खलु तेऽप्यणवःपृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥
वक्षन्त क्ष ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगद्वितयोपमानम् ॥
विम्बं कलङ्कमलिनं क निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशाकल्पम् ॥ १३ ॥
संपूर्णमण्डलशाश्वाङ्ककलाकलाप,-
शुभ्रा शुणाखिभुवनं तव लङ्घयन्ति ॥
ये संश्रिताखिजगदीश्वर ! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संघरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥
विद्वं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि,-
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥
कलपान्तकालमरुता चलिताच्छ्वेन,
किं मन्दराद्रिशि खंरं चलितं षडाच्चित् ॥ १५ ॥

निर्धूम वर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
क्षीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपञ्जगन्ति ॥
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिभंहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥

निष्ठोदयं दलितमोहमहान्धकारं,
 गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥
 विभ्राजते तवं सुखावजमनल्पकान्ति,
 विद्योतयज्जगदपूर्वशाल्कविम्बम् ॥ १८ ॥
 किं शब्दरीषु शशिनाऽहि विवस्वता वा,
 युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ॥
 निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
 कार्यं कियज्जालधरैर्जलभारनम्बः ॥ १९ ॥
 ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
 नैवं तथा हरिहरादिषु नाथकेषु ॥
 तेजः स्फुरन्मणिषु याति तथा महत्वं,
 नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥
 मन्ये वरं हरिहरादयं एवं हृषा,
 हृषेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥
 किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
 कथिन्मनो हरति नाथं भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥
 खीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
 नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥
 सर्वा दिशो दध्रति भानि सहस्ररस्मि,
 प्राच्येव दिग्जनयति स्कुरद्युजालम् ॥ २२ ॥
 त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,-
 मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥
 त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
 नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्रं पंथाः ॥ २३ ॥
 त्वमव्ययं विसुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
 ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनडुगं केतुम् ॥
 योगीश्वरं विदितयोगमनेकमकं,
 ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदान्ति सन्तः ॥ २४ ॥
 बुद्धस्वरूपममलं प्रवदान्ति बुद्धिबोधात्,

त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात् ॥
 धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेविधानात्,
 व्यक्तं त्वमेव भंगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥
 तुभ्यं नमस्त्रिमुखनार्चिहराय नाथ,
 तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूपणाय ॥
 तुभ्यं नमस्त्रिलगतेः परमेश्वराय,
 तुभ्यं नमो जिन । भवोदधिशोपणाय ॥ २६ ॥
 को विस्मयोऽत्र यद्विनाम गुणैरशैषै,-
 स्त्वं संश्रितो निरवकाशातया सुनीश ॥
 दोपैरुपात्तविविधाश्रयजातंगर्वैः,
 स्वमान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥
 उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख -
 माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ॥
 स्पष्टोह्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
 विम्बं रवेरिव पंथोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥
 सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
 विभ्राजते तंव वपुः कनकावदातम् ॥
 विम्बं वियद्विलसदंगुलतावितानं,
 तुङ्गोदयाऽद्विशिरसीव सहस्ररद्मेः ॥ २९ ॥
 कुन्दावदातचलेचामरचारुशोभं,
 विभ्राजते तंव वपुः कलधौतकान्तम् ॥
 उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्जरवासिध्यार,-
 मुच्छस्तटं सुरागिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥
 छत्रन्नर्थं तंव विभाति शशोङ्ककान्तं,-
 मुच्छः स्थितं स्थगितमानुकरप्रतापम् ॥
 मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
 प्रख्यापयत्विजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥
 उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्तः-
 पर्युलसन्नखमयूखशिखाऽभिरामौ ॥

पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः,
 पद्मानि तत्र विवृधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥
 इत्थं यथा तव विभूतिरभूजिनेन्द्र ।
 धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥
 याद्वक्ष्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
 ताद्वक्तुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥
 श्रोतन्मदाविलविलोलकपोलमूल,-
 मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥
 ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
 दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥
 भिन्नेभकुम्भगलदुर्ज्जवलशोणिताक्त,-
 मुक्ताकलप्रकरभूषितभूमिभागः ॥
 बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
 नाकामति क्रमयुगाच्चलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥
 कल्पान्तकालं पवनोद्धतवहृनिकल्पं,
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्पुलिङ्गम् ॥
 विश्वं जिधत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
 त्वज्ञामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥
 रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
 क्षोधोद्धतं फाणिनमुत्कणमापतन्तम् ॥
 आकामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क,-
 स्तवज्ञामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥
 वलानुरङ्गगजगर्जितभीमनाद,-
 माजौ बलं वलवतामपि भूपतीनाम् ॥
 उद्यादिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
 त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥
 कुन्ताश्रभिन्नगजशोणितवारिवाह,-
 वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥
 युद्धे जर्यं विजितदुर्जयजेयपक्षा,-

स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥
 अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्तचक्र,-
 पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाशौ ॥
 रङ्गन्तरङ्गशिखरस्थितयानपाता,-
 लासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥
 उद्भूतभीषणजलोदरभारभुशाः,
 शोच्यां दशमुपगताइच्युतजीविताशाः ॥
 त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
 मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥
 आपादकण्ठमुरशुङ्खलबेष्टिताङ्गा,
 गाढं बृहन्निगडकोटिनिष्ठष्टजङ्घाः ॥
 त्वश्चासमन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
 सद्यः स्वयं विमतवन्धभया भवन्ति ॥ ४२ ॥
 मस्त्रिपेन्द्रमृगराजदवानलाहि,-
 सङ्ग्रामवारिधिमहोदरघन्धनोत्थम् ॥
 तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
 यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥
 स्तोत्रस्तजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निवद्धां,
 भक्त्या मया श्चिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥
 धरो जनो य इह कण्ठगतामजस्यं,
 तं भानुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥
 इति श्रीभक्तामरनामक स्तोत्रं सम्पूर्णम्

अथ श्रीकल्याणमंदिर स्तोत्रम्.

वसन्ततिलकावृत्तम्
 कल्याणमन्दिरमुद्धारवद्यभेदि,
 भीक्षाधयप्रदमनिन्दिसमङ्गविषयम् ।
 संसारसागरनिमलाददोषजन्तु-

पोतायमानमभिनन्द्य जिनेश्वरस्य ॥ ६ ॥
 यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमास्तुराशः,
 स्तोत्रं सुविस्तृतमातिर्न विभुविद्यातुम् ।
 तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-,
 स्तस्याहमेप किल संस्तवनं करिष्ये ॥ ७ ॥ युग्मम् ॥
 सामान्यतोऽपि तत्र वर्णयितुं स्वरूप-
 मस्माद्दशाः कथमधीश ! भवन्त्यश्रीशाः ।
 धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा द्विवान्धो,
 रूपं प्रखलपयति किं किल धर्मरक्षमेः ॥ ८ ॥
 मोहक्षयादचुभवन्नपि नाथ ! मत्यों,
 नूनं गुणान् गणयितुं न तत्र क्षमेत ।
 कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्,
 मीचेत केन जलधैर्ननु रक्तराशिः ? ॥ ९ ॥
 अभ्युद्यतोऽस्मि तत्र नाथ ! जडाशयोऽपि,
 कर्तुं स्तवं लसदं संख्यगुणाकरस्य ।
 वालोऽपि किं त्त निजवाहुयुगं वितत्य,
 विस्तीर्णतां कथयति स्वधियास्तुराशः ? ॥ १० ॥
 ये योगिनामपि न यान्ति गुणस्तवेश ।
 वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ?
 जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
 जलपान्त वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ११ ॥
 आस्तामविचिन्त्यमहिमो जिन ! संस्तवस्ते,
 नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
 तीव्रातपोपहतपान्थजनान्विदाघे,
 प्रीणाति पद्मसरसः सरसेऽनिलोऽपि ॥ १२ ॥
 हृष्टर्त्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
 जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मवन्धाः ॥
 सद्यो भुजद्गंगमया इव भध्यभाग,-
 मध्यागते वनशिखपिण्डनि चन्दनस्य ॥ १३ ॥

मुच्यन्त एव मनुजाः सहस्रा जिनेन्द्र ।,
 रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥
 गोस्वामीनि स्फुरिततेजसि दृष्टमाङे,
 चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥
 त्वं तारको जिन ! कथं ? भविनां त एव,
 त्वामुद्धर्वन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ॥
 यदा द्विस्तरति यज्ञलमेष नून-
 मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥
 यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हृतप्रभावाः,
 सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षणितः क्षणेन ॥
 विद्यापिता हुतंभुजः पद्यसाथ येन,
 पीतं न किं तदपि दुर्धरवाहवेन ? ॥ ११ ॥
 स्वामिन्नन्वपगरिमाणमपि प्रपन्ना,-
 स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ? ॥
 जन्मोदधि लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
 चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥
 ऋधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
 ध्वस्तास्तदा यत कथं किल कर्मचौराः ? ॥
 शोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
 नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानि ॥ १३ ॥
 त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप,-
 मन्वेषयन्ति हृदयास्त्रुजकोशदेशो ॥
 पूतस्य निर्मलरुचेयदि वा किमन्य,-
 दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकाया ॥ १४ ॥
 ध्यानाज्जिनेश । भुवंतो भविनः क्षणेन,
 देहं विहाय परमात्मदशां ब्रजन्ति ॥
 नीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
 चामीकरत्वमंचिरादिवं धातुभेदाः ॥ १५ ॥
 अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं

भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ?॥
 एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि,
 यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥
 आत्मा मनीषिभिरयं त्वद्भेदवुद्धया,
 ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ॥
 पानीयमप्यसृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
 किं नाम नो विश्विकारमपाकरोति ॥ १७ ॥
 त्वामेव चीततमसं परवादिनोऽपि,
 नूनं विभो ! हरिहरादिघ्रिया प्रपञ्चाः ॥
 किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो,
 नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥
 धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा,-
 दास्तां जनो भवति ते तरुप्यशोकः
 अभ्युदते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
 किं वा विवोधमुपयाति न जीवलोकः ? ॥ १९ ॥
 चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
 विष्वक् पतत्यविरला सुरपुण्यवृष्टिः ? ॥
 त्वद्वाचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !
 गच्छान्ति नूनमध एव हि वंधनानि ॥ २० ॥
 स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः,
 पीयूषतां तव गिरः समुदीरयान्ति ॥
 पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गाभाजो,
 भव्या वजान्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥
 स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
 भन्ये वदान्ति शुचयः सुरचामरौघाः ॥
 येऽस्मै नार्ति विदधते सुनिषुड्गवाय,
 ते नूनमूर्धवगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥
 इथामं गभीरगिरमुज्ज्वलैर्मरत्न -
 सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्वाम् ॥

आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै,-
 श्वामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुद्धाहम् ॥ २३ ॥

उद्गच्छता तव शितिद्युति मण्डलेन,
 लुप्तच्छद्वच्छविरशोकतरुव्यभूव ॥

सांन्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !
 नीरागतां व्रजति को न सधेतनोऽपि ॥ २४ ॥

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन,-
 मागत्य निर्वृतिपुर्वं प्रति सार्थवाहम् ॥

एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्वयाय,
 मन्ये नदन्नभिनभः सुरुदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !,
 तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥

मुक्ताकलापकलितोच्छसितातपत,-
 व्याजात्तिधा धृततनुर्भूवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥

स्वेन प्रपूरितजगत्तयपिण्डतेन,
 कान्ति प्रतापथशसामिव सञ्चयेन ॥

माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,
 सालजयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥

दिव्यसज्जो जिन ! नमतिरिदशाधिपाना,-
 मुत्सूज्य रत्नरचितानपि मौलिवन्धान् ॥

पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परन्न,
 त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥

त्वं नाथ ! जन्मजलधेविंपराङ्गमुखोपि,
 यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥

युक्तं हि पार्थिव निपस्य सतस्तवेव
 चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं,
 किंवाक्षरप्रकृतिरप्यालिपिस्त्वमीश ! ॥

अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,

ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥
 प्रागभारसमृतनभाँसि रजाँसि रोषा,-
 दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥
 छायापि तैस्तव न नाथ ! हता द्वताशो,
 प्रस्तस्त्वमी मिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥
 यद्वर्ज्जुर्जितघनौघमदधर्भीमं,
 अश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥
 दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
 तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्य ॥ ३२ ॥
 ध्वस्तोर्व्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड,-
 प्रालम्बभृद्धयदवक्तविनिर्यदग्निः ॥
 प्रेतब्रज्ञः प्रतिभवन्तमपीरितो यः,
 सोऽस्या भवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥
 धन्यास्त एव भुवनाधिप ! योग्रसन्ध्य,-
 माराध्यन्ति विधिवद्धुतान्यकृत्याः ॥
 भक्त्योङ्गसत्पुल्कपश्मलदेहदेशाः,
 पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥
 अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !
 मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥
 आकर्णिते तु तव गोप्रपविश्रमन्त्रे,
 किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥
 जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !
 मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ॥
 तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
 जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥
 नूनं न मोहतिमिरावृत्क्लोचनेन,
 पूर्वे विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥
 मर्माविधो विधुरयन्ति द्वि मामनर्थाः,
 ग्रोद्यलपवन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥ ३७ ॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोपि,
 नूनं न चेतासि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥
 जातोऽस्मि तेन जनवान्धव ! दुःखपात्रं,
 यस्मात्क्षियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥
 त्वं नाथं ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !
 कारुण्यपुण्यवसते चक्षिनां वरेण्य ! ॥
 भक्त्या न ते मयि महेश ! दयां विधाय,
 दुःखाङ्गरोहलनतपरतां विधोहि ॥ ३९ ॥
 निःसद्गुण्यसारशारणं शरणं शरण्य,
 मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥
 त्वत्पादपङ्गजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
 वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥
 देवदेवन्ध्य ! विदिताखिलघस्तुसार !
 संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ॥
 त्रायस्व देव ! करुणाहृद ! मां पुनीहि,
 सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशोः ॥ ४१ ॥
 यद्यस्ति नाथ ! भवद्गुणिसरोरुहाणां,
 भक्तेः फलं किमयि सन्ततिसाञ्चितायाः ॥
 तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः,
 स्वामी त्वमेव भुवनेऽन्न भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥
 इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !
 सान्द्रोलुसत्पुलककञ्जुकिताङ्गभागाः ॥
 त्वद्विम्बनिर्मलमुखाम्बुजवद्धलक्षा ॥
 ये संस्तवं तव विभो ! रचयत्ति भव्याः ॥ ४३ ॥
 जननयनकुमुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ॥
 ते विगलितमलनिच्छया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥
 युग्मम् ॥ ४४ ॥
 इति श्रीकल्याणमन्दिरनामकं स्मरणम् ॥

जय तिहुअणः स्तोत्र.

—४८७—

जय तिहुअणवरकप्परुक्ख जय जिणधन्नतरि,
 जय तिहुअणकल्लाणकोस दुरिअक्करिकेसरि ।
 तिहुअणजणअविलंघिआण भुवणत्तायसामिअ,
 कुणसु सुहाइ जिणेस पास थंभणय पुरट्टिअ ॥ १ ॥
 तइ समरंत लहंति झात्ति वरपुत्तकलत्तइ,
 धणसुवण्णहिरणपुण जण भुज्जइ रज्जइ ।
 पिक्खइ मुक्ख असंख सुक्ख तुह पास पसाइण,
 इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख सुक्खइ कुण महं जिण ॥२॥
 जरजज्जर परिजुणकण्ण नदुड सुकुट्टिण
 चक्खुक्खबीण खयेण खुण नर सलिय सूलिण ।
 तुह जिण सरणरसायणे लहु हुंति पुणणणव,
 जय धन्नतरि पास महवि तुह रोग हरो भव ॥ ३ ॥
 विजाजोइस मंततंतसिद्धिउ अपयात्तिण,
 भुवणञ्जुउ अट्टविह सिद्धि सिज्जहि तुह नामिण ।
 तुह नामिण अपावित्तओ चि जण होइ पवित्तउ,
 तं तिहुअणकल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥
 खुद पउत्तइ मंत तंत जंताइ विसुत्तइ,
 चरथिरगरल गुहुगगखगग रिउवगग विगंजइ ।
 दुत्थियसत्थ अणत्थघत्थ निथारइ दयकारि,
 दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियक्करिकेसरि ॥ ५ ॥
 तुह आणा थंभेइ भीमदप्पुद्धुरसुरवर-
 रक्खस जक्ख फणिदविद चोरानल जलहर ।
 जलथरचारि रउह खुद पसुजोइणजोइय,
 इय तिहुअण अविलंघिआण जय पास सुसामिय ॥६॥
 पत्थिअ अथ अणत्थतत्थ भत्तिभरनिभर,
 रोम चंचिअ चारकाय किन्नरनरसुरदर ।

जसु सेवहि कमकमलज्जयल पवखालियकालिमलु,
 सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥

जय जोइय मण कमलभसल भयपंजरकुंजर ।
 तिहुअणजण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ।

जय मइ मेहणिवारिवाह जयजंतुपयामह,
 थंभणयट्टिय पासनाह नाहत्तण कुण मह ॥ ८ ॥

वहुविह वन्नु अवन्नु सुन्नुवान्निउ छप्पन्निहिं,
 मुक्खधम्मकामत्थकाम नर नियन्नियसात्थिहिं ।

जं ज्ञायहि वहु दरिसणत्थ वहुनाम पसिद्धउ,
 सो जोइयमणकमलभसल सुहु पास पउद्धउ ॥ ९ ॥

भयविव्वभल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय,
 तरलिय नयण विसुण्ण सुण्ण गगगर गिर करुणय ।

तइ सहस्रत्ति सरंत हुंति नर नासिअ गुरुदर,
 मह विजावि सज्जसइ पास भयपंजरकुंजर ॥ १० ॥

पइंपासिविअसतनित्तपत्तपवित्तिय,-
 याहपवाहपवूढरुदुहदाह सुपुलइय ॥

मन्नहमन्नुसउन्नुपुन्नुअप्पाण सुरनर,
 इय तिहुअणआणंदचंद जयपासजिणेसर ॥ ११ ॥

तुहकलाणमहेसु घंटटंकारव पिण्डिय,
 चाल्लिरमल महलभत्ति सुरवरगंलुलिअ ॥

हल्लुफलिअ पवत्तयांति भुवणेवि महसच,
 इय तिहुअणआणंदचंदजयपास रुहुध्वव ॥ १२ ॥

निमंलकेवलकिरणनियरविहुरिअतमपहयर,
 दंसिअ सयलंपयत्थसत्थविथरिअपहाभर ॥

कलिकलुसिअजणघुअलोयलोयणह अगोयर,
 तिमिरइ निरु हर पासनाहसुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥

तुह संमरणजलवारिसंसित्त माणवमइमेहणि,
 अवरावरसुहुमत्थवोहकंदलदलरेहणि ॥

जायइ फलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम,

इय महमेइणिवारिवाह दिस पास महं मम ॥ १४ ॥
 कय अविकलकल्लाणवालि उल्लुरिय दुहवण,
 दाविअ सगगपवगगमगग दुगगदगगम वारण ॥
 जय जंतुहजणएणतुल्लजं जणि यहियावहु,
 रमसु धमसु सो जयउ पास जय जंतुपिआमहु ॥ १५ ॥
 भुवणारण निवास दरिय परदसणदेवय,
 जोइणपूअणाखेत्तवाल खुदासुर पसुवय ॥
 तुह उत्तडु सुनडु सुहु अविसंठलचिठहि;
 इयतिहुअण घणसीहपास पावाइ पणासहि ॥ १६ ॥
 फणिफणफारफुरंतरयणकरंजिअनहथल,
 फलिणीकंदलदलतमालनिल्लु प्पलसामल ॥
 कमठासुरउयसगगवगगसंसगगअंगाजिअ,
 जय पच्चकखजिगेस पास थंभणयपुरहिअ ॥ १७ ॥
 महमणुतरलपमाणनेय वायावि विसंठलु,
 नियतणुवि अविणयसहाव आलसविहङ्गलंथलु ॥
 तुहमाहप्पुपमाणुदेव कारुण्ण पवित्तउ,
 इयमहमाअवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८ ॥
 किंकि कपिउणयकलुणु किंकि वनजंपिउ,
 किं वन चिड्डिउकिट्टदेवदीणयमडविलंविउ ॥
 कासुनकियनिष्पल्लललिअतथेहिदुहार्त्तइं,
 तहविनपत्त उताण कि पि पहं पहु परिच्छत्तइं ॥ १९ ॥
 तुहुं सामिहु तुहुं मायं बणु तुहुं मित्तपियंकरु,
 तुहुं गइ तुहुं मइ तुहिजी ताणु तुहुं गुरु खेमंकरु ॥
 हउं दुहमरभारिअवराउ राउलनिब्मुगगह,
 लीणउ तुह कमकमल सरणुजिणपालहि चंगह ॥ २० ॥
 पहु किविकयनीरोयलोयकिवि पावियसुहसय,
 किविमइं भंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय
 किवि गंजिअरिउवगगकेविजसधवालिअ भूयल,
 मइ अवहीरहि केणपाससरणागयवच्छल ॥ २१ ॥

पच्चुवयार निरी हनाहनिष्पणपयोअण,
 तुहुं जिणपासपरोवयार करुणिक्कपरायण,
 सतु मित्त समचित्त विती नय निंदय सममण
 माअवहीरिअजुग्गउविमइ पासनिरंजण ॥ २८ ॥
 हउं बहु विहुहतत्तगत्तुहुं दुहनासणपरु,
 हउं सुयण इकरुणिक्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥
 हउं जिणपास अ सामिसालुतुहुं तिहुअणसामि अ,
 जं अवहीरहि मइ झखन्तइयपासन सोहिअ ॥ २९ ॥
 जुग्गाजुग्ग विभागनाहनहुजोवहितुहसम,
 भुवणुवयारसहावभाव करुणारससत्तम ॥
 समविसमइ किंघणुमिएइ भुविदाहुसमंतउ,
 इयं दुहिवंधवपासनाह मइं पालथुणतउ ॥ २४ ॥
 नयदीणह रीणयसुए विअणविकि विजुगय,
 जं जोइविउवयारुकरइउ वयारसमुज्जय ॥
 दीणहदीणु निहीणुजेणतुहनाहणचत्तउ,
 तोजुगउअहमेव पासपालहिमइ चंगउ ॥ २९ ॥
 अह अणु वि जुग्गयविसेसु कि विमणहि दीणह,
 जंपासविउवयारुकरइ तुह नाहसमग्गह ॥
 सुच्चिअकिल कल्पाणुजेण जिण तुख्यपसीयह,
 किं अणिण तंचेव देव मामइअवहीरह ॥ २६ ॥
 तुह पच्छण नहु होइ विहल जिणजाणउ किं पुण,
 हउं दुखिखय निरुसत्तचत्तदुक्कउ उससुयमण ॥
 तं मणउ नेमिसेण एउ एउविजाइ लवभइ,
 सच्चं जं भुक्तिखयवसेण किं उंवरु पच्छइ ॥ २७ ॥
 तिहुअणसामिअ पासनाह मइ अपुपयासिउ,
 किज्जउ जं नियरुव संरिसु नमणुंव हुंजपिउ ॥
 अणु ण जिणजगितुहसमोविदविखणु दयासउ,
 जइ अवगिन्नासि तुंहिजअहहकिंहोइसहयासउ ॥ २८ ॥
 जइ तुहरु विणकिणविपेथ पाइणवेलविउ,

तउजाणुंजिणपास तुह्यहुंअंगीकरिउ ॥
 इयमहइच्छुउ जं न होइ सातुहउहावणु,
 रक्खंतह नियकित्तिणेय जुझइअंवहरिणु ॥ २९ ॥
 एहमहारिहजन्तदेवइसुन्हवणमहुसउ,
 जं अणलिय गुणगहण तुह्य मुणिजणअणिसिद्धउ ॥
 एम पसिअसुपासनाहथंभणयपुरीठआ इय
 मुणिवहसिरि अभयदेबु विणवइ अणिदिअ ॥ ३० ॥
 ॥ इति श्रीस्तंभनकतीथराज श्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

जिनपञ्चरस्तोत्रं.



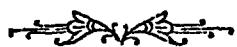
ॐ ईंही श्री अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः ॥
 ॐ ईंही श्री अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥
 ॐ ईंही अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः ॥
 ॐ ईंही अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॥
 ॐ ईंही अर्हं गौतमप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥
 एष पञ्चनमस्कारः, सर्वपाप क्षयंकरः ॥
 मङ्गलगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥
 ॐ ईंही श्री जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥
 कमलप्रभसूर्निद्रो, भाषते जिनपञ्चरम् ॥ ३ ॥
 एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् ॥
 मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते धृवम् ॥ ४ ॥
 भूशश्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥
 देवताये पवित्रात्मा, पण्मासै लभते फलम् ॥ ५ ॥
 अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्मि, सिद्धं चक्षु ललाटके ॥
 आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥
 साधुबृन्दं मुखस्याये, मनःशुर्निद्र विधाय च ॥
 सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥

दक्षिणे मदनदेवीषी, वामपांश्चये स्थितो जिनः ॥
 अङ्गसन्धिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥ ८ ॥
 पूर्वाशां च जिनो रक्षे,-दायर्यो विजितेन्द्रियः ॥
 दक्षिणाशां परब्रह्म, नैऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥
 पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः ॥
 उत्तरां तीर्थकृत्सर्वामीशानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥
 पातालं भगवान्हर्ष,-ब्राकाशं पुरुषोत्तमः, ॥
 रोहिणीप्रमुखदेव्यां, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥
 क्रपभो मस्तकं रक्षे,-दजितोऽपि विलोचनम् ॥
 सम्भवः कर्णयुगले, अभिनन्दनस्तु नासिके ॥ १२ ॥
 ओष्ठं श्रीसुमति रक्षे,-इन्तानपद्मप्रभु विभुः ॥
 जिव्हां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभाभिधः ॥ १३ ॥
 कण्ठं श्रीसुविधि रक्षेऽहं, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥
 श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयम् ॥ १४ ॥
 अङ्गमुलीर्विमलो रक्षे,-दनन्तोऽसौ नखानपि ॥
 श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशान्ति नाभिमण्डलम् ॥ १५ ॥
 श्रीकुन्त्यु गुह्यकं रक्षे,-दरोलोमकटीतटम् ॥
 माल्हिरुरुपृष्ठवंशं, जडघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥
 पादाङ्गगुलिर्नमीरक्षे,-च्छीनेमि श्वरणद्वयम् ॥
 श्रीपार्श्वनाथः सर्वाङ्गं, वर्धमानश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥
 पृथिवीजलतेजस्क, वायव्याकाशमयं जगत् ॥
 राजद्वारे इमशाने च, सङ्घग्रामे शशुसङ्कटे ॥
 व्याघ्रचौराश्चिसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥
 अकाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्सपाश्रिते ॥
 अगुच्छत्वे महादुःखे, सूखत्वे रोगर्पादिते ॥ २० ॥
 डाकिनी शाकिनी ग्रस्ते, महाग्रहगणादिते ॥
 नद्युत्तारेऽध्वैषस्ये, व्यसने चापदि-स्मरेत् ॥ २१ ॥
 प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेजिनपुञ्चरस् ॥
 तस्य किञ्चिन्द्वयं नास्ति, लभते सुखसम्पदः ॥ २२ ॥

जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरेदनुवासर ॥
 कमलप्रभ राजेन्द्र,-श्रियं स लभते नरः ॥२३॥

प्रातः समुत्थाय पठेत्कृतक्षों,
 यस्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यं ॥
 आसाद्येचक्षी कमलप्रभाख्यं,
 लक्ष्मी मनोवाच्चिछत् पूरणाय ॥ २४ ॥
 श्रीरुद्रपलीय वरेण्यगच्छे,
 देवप्रभाचार्यं पदाव्जहंसः ॥
 घारीन्द्रचूडामणिरेषजैनो,
 जीयाद्गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥
 इति श्रीकमलप्रभाचार्यविरचितं
 श्रीजिनपञ्जरस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ॥



जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा संदृगुरुभाषितम् ॥
 ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, भव्यानां सुखहेतवे ॥ १ ॥
 जन्मलग्ने च राशौ च, यदा पीडन्ति खेचराः ॥
 तदा संपूजये द्वीमान्, खेचरैः साहिताविज्ञान् ॥ २ ॥
 पुर्णपूर्णन्धैर्धूपैर्दीपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः ॥
 वर्णसद्वशदानैश्च, वर्णैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ ३ ॥
 पद्मप्रभस्य मार्तण्ड, अन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च ॥
 वासुपञ्ज्यो भूसुतश्च, बुधोऽप्यष्ट जिनेश्वरः ॥४॥
 चिमलानन्त धर्मादराः, शान्तिः कुन्तु नमिस्तथा ॥
 वर्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधो न्यसेत् ॥ ५ ॥
 क्रषभाजितसुपार्श्वा, श्राभिनन्दनशीतलौ ॥
 सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्च वृहस्पतिः ॥६॥
 सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः ॥

नैमिनाथस्य राहुः स्यात्, केतुः श्रीमल्लिपाश्वर्योः ॥७॥
जिनानामग्रतः कृत्या, ग्रहाणां शान्तिहेतवे ॥

नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदग्नेत्तरं शतम् ॥ ८ ॥

भद्रयाहुरुवाचेदं पञ्चमश्वत्केवली

विद्याप्रवादतः पूर्वात् ग्रहशान्तिविर्धि शुभम् ॥ ९ ॥

ॐ ईं ही श्री ग्रहाश्वन्द्रसूर्याङ्गारकवुभवृहस्पतिशुक्रशनै-
अरराहुकेतु सहिताः खेटा जिनपतिपुरतोवस्तिष्ठन्तुः मम
धनधान्यजयविजयसुखसौभाग्यधृतिकीर्तिकान्तिशान्तितुष्टि-
पुष्टिशुद्धिलक्ष्मीधर्मार्थकामदाः स्युः स्वाहा ॥

इति ग्रहशान्ति स्तोत्रं समाप्तम्.

— — —

॥ अथ मन्त्राधिराजस्तोत्रम् ॥

श्री पार्श्वः पातु ओ नित्यं, जिनः परमशक्तुरः ॥

नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥

सर्वविघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥

सर्व सत्त्व हितो योगी, श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥

देवदेवेभः स्वयंसिद्ध, श्रिदानन्दमयः शिवः ॥

परमात्मा परब्रह्म, परमः परमेश्वरः ॥ ३ ॥

जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषोत्तमः ॥

सुरेन्द्रो नित्य धर्मश्च, श्रीनिवासः शुभार्णवः ॥ ४ ॥

सर्वेशः सर्वदेवेशः सर्वदः सर्वगोत्तमः ॥

सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगदगुरुः ॥ ५ ॥

तत्त्वसूतिः प्ररादित्यः, परब्रह्मप्रकाशकः ॥

परमेन्दुः परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः ॥ ६ ॥

अजः सनातनः शम्भु, रश्वरश्च सदाशिवः ॥

विश्वेश्वरः प्रमोदात्मां, क्षेत्राधीशः शुभप्रदः ॥ ७ ॥

साकारश्च निराकारः, सकलो निष्कलोऽव्ययः ॥

निर्ममो निर्विकारश्च, निर्विकल्पो निरामयः ॥ ८ ॥
 अमरश्चाजरोऽनन्त, एकोऽनन्तः शिवात्मकः ॥
 अलक्ष्यश्चाप्रमेयश्च, ध्यानलक्ष्यो निरञ्जनः ॥ ९ ॥
 उँकाराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तस्तुपख्यीमयः ॥
 ब्रह्मद्वय प्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्षरः ॥ १० ॥
 दिव्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽच्युतः ॥
 आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठीं परः पुमान् ॥ ११ ॥
 शुद्धस्फटिकसङ्गाशः, स्वयम्भूः परमाच्युतः ॥
 व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकादभासकः ॥ १२ ॥
 ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारुद्धो मनःस्थितिः ॥
 मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोद्वद्यः परापरः ॥ १३ ॥
 सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभुः ॥
 भगवान् सर्वतत्त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायंकः ॥ १४ ॥
 इति श्री पार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः ॥
 दिव्यमष्टोत्तरं नाम, शतमल प्रकीर्तितम् ॥ १५ ॥
 पवित्रं परमं ध्येयं, परमानन्ददायकम् ॥
 सुक्तिसुक्तिप्रदं नित्यं, पठते मङ्गलप्रदम् ॥ १६ ॥
 श्रीमत्परमकल्याण, सिद्धिदः श्रेयसेऽस्तुवः ॥
 पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिवः ॥ १७ ॥
 धरणेन्द्रफणछत्रा-, लङ्छुतो वः श्रियं प्रभुः ॥
 दद्यात्पञ्चावती देव्या, समाधिंष्टितशासनः ॥ १८ ॥
 ध्यायेत्कर्मलभ्यस्थं, श्रीपार्श्वजगदीश्वरम् ॥
 उँ हूँ ही हूँ श्री समायुक्तं, केवलज्ञानभास्करम् ॥ १९ ॥
 पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे ॥
 परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्र राजेन संयुतम् ॥ २० ॥
 अष्टपत्रस्थितैः पञ्च, नमस्कारस्तथा त्रिभिः ॥
 ज्ञानाद्यैवेष्टितं नाथं, धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ २१ ॥
 शतषोडशदलारुदं, विद्यादेवीभिरन्वितम् ॥
 चतुर्विंशतिपञ्चस्थं, जिनं मातृसमावृतम् ॥ २२ ॥

मायावेष्ट ब्रयाग्रंस्थं, कोङ्कारसहितं प्रभुम् ॥
 नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालैर्दशभिर्वृतम् ॥ २३ ॥
 चतुर्कोणेषु मन्त्राद्य, चतुर्वीजन्वितैर्जिनैः ॥
 चतुरष्ट दशद्वीति, द्विधाङ्कसंक्षकै युतम् ॥ २४ ॥
 दिशु क्षकारयुक्तेन, विदिश्वुलाङ्कितेन च ॥
 चतुरस्त्रेण वज्राङ्काक्षितितत्त्वे प्रतिष्ठितम् ॥ २५ ॥
 श्रीपार्वनाथमित्येवं, यः समाराधये जिनम् ॥
 तं सर्वपापनिर्मुक्तं, भजते श्रीः शुभप्रदा ॥ २६ ॥
 जिनेशः पूजितो भक्त्या, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा ॥
 धातस्त्वं यैः क्षणंवापि, सिद्धस्तेषां महोदयः ॥ २७ ॥
 श्रीपार्वयन्वराजान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् ॥
 शान्तिपुष्टिकरं नित्यं, शुद्रोपद्वनाशनम् ॥ २८ ॥
 ऋद्विसिद्धिमहावृद्धि, धृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ॥
 मृत्युञ्जयं शिवात्मानं, जपन्नान्नन्दितो जनः ॥ २९ ॥
 सर्वकल्याणपूर्णः स्या-, जरामृत्युविवर्जितः ॥
 अणिमादिमहासिद्धि, लक्षजापेन चाप्नुयात् ॥ ३० ॥
 प्राणायाममनोमन्त्र, योगादमृतमात्मनि ॥
 त्वमात्मानं शिवं ध्यात्वा, स्वामिन् सिद्ध्यन्ति जन्तवः ॥ ३१ ॥
 हर्षदः कामदध्येति, रिणुमः सर्वसौख्यदः ॥
 पातु वः परमानन्द, लक्षणः संस्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥
 तत्त्वरूपमिदं स्तोतं सर्वमङ्गलसिद्धिदम् ॥
 त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम् ॥ ३३ ॥

अथ ऋषिमण्डलस्तोत्रं



आद्यन्ताक्षरसंलक्ष, — मक्षरंवाप्ययतस्थितं ।
 आश्रिज्वालासमनाद, विन्दुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥
 आश्रिज्वालासमाकान्त, मनोमलविशोधकं ।

देवदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥
 अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ।
 सिद्धचक्रस्य सद्वीजं, सर्वतः प्रणिदध्यहे ॥ ३ ॥
 उँनमोऽहृदभ्य ईशोभ्यः, उँ सिद्धभ्यो नमोनमः
 उँनमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्यः उँनमः ॥ ४ ॥
 उँनमः सर्वसाधुभ्यः, उँ ज्ञानेभ्यो नमोनमः ।
 उँ नमस्तत्त्वदपि भ्य, श्वारित्रेभ्यस्तु उँनमः ॥ ५ ॥
 श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत,—दर्हदाद्यष्टकं शुभं ।
 स्थानेष्वष्टु विन्यस्तं, पृथग्वीजसमन्वितं ॥ ६ ॥
 आद्यं पदं शिखाप्रक्षेत, त्परंरक्षेत्तुमस्तकं ।
 तृतीयं रक्षेष्वेते द्वे, तुर्यं रक्षेष्वनासिकां ॥ ७ ॥
 पञ्चमं तु मुखंरक्षेत, पष्ठं रक्षेच्च घण्टिकां ।
 नाभ्यन्तसप्तमं रक्षेत, रक्षेत्पादान्तमष्टमं ॥ ८ ॥
 पूर्वप्रणवतः सान्त, सरेफोद्यविधंपञ्चपान् ।
 सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, ब्रितोविन्दुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥
 यूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचातोऽक्षानदर्शन ।
 श्वारित्रेभ्यो नमोमध्ये, न्हीं सान्त समलंकृतः ॥ १० ॥
 उँ न्हाँ न्हीं न्हुँ न्हूँ न्हे न्है न्हो न्हौ न्है ।
 असिआउसाज्ज्ञानदर्शनचारितेभ्योनमः ।
 जंबूबृक्षधरोद्धीपः, क्षारोदधिसमावृतः ।
 अहृदाद्यष्टकैरष्ट, काष्ठाधिष्ठैरलङ्कृतः ॥ ११ ॥
 तन्मध्यं संगतो भेरुः, कूटलसैरलङ्कृतः ।
 उच्चैरुचैस्तरस्तार, स्तारामण्डलमण्डितः ॥ १२ ॥
 तस्योपरिसकारान्त, बीजमध्यस्य सर्वगं ।
 नमामिविम्बमाहृत्यं, ललाटस्थं निरञ्जनं ॥ १३ ॥
 अक्षयं निर्मलंशान्तं, बहुलं जाग्यतोज्ज्वितं ।
 निरीहं निरहङ्कारं, सारंसारंतरं धनं ॥ १४ ॥
 अनुद्धरं शुभं स्फीतिं, सात्त्विकं राजसं भर्ते ।
 तामसं चिरं संमुद्दर्द, तैजसं इर्दर्दिसमं ॥ १५ ॥

साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं ।
 परापरं परातीतं, परम्पर परापरं ॥ १६ ॥
 एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं ।
 पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥
 सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भान्तिवर्जितं ।
 निरञ्जनं निराकारं, निलेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥
 ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरुं ।
 ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥
 अहंदाख्यस्तु वर्णान्तः, सरेषो विन्दुमणिडतः ।
 तुर्यस्वरसमायुक्तो, वहुधानादमालितः ॥ २० ॥
 आस्मिन् वीजे स्थिताः सर्वे, क्रषभाद्यजिनोत्तमाः ।
 वर्णान्निर्जन्निर्जन्निर्युक्ता, ध्यातव्या रत्नसंगताः ॥ २१ ॥
 नादश्वन्द्रसमाकारो, विन्दुर्नीलसमप्रभः ।
 कलारुणसमासान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥
 शिरः संकीर्ण ईकारो, विनीलोवर्णतः समृतः ।
 वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मण्डलंस्तुमः ॥ २३ ॥
 चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ, नादस्थितिसमाश्रितौ ।
 विन्दुमध्यगतौ नेमि, सुवृत्तौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥
 पद्मगमवासुपूजयौ, कलापद्मधिष्ठितौ ।
 शिर ईस्थितिसंलीनौ, पार्श्वमर्णीजिनोत्तमौ ॥ २५ ॥
 शोपा स्तीर्थकरा सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः ।
 मायावीजाक्षरं प्राप्ता, श्रतुर्विशातिरहतां ॥ २६ ॥
 गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः ।
 सर्वदा सर्वलोकेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥
 देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु राकिनी ॥ २८ ॥
 देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु राकिनी ॥ २९ ॥
 देवदेवस्य यश्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ।

तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु लाकिनी ॥ ३० ॥
 देवदेवस्य यश्चकं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु काकिनी ॥ ३१ ॥
 देवदेवस्य यश्चकं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥
 देवदेवस्य यश्चकं तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥
 देवदेवस्य यश्चकं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु याकिनी ॥ ३४ ॥
 देवदेवस्य यश्चकं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु पञ्चगा ॥ ३५ ॥
 देवदेवस्य यश्चकं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥ ३६ ॥
 देवदेवस्य यश्चकं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु राक्षसाः ॥ ३७ ॥
 देवदेवस्य यश्चकं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु वन्हयः ॥ ३८ ॥
 देवदेवस्य यश्चकं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु सिंहकाः ॥ ३९ ॥
 देवदेवस्य यश्चकं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु दुर्जनाः ॥ ४० ॥
 देवदेवस्य यश्चकं, तस्य चक्रस्य या विभा ।
 तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु भूमिपाः ॥ ४१ ॥
 श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लघ्ययः ।
 तामिरभ्युद्यतं ज्योति, रहं सर्वनिधीश्वराः ॥ ४२ ॥
 पातालवासिनो देवा, देवा भूपीडवासिनः ॥
 स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मासितः ॥ ४३ ॥
 येऽवधिलघ्ययो ये तु, परमावधि लघ्ययः ।
 ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षन्तु सर्वतः ॥ ४४ ॥

दुर्जना भूतवेतालाः, पिशाचा मुद्दलास्तथा ।
 ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेवप्रभावतः ॥ ४५ ॥
 ॐ नहीं श्रीश्चधृतिर्लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती ।
 जयाम्बा विजया नित्या, हिंन्नाऽजिता मदद्रवा ॥ ४६ ॥
 कामाङ्गा कामवाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी ।
 माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥
 एताः सर्वा भग्नादेव्यो, वर्तन्ते या जगत्त्रये ।
 महां सर्वाः प्रयच्छन्तु, कार्णित कीर्ति धृतिं मतिम् ॥ ४८ ॥
 दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः, श्रीक्रपिमण्डलस्तवः ॥
 भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतोऽनघः ॥ ४९ ॥
 रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ ।
 शमशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥ ५० ॥
 शाज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निज्यं पदम् ।
 लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुयन्ति न संशयः ॥ ५१ ॥
 भार्यार्थी लभते भार्या, पुत्रार्थी लभते सुतम् ।
 वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥
 श्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ।
 तस्यैवाप्तमहासिद्धिर्गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥
 भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके सूर्झि वा भुजे ।
 धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वभीतिविनाशकम् ॥ ५४ ॥
 भूतैः प्रतेर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैमुद्गलैर्मलैः ।
 धातपित्तकफोद्रैकैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥
 भूर्भुवःस्वखर्थीपीठवर्तिनः शाश्वता जिनाः ।
 तैः स्तुतैर्यदितैर्द्विष्ठ्यर्थतफलं तत्फलं स्मृतेः ॥ ५६ ॥
 एतद्वाप्यं भग्नास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित् ।
 मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥
 आचाम्लादितपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम् ।
 अप्साहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥
 शतमष्टोत्तरे प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने ।

तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥ ५९ ॥
 अष्टमासावधिं यावेत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ।
 स्तोत्रमेतन्महातेजो, जिनविश्वं स पश्यति ॥ ६० ॥
 हृषे सत्यार्हतो विम्बे, भवे सप्तमके भूवं ।
 पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनानिदितः ॥ ६१ ॥
 विश्ववन्द्यो भवेत् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्रुते ।
 गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्तते ॥ ६२ ॥
 इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुक्तमं परं ।
 पठनात्स्मरणाज्ञापालभ्यते पदमुक्तमं ॥ ६३ ॥

इति श्रीक्रष्णमंडलस्तोत्रं

अथ श्रीसिद्धैसेनदिवाकरकृतः शक्रस्तवः ।

—४५—

ॐ नमोऽर्हते परमात्मने परमज्योतिषे परमपरमेष्ठिने परम-
 वैधंसे परमयोगिने परमेश्वराय तमसः परस्तात् सदोदिता-
 दित्यवर्णाय समूलोन्मूलितानादिसकलक्षेशाय । ॐ नमो
 भूर्भुवः स्वखल्यीनाथ मौलिमन्दारमालार्चितक्रमाय सकल-
 पुरुषार्थयोनिनिःपद्यविद्या प्रवर्तनैकविराय नमः स्वस्ति
 सुधास्वाहा वषड्यर्थैकन्तशान्तमूर्तये भवद्विभूतभा-
 वावभासिने कालपाशनाशिने सत्वरजस्तमोगुणातीताय
 अनंतगुणाय वाङ्मनसामगोचरचरित्राय पवित्राय कारण-
 कारणाय तारणतारणाय सात्त्विकदेवताय तात्त्विकजीविता-
 य निर्गन्थब्रह्मदद्याय योगिन्द्रप्राणनाथाय त्रिसुवनभव्यकुल-
 नित्योत्सवाय विज्ञानानन्दपरब्रह्मैकात्म्यसमाधये हरिहरहिर-
 ण्यगर्भादिदेवतापरिकलितस्वरूपाय सम्यग्रध्येयाय सम्यग्-
 अद्वेयाय सम्यग्शरण्याय सुसमाहितसम्यग्सपृहणीयाय
 ॥ १ ॥ ॐ नमोर्हते भगवते आदिकराय तीर्थेकराय स्वयंसंज्ञ-
 द्याय पुरुषोत्तमाय पुरुषसिंहाय पुरुषवरपुण्डरीकाय पुरुषवर-

गन्धहस्तिने लोककौत्तमाय लोकमाथाय लोकहिताय लोकभ्र-
षोतकारिणे लोकप्रदीपाय अभयदाय दृष्टिदाय सुक्तिदाय
वोद्धिदाय धर्मदाय जीवदाय शरणदाय धर्मदेशकाय धर्म-
नायकाय धर्मसार्थये धर्मघरवउरंतचक्रघर्तिने द्यावृत्
छुद्गने अप्रतिहतसम्यग्निशानदर्शनसद्गने ॥ २ ॥ ॐ नमोऽहंते
जिनाय जीयकाय तीर्णाय तारकाय बुद्धाय घोधकाय मुक्ताय
मोचकाय श्रिकालविदे पारङ्गताय कर्माण्डकनिपूदनाय आदि-
स्वराय शम्भवे स्वयम्भुवे जगत्भवे जिनेश्वराय स्याद्वाद्वादिने
सर्वाय सर्वज्ञाय सर्वदर्शिने सर्वतीर्थांपनिपदे सर्वपाखण्ड-
मोचिने सर्वयज्ञकूलात्मने सर्वज्ञकलात्मने सर्वयोगरहस्याय
केवलिने देवाधिदेवाय वीतरागाय ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽहंते पर-
मात्मने परमकाशणिकाय सुगताय तथागताय महाहंसाय
हंसराजाय महासत्त्वाय महाशिवाय महावौद्धाय महामैत्राय
सुगताय सुनिश्चिताय विगतद्वन्द्वाय गुणाधये लोकनाथाय
जितमारबलाय ॥ ४ ॥ ॐ नमोऽहंते सनातनाय उत्तमश्लो-
काय मुकुन्दाय गोविन्दाय विष्णवे जिष्णवे अनन्ताय अच्युताय
श्रीपतये विश्वस्त्रपाय हृषीकेशाय जगन्नाथाय भुर्भूवःस्वःसमु-
क्ताराय मानस्त्रराय कालज्ञराय भूत्याय अजेयाय अजाय अच-
लाय अव्ययाय विभवे अचिन्त्याय असङ्गत्येयाय आदिसंख्याय
आदिकेशाय आदिशिवाय महावृष्णे परमशिवाय एकानै-
कान्तस्वरूपिणे भावाभावविवरजिताय आस्तिनास्तिद्यती-
ताय पुण्यपापविरहिताय सुखदुःखविविक्ताय व्यक्ताव्यक्त-
स्वरूपाय अनादिमध्यनिधनाय नमोऽस्तु मुक्तिस्वराय ॥ ५ ॥
ॐ नमोऽहंते निरातङ्गाय निःशङ्काय निर्भयाय निर्द्वन्द्वाय निस्त-
रङ्गाय निरुमये निरामयाय निःकलङ्गाय परमदेवताय सदा-
शिवाय महादेवाय शङ्कराय महेश्वराय महावतिने महायो-
गिने पञ्चमुखाय मृत्युंजयाय अष्टमूर्त्ये भूतनाथाय जगदान-
न्दाय जगदीमहाय जगदेवाधिदेवाय जगदीश्वराय जगदादि-
कन्दाय जगङ्गास्वते जगत्कर्मसाक्षिणे जगद्वध्यभुवे त्र्यीतनवे

अमृतकराय शीतकराय उयोतिश्चक्रिणे महाज्योतिर्महातमः पा-
 रेखुप्रतिष्ठिताय स्वयंकर्त्रे स्वयंहर्त्रे स्वयंपालकाय आत्मेश्वराय
 नमो विश्वात्मने ॥ ६ ॥ ॐ नमोऽहंते सर्वदेवमयाय सर्वध्यानमयाय
 सर्वज्ञानमयाय सर्वतेजोमयाय सर्वमन्त्रमयाय सर्वरहस्यमयाय
 सर्वभावाभावजीवाजीवेश्वराय अरहस्यरहस्याय अस्पृहस्पृह-
 णीयाय अचिन्त्यचिन्तनीयाय अकामकामधेनवे असङ्गलिपितक-
 ल्पद्वुमाय अचिन्त्यचिन्तामणये चतुर्दशरज्ज्यात्मकर्जीवलोक-
 चूडामणये चतुरशीर्तीजिवयोनिलक्षप्राणिनाथाय पुरुषार्थ-
 नाथाय परमार्थनाथाय अनाथनाथाय जीवनाथाय देवदानव-
 - सिद्धसेनाधिनाथाय ॥ ७ ॥ ॐ नमोऽहंते निरखनाय अनन्त-
 कल्याणनिकेतनकीर्तिताय सुगृहीतनामधेयाय धरिदात्त-
 धीरोद्धतधीरशान्तधीरललितपुरुषोत्तमपुण्यश्लोकशतसहस्र-
 - लक्षकोटिवन्दितपादार्पणिदाय सर्वगताय ॥ ८ ॥ ॐ नमोऽहं-
 ते सर्वसमर्थाय सर्वप्रदाय सर्वहिताय सर्वाधिनाथाय कस्मैच-
 न क्षेत्राय यात्राय तीर्थाय पावनाय पवित्राय अनुत्तराय उत्तराय
 योगाचार्याय सम्प्रक्षालनाय प्रवराय अग्राय वाचस्पतये माङ्ग-
 ल्याय सर्वात्मनाथाय सर्वार्थाय अमृताय सदोदिताय ब्रह्मचा-
 रिणे तायिने दक्षिणीयाय निर्विकाराय वज्रऋषभनाराच-
 मूर्तये तत्वदेवने पारदर्शिने निरुपमज्ञानवलवीर्यतेजः
 शक्तेश्वर्यमयाय आदिपुरमेष्टिने आदिमहेश्वाय
 महाज्योतिःसत्त्वाय महार्चिधनेश्वराय महामोहसंहारणे महा-
 सत्त्वाय महाज्ञानमहेन्द्राय महालयाय महाशान्ताय महायोगी-
 न्द्राय अयोगिने महामहीयसे महाहंसराजाय महासिद्धाय
 शिवमचलमखअमनन्तमक्षयमव्वावाधमपुनरावृत्ति महानन्द
 महोदयं सर्वदुःखक्षयं कैवल्यममृतं निर्वाणमक्षरं परब्रह्म नि-
 श्रेयसमपुनर्भवं सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तवते चरा-
 चरमते नमोऽस्तु श्रीमहावीराय त्रिजगत्स्वामिने श्रीवर्द्धमा-
 नाय विशालशासनाय निर्विकल्पाय सर्वलक्षितसम्पन्नाय कल्प-

नातीताय कलाकलापकलिपताय ॥५॥ झ० नमोऽर्हते केवलिन्ने
परमयोगिने विस्फुरुदुरुशुक्लध्यानाशिनिर्दग्धकर्मवीजाय प्राप्ता-
नन्तचतुष्टयाय सौम्याय शान्ताय मङ्गलवरदाय अष्टादशादो-
परहिताय संस्तुतविश्वसमीहिताय स्वाहा ॥ झ० वर्णीं श्रीं वर्षीं
नमः ॥ १० ॥ लोकोस्तमोनिःप्रतिमस्त्वमेव, त्वं शाश्वतं
मङ्गलमप्यधीश । ॥ त्वामेकमर्हन् शरणं प्रपद्ये, सिद्धर्थिसद्वर्म-
मयास्त्वमेव ॥ १ ॥ त्वंमेवमाता पिता नेता, देवो धर्मो गुरुः
परः ॥ प्राणाः स्वर्गोपवर्गश्च, सत्वं तत्वं गतिर्मतिः ॥ २ ॥
जिनो दाता जिनो भोक्ता, जिनः सर्वमिदं जगत् ॥ जिनो जगति
सर्वत्र, यो जिनः सोऽहमेव च ॥ ३ ॥ यत्किञ्चिन् कुर्महे देव ।
सदा सुकृतदुःकृतं ॥ तन्मे निजपदस्थस्य, दुःखंक्षपय त्वं
जिन ॥ ४ ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥
सिद्धिः श्रयति मां येन, त्वंप्रसादात्मये स्थितं ॥५॥ इति श्री
वर्धमानजिननामन्त्रंस्तोतं प्रतिष्ठायां शान्तिकविधौ पठितो
महासुखाय स्यात् ॥ इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरकृतशक्तिवः
संपूर्णः ॥

॥ श्री ॥

अथ अनुभूतसिद्धसारस्ततस्तवः ।



अर्हम्

कलमरालविहङ्गमवाहना, सितदुकूलविभूषणलेपना ।
प्रणतभूमिरुहासृतसारिणी, प्रवरदेहविभाभरधारिणी ॥१॥
असृतपूर्णकमण्डलुधारिणी, त्रिदशादानवमानवसेविता ।
भगवती परमेव सरस्वती, मम पुनातु सदा नयनाम्बुजम् ॥२॥
जिनपतिप्रथिताखिलवाङ्मयी, गणधराननमण्डपनर्त्तकी ।

शुरुमुखाम्बुजखेलनहांसिका, विजयते जगति श्रुतदेवता ॥३॥
 अमृतदीधितिविम्बसमानना, विजगतीजननिर्भितमाननाम् ।
 नवसरोमृतवीचिसरस्वतीं, प्रमुदितः प्रणमामि सरस्वतीम् ॥४॥
 विततकेतकपत्रविलोचने, विहितसंसृतिदुःकृतमोचने ।
 थवलपक्षाविहङ्गमलाज्जिछते, जयसरस्वतीं पूरितवाज्जिछते ॥५॥
 मवदनुश्रद्धलेशतरङ्गिता, स्तदुचितं प्रवदन्ति विपश्चितः ।
 नृपसभासुयतः कमलावला, कुचकलाललनानि वितन्धते ॥६॥
 गतधना आपि हि त्वदनुग्रहात्, कलितकोमलवाक्यसुधोर्मयः
 चकितवालकुरङ्गविलोचना, जनमनांसि हरन्तितर्ण नराः ॥७॥
 करसरोरुद्धरेलनचञ्चला, तव विभाति वरा जपमालिका ।
 श्रुतपयोनिधिमध्यविकस्वरो, उज्ज्वलतरङ्गकदाग्रहसाय्रहा ॥८॥
 द्विरदकेसरिमारभुजङ्गमा, सहनतस्करराजरुजाम्भयम् ।
 तव गुणावलिगानतरङ्गिणा, न भविनां भवति श्रुतदेवते ॥९॥

विधिविधान



ॐ ह्रीं क्लीं ब्लीं ततः श्रीं तदनुहसकलहिमाथो ऐं नमोऽकन्ते
 लक्षं साक्षाज्ञोपेयः करसमविधिना सत्तपा ब्रह्मचारी ॥
 निर्यान्ती चंद्रविम्बात् कलयति मनसा त्वां जगच्छन्दिकाभाम् ।
 सोऽत्यर्थं वहिकुण्डे विहितदृष्टहुतिः स्यादशांशेन विद्वान् १०
 रे रे लक्षणकाव्यनाटककथाचम्पूसमालोकने ।
 क्षायसं वितनोषि वालिश मुधा किं न प्रवक्त्राम्बुजः ॥
 भक्त्याऽराधय मन्त्रराजमहसा तेनानिशं भारतीं ।
 येन त्वं कवितावितानसविताद्वैतप्रबुद्धायसे ॥ ११ ॥
 चञ्चलन्द्रसुखी प्रसिद्धमहिमा स्वच्छन्दराज्यप्रदा-
 नायासेन सुरासुरेश्वरगणैरभ्यर्थिता भक्तिनः ॥
 देवी संस्तुतवैभवा मलयजालेपाङ्गरलद्युतिः ।

सा मां पातु सरस्वती भगवती तैलोक्यसञ्जीविनी ॥ १२ ॥
 संतवमेतदनेकगुणान्वितं, पठति यो भविकः प्रमनाः प्रगे ।
 स सहस्रां मधुरर्वचनामृतै, नृपगणानपि रक्षयति स्फुटम् ॥ १३ ॥

॥ इत्यनुभूतसिद्धसारस्वतस्तवः ॥
